3 राजधानी
प्रताड़ना से क्षुब्ध महिला ने खुद को लगाई आग

6 अभिमत
जापान की नई रक्षा रणनीति

11 विदेश
मुर्मू को फिजी का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार

12 स्पोर्ट्स
स्पिनरों पर हावी होना होगा भारत को

RNI NO.UPHIN/2010/36547
वर्ष 14 अंक 285
लखनऊ, बुधवार, 7 अगस्त, 2024
पृष्ठ 12 मूल्य ₹ 3
लखनऊ
नगर संस्करण

लखनऊ, नई दिल्ली और रायपुर से प्रकाशित

पायनियर

www.dailypioneer.com

दुनिया को हिंदुओं की ताकत दिखाने के लिए एकजुट रहना होगा

राष्ट्रीय-10

हिंसाग्रस्त पड़ोसी बांग्लादेश पर भारत की करीबी नजर

संसद में बोलते विदेश मंत्री एस. जयशंकर

बांग्लादेश की राजधानी ढाका में प्रधानमंत्री आवास के आसपास भारी संख्या में जुटे लोग।

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

बांग्लादेश के हालात बेहद खराब हैं। शेख हसीना प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा देकर वतन बदर हो चुकी हैं और अब भारत में शरणा ली हैं। पड़ोसी देश होने के नाते भारत की बांग्लादेश के हालात पर पैनी नजर है। वहां हुए राजनीतिक उठापटक के एक दिन बाद सरकार ने संसद को बताया कि वह पड़ोसी देश में अल्पसंख्यकों के संबंध में स्थिति पर नजर रख रही है और भारतीय उच्चायोग के माध्यम से वहां रहने वाले भारतीय समुदाय के साथ निकट और निरंतर संपर्क में है। सरकार ने सांसदों को हसीना बहुत कम समय के नोटिस पर फिलहाल भारत आने के अनुरोध के बारे में भी अवगत कराया। बांग्लादेश में उथल-पुथल के भारत पर संभावित प्रभाव को ध्यान में रखते हुए, विदेश मंत्री एस जयशंकर ने भी ताजा हालात सर्वदलीय बैठक की। उन्होंने वहां अशांति में विदेशी सरकार की भूमिका से भी इनकार नहीं किया। गृह मंत्री अमित शाह, विदेश मंत्री जयशंकर और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल ने बांग्लादेश में तेजी से बदल रही स्थिति की समीक्षा के लिए एक बैठक की। उन्होंने भारत-बांग्लादेश सीमा पर सुरक्षा बलों की तैयारियों का भी जायजा लिया। डोभाल ने सोमवार को हिंडन एयरबेस पर हसीना से मुलाकात की थी।

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने राज्यसभा में दिए गए अपने बयान में पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना के बहुत कम समय में भारत आने के अनुरोध के बारे में भी जानकारी दी। उन्होंने कहा कि भारत ने पड़ोसी देश में इस जटिल और अभी भी लगातार बदल रहे हालात को देखते हुए अपने सीमा सुरक्षा बलों को विशेष रूप से सतर्क रहने का निर्देश दिया है। जयशंकर ने कहा, अनुमान है कि वहां 19,000 भारतीय नागरिक हैं, जिनमें से लगभग 10,000 छात्र हैं। हालांकि, अधिकांश छात्र जुलाई में ही भारत लौट आए हैं। घटनाक्रम के बारे में विस्तार से बताते हुए उन्होंने कहा, 5 अगस्त को कर्फ्यू के बावजूद प्रदर्शनकारी ढाका में एकत्र हुए। मंत्री ने कहा कि उनकी समझ यह है कि सुरक्षा प्रतिष्ठान के नेताओं के साथ बैठक के बाद प्रधानमंत्री शेख हसीना ने स्पष्ट रूप से इस्तीफा देने का फैसला किया। बहुत कम समय में उन्होंने भारत आने के लिए मंजूरी मांगी। बांग्लादेश के अधिकारियों से उड़ान की मंजूरी के लिए एक अनुरोध भी मिला। वह कल शाम दिल्ली पहुंचीं। जयशंकर ने कहा, सेना प्रमुख जनरल वकार-उज-जमान ने 5 अगस्त को राष्ट्र को संबोधित किया। उन्होंने जिम्मेदारी संभालने और अंतरिम सरकार के गठन के बारे में बात की। वह अपने राजनयिक मिशनों के माध्यम से बांग्लादेश में भारतीय समुदाय के साथ लगातार संपर्क में हैं। भारत अल्पसंख्यकों की स्थिति के संबंध में स्थिति की निगरानी भी कर रहा है। (शेष पृष्ठ 9)

अभी लंदन नहीं जाएंगी शेख हसीना

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना के लंदन जाने की योजना कुछ अनिश्चितताओं के कारण अटक गई है और अगले कुछ दिनों तक उनके भारत से बाहर जाने की संभावना नहीं है। यह घटनाक्रम तब सामने आया जब ब्रिटेन सरकार ने संकेत दिया है कि उन्हें उनके देश में हिंसक प्रदर्शन के मद्देनजर किसी भी संभावित जांच के खिलाफ ब्रिटेन में कानूनी सुरक्षा नहीं मिल सकती है। ऐसे में हसीना की लंदन यात्रा की योजना कुछ अनिश्चितताओं (शेष पृष्ठ 9)

मोहम्मद यूनुस अंतरिम सरकार के प्रमुख नियुक्त

एजेंसी। ढाका

बांग्लादेश के राष्ट्रपति मोहम्मद शहाबुद्दीन ने नोबेल पुरस्कार विजेता मोहम्मद यूनुस को बांग्लादेश की अंतरिम सरकार का प्रमुख नियुक्त किया है। राष्ट्रपति के प्रेस सचिव ने मंगलवार रात को यह जानकारी दी। यह निर्णय राष्ट्रपति शहाबुद्दीन और भेदभाव विरोधी छात्र आंदोलन के समन्वयकों के बीच हुई बैठक में लिया गया। इस बैठक में तीनों सशस्त्र बलों के प्रमुख भी मौजूद थे। प्रेस सचिव ने कहा कि अंतरिम सरकार के अन्य सदस्यों के नाम विभिन्न राजनीतिक दलों के साथ विचार-विमर्श के बाद तय किए जाएंगे।

इससे पहले स्टूडेंट्स अगेंस्ट डिस्क्रिमिनेशन के नेताओं ने मंगलवार को कहा कि वे नोबेल पुरस्कार विजेता डॉ. मोहम्मद यूनुस को देश की अंतरिम सरकार का प्रमुख बनाना चाहते हैं। आंदोलन के प्रमुख समन्वयकों में से एक नाहिद इस्लाम ने मंगलवार सुबह सोशल मीडिया पर साझा किए गए एक वीडियो में कहा कि उन्होंने यूनुस (84) से पहले ही बात कर ली है और वह बांग्लादेश को बचाने की खातिर यह महत्वपूर्ण जिम्मेदारी संभालने के लिए तैयार हो गए हैं। नाहिद ने कहा, हमने निर्णय लिया है कि अंतरिम सरकार बनाई जाएगी, जिसमें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त नोबेल पुरस्कार विजेता डॉ. मोहम्मद यूनुस मुख्य सलाहकार होंगे। उनकी व्यापक स्वीकार्यता है। वीडियो में नाहिद के साथ दो अन्य समन्वयक भी नजर आ रहे हैं। नाहिद ने कहा कि अंतरिम सरकार के अन्य सदस्यों के नाम की घोषणा जल्द ही की जाएगी।यूनुस फिलहाल देश से बाहर हैं, लेकिन उन्होंने हसीना के अपदस्थ होने का स्वागत किया और इस घटनाक्रम को देश की दूसरी मुक्ति करार दिया। विभिन्न मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, बांग्लादेश में पिछले दो दिन में हुई हिंसा में कम से कम 119 लोग मारे गए हैं। यूनुस को ग्रामीण बैंक के माध्यम से गरीबी उन्मूलन अभियान चलाने के लिए 2006 में नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। उनके इस माध्यम को सभी महाद्वीपों में अपनाया गया।

भाजपा के वरिष्ठ नेता लाल कृष्ण आडवाणी अस्पताल में भर्ती

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व उप प्रधानमंत्री लाल कृष्ण आडवाणी को मंगलवार को दिल्ली के एक प्रमुख निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया। आडवाणी की हालत स्थिर है। अस्पताल के एक सूत्र बताया कि आडवाणी (96) को आज यहां अपोलो अस्पताल में भर्ती किया गया।जुलाई के पहले हफ्ते में भी, आडवाणी को इस अस्पताल में भर्ती किया गया था और दो दिन चिकित्सकीय देखरेख में रखने के बाद (अस्पताल से) छुट्टी दे दी गई थी। उन्हें न्यूरोलॉजी विभाग के सीनियर कंसल्टेंट डॉ. विनीत सूरी की देखरेख में रखा गया था। इससे पहले, आडवाणी को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में भर्ती किया गया था और वहां रातभर रखने के बाद अस्पताल से छुट्टी दे दी गई थी।

नीरज भाला फेंक के फाइनल में

भारत के नीरज चोपड़ा पेरिस ओलंपिक में पुरुष भाला फेंक प्रतियोगिता में भाग लेते हुए

भाषा। पेरिस

गत चैंपियन भारत के नीरज चोपड़ा ने मंगलवार को यहां ग्रुप बी क्वालीफिकेशन में अपने पहले ही प्रयास में 89.34 मीटर के थ्रो के साथ पेरिस ओलंपिक खेलों की पुरुष भाला फेंक स्पर्धा के फाइनल में जगह बनाई लेकिन किशोर जेना बाहर हो गए। ग्रुप बी क्वालीफिक्वेशन में सबसे पहले थ्रो करने उतरे नीरज ने 89.34 मीटर से सत्र का अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए आठ अगस्त को होने वाले फाइनल के लिए क्वालीफाई किया। नीरज ने तोक्यो ओलंपिक में भी अपने पहले ही प्रयास में फाइनल के लिए क्वालीफाई कर लिया था। नीरज ने ग्रुप ए और बी दोनों में शीर्ष पर रहते हुए फाइनल में प्रवेश किया और इस तरह एडक्टर की चोट से जुड़ी चिंताओं को भी पूरी तरह से खारिज कर दिया। यह नीरज के करियर का दूसरा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन भी है। इस गत ओलंपिक और विश्व चैंपियन ने 87.58 मीटर के प्रयास के साथ तोक्यो ओलंपिक का स्वर्ण पदक जीता था जबकि उनका निजी सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 89.94 मीटर है जो उन्होंने 2022 में स्टॉकहोम डाइमंड लीग में रजत पदक जीतने के दौरान किया था। यह राष्ट्रीय रिकॉर्ड भी है। ग्रुप बी से ग्रेनाडा के पूर्व विश्व चैंपियन एंडरसन पीटर्स (88.63 मीटर), राष्ट्रमंडल खेलों (शेष पृष्ठ 9)

ओलंपिक फाइनल में पहुंचने वाली पहली भारतीय महिला पहलवान बनी विनेश फोगाट

पेरिस (भाषा)। विनेश फोगाट ओलंपिक के फाइनल में पहुंचने वाली पहली भारतीय महिला पहलवान बन गई जिन्होंने क्यूबा की युसनेलिस गुजमैन लोपेज को 5 - 0 से हराकर पेरिस ओलंपिक में महिला कुश्ती स्पर्धा के 50 किलोवर्ग में स्वर्ण पदक जीतने की ओर कदम रख दिया। इससे पहले उन्होंने बड़ा उलटफेर करते हुए अब तक अपराजेय मौजूदा चैम्पियन युई सुसाकी को शिकस्त देने के बाद (शेष पृष्ठ 9)

अवैध प्रवासी मणिपुर की जनता के लिए बड़ा खतरा : मुख्यमंत्री

पायनियर समाचार सेवा। इंफाल

मणिपुर के मुख्यमंत्री एन. बीरेन सिंह ने मंगलवार को अवैध आव्रजन को राज्य के मूल निवासियों के लिए गंभीर खतरा बताते हुए जोर देकर कहा कि वर्ष 1961 के बाद राज्य में प्रवेश करने वाले लोगों को केंद्र सरकार की मदद से निर्वासित किया जाना चाहिए। विधानसभा में नागा पीपुल्स फ्रंट के विधायक लीशियो कीशिंग के प्रश्न के उत्तर में सिंह ने स्थिति को चिंताजनक बताया तथा अवैध आव्रजन से निपटने में एकजुटता की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा, यह एक चिंताजनक स्थिति है। अवैध आव्रजन के कारण जनसांख्यिकीय परिवर्तन हुए हैं, लेकिन कुछ वर्ग इस पर विश्वास नहीं करते। एकजुटता के बिना इस मुद्दे से निपटना संभव नहीं है। सिंह ने कहा कि राज्य की म्यांमार के साथ 398 किलोमीटर लंबी असुरक्षित अंतरराष्ट्रीय सीमा है, जिससे अवैध प्रवासियों का पता लगाना मुश्किल हो जाता है।

मुख्यमंत्री ने बताया कि अवैध प्रवासियों ने नए गांव बसाए हैं तथा म्यांमार स्थित पीपुल्स डिफेंस फोर्स (पीडीएफ) के साथ स्थानीय संघर्ष के कारण कुछ क्षेत्र पहुंच से बाहर हैं। उन्होंने कहा कि अवैध प्रवासियों को शरण देने वाले किसी भी व्यक्ति को नए आदेशों के तहत दंड का सामना करना पड़ेगा। सिंह ने इस बात पर जोर दिया कि वर्ष 1961 से पहले आए लोगों को स्वदेशी माना जाता है, लेकिन राज्य के भविष्य की रक्षा के लिए इसके बाद आए लोगों को निर्वासित किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा, जो लोग 1961 से पहले राज्य में आए वे स्थायी नागरिक हैं, लेकिन जो लोग बाद में आए उन्हें केंद्र सरकार की सहायता से निर्वासित किया जाना चाहिए। दूसरी ओर पश्चिम बंगाल के भाजपा नेता शुभेंदु अधिकारी ने मंगलवार को गृह मंत्री अमित शाह से मुलाकात कर बांग्लादेश में हिंदुओं और मंदिरों पर कथित हमलों का मुद्दा उठाया और कहा कि पड़ोसी देश की स्थिति सीएए की आवश्यकता के महत्व को उजागर करती है।

मथुरा विवाद में हिंदुओं ने सुप्रीम कोर्ट में दायर की कैविएट

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

मथुरा कृष्ण जन्मभूमि-ईदगाह विवाद मामले में इलाहाबाद हाईकोर्ट के फैसले के बाद हिंदू पक्ष ने सुप्रीम कोर्ट में कैविएट दायर किया है। हिंदू पक्ष के वकील विष्णु शंकर जैन ने कैविएट दायर करने के बाद कहा है कि अगर मुस्लिम पक्ष सुप्रीम कोर्ट में आ तो हिन्दू पक्ष को सुने बिना सुप्रीम कोर्ट एकतरफ़ा आदेश ना दें। बता दें कि श्री कृष्ण जन्मभूमि और शाही ईदगाह मस्जिद विवाद से जुड़ी सभी 18 याचिकाओं को इलाहाबाद हाईकोर्ट ने सुनवाई योग्य नही माना था। हिंदू पक्ष की ओर से दाखिल 18 याचिकाओं में मथुरा की शाही ईदगाह मस्जिद को श्री कृष्ण जन्म स्थान बताकर उसे हिंदुओ को सौपे जाने की मांग की गई है। विवादित परिसर में हिंदुओं को पूजा अर्चना की अनुमति दिए जाने की मांग की गई थी। विवादित परिसर का अयोध्या के राम मंदिर और वाराणसी के काशी विश्वनाथ मंदिर की तर्ज पर सर्वेक्षण कराये जाने की मांग की गई है। बता दें कि इस विवाद की शुरुआत हिंदू पक्ष की ओर से दायर मूल मुकदमे से हुई, जिसमें दावा किया गया कि मथुरा शाही ईदगाह मस्जिद कृष्ण जन्मभूमि पर बनाई गई थी। सभी 18 मुकदमों में एक ही प्रार्थना है जिसमें मथुरा में कटरा केशव देव मंदिर के साथ 13.37 एकड़ के परिसर से शाही ईदगाह मस्जिद को हटाने की मांग की गई। दावा किया गया कि इस दृष्टिकोण का समर्थन करने के लिए कई संकेत थे कि शाही-ईदगाह मस्जिद वास्तव में एक हिंदू मंदिर है। पिछले साल 14 दिसंबर को हाइकोर्ट ने हिंदू देवता भगवान श्री कृष्ण विराजमान और 7 अन्य हिंदू पक्षों की ओर से शाही ईदगाह मस्जिद के निरीक्षण के लिए कोर्ट कमिश्नर बाकी नियुक्ति के लिए दायर अर्जी को स्वीकार कर लिया था। बाद में सुप्रीम कोर्ट ने इस निर्देश पर रोक लगा दी थी। इस मामले की कार्यवाही 2023 में ट्रायल कोर्ट से हाई कोर्ट में ट्रांसफर कर दी गई। अदालत ने मुस्लिम पक्ष की इस दलील को खारिज कर दिया था कि कृष्ण जन्मभूमि मंदिर और उससे सटी मस्जिद के विवाद से संबंधित हिंदू पक्षकारों द्वारा दायर मुकदमे पूजा स्थल (विशेष प्रावधान) अधिनियम का उल्लंघन करते हैं, और इसलिए ए सुनवाई योग्य नहीं हैं।

आप सांसद संजय सिंह और सपा नेता अनूप संडा की डेढ़ माह कैद की सजा कायम

सुलतानपुर (भाषा)। सुलतानपुर की सांसद-विधायक अदालत ने जनसमस्या और बिजली संकट को लेकर सड़क जाम और धरना-प्रदर्शन करने के मामले में दोषी ठहराए जा चुके आम आदमी पार्टी (आप) के सांसद संजय सिंह और समाजवादी पार्टी (सपा) नेता अनूप संडा समेत छह दोषियों की अपील निरस्त करते हुए डेढ़ माह कैद की सजा को कायम रखा है। विशेष लोक अभियोजक वैभव पांडे ने बताया कि दोषियों की अपील पर सुनवाई करते हुए विशेष सत्र न्यायाधीश (सांसद-विधायक) एकता वर्मा ने मंगलवार को यह आदेश दिया। वैभव पांडे ने बताया कि 19 जून 2001 को बिजली बदहाली के विरोध में तत्कालीन लोकतांत्रिक समाजवादी पार्टी नेता (पूर्व विधायक) अनूप संडा के नेतृत्व में शहर की सब्जी मंडी के निकट ऊरगामी पुल के पास धरना प्रदर्शन दिया गया था जिसमें आम आदमी पार्टी के मौजूदा सांसद संजय सिंह, पूर्व सभासद कमल श्रीवास्तव, पूर्व सभासद विजय, अन्य संतोष, सुभाष चौधरी आदि शामिल हुए थे। पांडे ने बताया कि प्रदर्शनकारियों के विरुद्ध पुलिस ने प्राथमिकी दर्ज और विवेचना पूरी करने के बाद आरोपपत्र अदालत में दाखिल किया था।

ईडी ने उप्र पुलिस कांस्टेबल, पीएससी परीक्षा प्रश्नपत्र लीकमामले में आरोपियों की संपत्ति कुर्क की

भाषा। नई दिल्ली

उत्तर प्रदेश पुलिस कांस्टेबल भर्ती परीक्षा और राज्य लोक सेवा आयोग द्वारा 2023 में आयोजित एक परीक्षा का प्रश्नपत्र लीक करने के दो मुख्य आरोपियों की संपत्ति धन शोधन निवारण कानून के तहत कुर्क की गई है। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने मंगलवार को यह जानकारी दी। एजेंसी ने एक बयान में कहा कि कुर्क की गई संपत्तियों में भोपाल में 39.36 लाख रुपए मूल्य के एक मकान के बदले ली गई अग्रिम राशि, उत्तर प्रदेश के ग्रेटर नोएडा में 30 लाख रुपए मूल्य का एक आवासीय फ्लैट और दादरी में 10.5 लाख रुपए मूल्य का एक भूखंड, 7.06 लाख रुपए की बैंक जमा राशि और 15.34 लाख रुपए मूल्य की दो कारें शामिल हैं। ये संपत्तियां राजीव नयन मिश्रा तथा सुभाष प्रकाश की हैं। बयान में दावा किया गया कि मिश्रा और प्रकाश उत्तर प्रदेश पुलिस कांस्टेबल भर्ती परीक्षा-2023 और उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग के समीक्षा अधिकारी (आरओ) और सहायक समीक्षा अधिकारी (एआरओ) परीक्षा-2023 के प्रश्न पत्र लीक मामले में मुख्य आरोपी हैं। इसमें कहा गया है कि मिश्रा, प्रकाश और रवि अत्री ने अपने सहयोगियों की सहायता से इन परीक्षाओं के प्रश्नपत्र लीक किए।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मंगलवार को अयोध्या में रामलला के दर्शन किए

विस्तृत समाचार पृष्ठ 2

तैयार करें उच्च शिक्षा प्रोत्साहन नीतिः योगी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने राज्य के उच्च शिक्षा क्षेत्र में निजी निवेश को प्रोत्साहन देने के लिए नई नीति तैयार करने के निर्देश दिए हैं। मंगलवार को इस संबंध में हुई महत्वपूर्ण बैठक में मुख्यमंत्री ने कहा कि विगत 7 वर्षों में सतत प्रयासों से प्रदेश में एक मंडल-एक विश्वविद्यालय की परिकल्पना पूरी हो चुकी है। सभी 18 मंडलों में विश्वविद्यालयों की स्थापना हो चुकी है। कई मंडलों में निर्माण कार्य जारी है। मंडलों के बाद अब हमारा लक्ष्य एक जिला-एक विश्वविद्यालय का होना चाहिए। वर्तमान में 35 जनपदों में विश्वविद्यालय की उपलब्धता है, शेष असेवित जिलों में विश्वविद्यालयों के लिए निजी क्षेत्र बड़ा सहयोगी बन सकता है। उच्च शिक्षा में निजी क्षेत्र के वित्तपोषण को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। यह हमारे उद्देश्यों की पूर्ति में पूरक भूमिका निभा सकते हैं। प्रदेश में उच्च शिक्षा की बढ़ती मांग को देखते हुए, निजी निवेश उच्च शिक्षा तक पहुंच बढ़ाने के सरकारी प्रयासों में सहायक हो सकता है। इससे छात्रों के लिए उपलब्ध संस्थानों, पाठ्यक्रमों और सीटों की संख्या में वृद्धि होगी, साथ ही यह शिक्षा और अनुसंधान की गुणवत्ता को बढ़ाने के प्रयासों में भी सहायता मिलेगी। योगी ने कहा कि

● सीएम बोले, एक मंडल-एक विश्वविद्यालय की परिकल्पना साकार अब एक जिला-एक विवि का लक्ष्य

भारत के सबसे युवा राज्य के रूप में उत्तर प्रदेश उच्च शिक्षा में एक विशेष स्थान रखता है। उत्तर प्रदेश, जिसकी औसत आयु 21 वर्ष है, जो 2030 तक बढ़कर 26 वर्ष हो जाएगी और भारत की युवा आबादी में इसका योगदान 16.5 प्रतिशत होगा। वर्तमान में उत्तर प्रदेश की ग्रास एनरोलमेंट 25.6 प्रतिशत है, जिसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार 2035 तक 50 प्रतिशत तक बढ़ाना आवशयक है। निजी निवेश प्रोत्साहन नीति इस अंतर की पूरा सकती है। उच्च शिक्षा में निजी निवेश वर्तमान समय की अनिवार्य आवश्यकता है। अन्य राज्यों की सम्बंधित नीति का अध्ययन करें। स्टेकहोल्डर्स से संवाद करें और यथाशीघ्र उच्च शिक्षा प्रोत्साहन नीति तैयार कर प्रस्तुत करें। नई नीति में निवेशकों को स्टाम्प ड्यूटी में छूट, कैपिटल सब्सिडी आदि प्रोत्साहन को यथोचित स्थान दें।नई नीति में आकांक्षात्मक जनपदों में विश्वविद्यालयों की स्थापना पर अतिरिक्त प्रोत्साहन का प्रावधान होना चाहिए। इसे प्राथमिकता दें। इसी प्रकार, विश्व की टॉप रैंकिंग वाले विश्वविद्यालयों के कैम्पस के प्रस्ताव पर भी विशेष प्रोत्साहन प्रावधान रखें।

बिना विवाद पैतृक संपत्ति का हो सकेगा आसानी से बंटवारा

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मात्र 5,000 रुपये के स्टाम्प शुल्क के साथ अपनी अचल संपत्ति को रक्तसंबंधियों के नाम करने की बड़ी सहूलियत देने के बाद उत्तर प्रदेश में अब पारिवारिक विभाजन और व्यवस्थापन में भी बड़ी सुविधा मिलने जा रही है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने निर्देश दिए हैं कि एक परिवार के सदस्यों के बीच अचल संपत्ति के बंटवारे तथा जीवित व्यक्ति द्वारा अपनी संपत्ति को अपने परिवारी जनों के नाम किए जाने पर देय स्टाम्प शुल्क भी 5,000 रुपये तय किया जाए। मुख्यमंत्री ने कहा कि अधिक खर्च के कारण प्रायः परिवार में विभाजन की स्थिति में विवाद की स्थिति बनती है और कोर्ट केस भी होते हैं। न्यूनतम स्टाम्प शुल्क होने से परिवार के बीच सेटलमेंट आसानी से हो सकेगा। मंगलवार को एक महत्वपूर्ण बैठक में मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में राज्य सरकार द्वारा आम आदमी के ईज़ ऑफ़ लिविंग के लिए अनेक प्रयास किये गए हैं। संपत्ति विभाजन और व्यवस्थापना प्रक्रिया में सरलीकरण से लोगों को और सुविधा होगी।

यह होता है विभाजनः विभाजन विलेख में सभी पक्षकार विभाजित सम्पत्ति में संयुक्त हिस्सेदार होते हैं एवं विभाजन उनके मध्य होता है। विभाजन विलेख में प्रस्तावित छूट एक ही मृतक व्यक्ति के समस्त लीनियल डीसेंडेंट्स, जो सहस्वामी हों, को आच्छादित करेगी अर्थात यदि दादा की मूल सम्पत्ति में वर्तमान जीवित हिस्सेदार चाचा/ भतीजा/ भतीजी हैं, तो वह इसका उपयोग कर सकते हैं।

यह होता है व्यवस्थापनः व्यवस्थापन विलेख में व्यवस्थापन कर्ता पक्षकार (जीवित) अपनी व्यापक सम्पत्ति को कई पक्षकारों के मध्य निस्तारित करता है।

राष्ट्रपति को फिजी का सर्वोच्च सम्मान मिलना भारत के लिए गौरव का क्षणः मुख्यमंत्री

लखनऊ। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु को फिजी के सर्वोच्च सम्मान 'कंपेनियन ऑफ द ऑर्डर ऑफ फिजी' से सम्मानित किया गया है। उन्हें यह सम्मान फिजी के राष्ट्रपति ने प्रदान किया। इस उपलब्धि पर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु का अभिनंदन जताते हुए देशवासियों को बधाई दी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मंगलवार को अपने ऑफिशियल सोशल मीडिया अकाउंट 'एक्स' पर लिखा कि राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु को फिजी के सर्वोच्च सम्मान 'कंपेनियन ऑफ द ऑर्डर ऑफ फिजी' से विभूषित किया जाना भारत के लिए गौरव का क्षण है। सीएम योगी आदित्यनाथ ने लिखा कि यह सम्मान दोनों देशों के बीच अटूट ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है, जो विश्व में शांति, सहयोग व सद्भावना के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। राष्ट्रपति का हार्दिक अभिनंदन और देश वासियों को बधाई!

अयोध्या पहुंचे मुख्यमंत्री ने रामलला के चरणों में झुकाया शीश

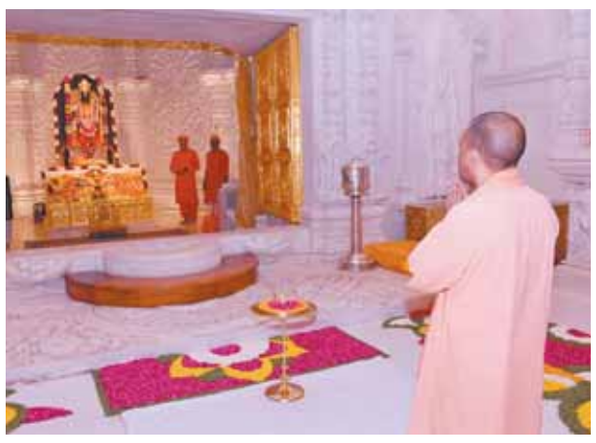

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

● हनुमानगढ़ी पहुंचकर संकट मोचन के दरबार में भी लगाई हाजिरी

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ मंगलवार को अयोध्या के दो दिवसीय दौरे पर पहुंचे। यहां महापौर, विधायक समेत जनप्रतिनिधियों व भाजपा नेताओं ने मुख्यमंत्री का स्वागत किया। मुख्यमंत्री मंगलवार शाम रामकथा पार्क पहुंचे। यहां से मुख्यमंत्री सीधे हनुमानगढ़ी पहुंचे, जहां संकटमोचन हनुमान के चरणों में हाजिरी लगाई। यहां मुख्यमंत्री को स्मृति चिह्न भी भेंट किया गया। सीएम ने यहां दर्शन-पूजन के उपरांत अयोध्यावासियों व श्रद्धालुओं का अभिवादन किया। इसके बाद मुख्यमंत्री श्रीराम जन्मभूमि पहुंचे और श्रीरामलला के चरणों में शीश झुकाया। मुख्यमंत्री ने यहां भी विधिवत दर्शन-पूजन किया। मुख्यमंत्री ने श्री राम जन्मभूमि में चल रहे निर्माण कार्यों की भी जानकारी ली। इसके पहले मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ लोकसभा चुनाव के दौरान अयोध्या पहुंचे थे। सीएम ने उस दौरान भी श्रीराम व संकटमोचन हनुमान के चरणों में हाजिरी लगाई थी। लोकसभा चुनाव के उपरांत मुख्यमंत्री मंगलवार को श्रीरामनगरी पहुंचे। दर्शन-पूजन के दौरान प्रभारी मंत्री सूर्य प्रताप शाही, महापौर गिरीश पति त्रिपाठी, विधायक वेदप्रकाश गुप्त, अमित सिंह चौहान, रामचंद्र यादव, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय आदि मौजूद रहे।

केजीएमयू में भर्ती महिला के परिजनों से मिला कांग्रेस व सपा का प्रतिनिधिमंडल

पीड़ित परिवार को मिले मुआवजा, दोषियों पर हो सख्त कार्रवाईः ममता चौधरी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उन्नाव की पीड़िता अंजली जाटव द्वारा समस्या का समाधान न होने की वजह से ज्वलनशील पदार्थ डाल कर आग लगा लेने की घटना संज्ञान में आते ही प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय ने पार्टी का एक प्रतिनिधिमंडल केजीएमयू भेजा।

लगभग 90 फीसदी झुलस चुकी इस महिला को इलाज हेतु लखनऊ मेडिकल कॉलेज के बर्न यूनिट में भर्ती कराया गया है। उत्तर प्रदेश महिला कांग्रेस मध्यजोन की अध्यक्ष ममता चौधरी के नेतृत्व में कांग्रेस का प्रतिनिधिमंडल पीड़िता का कुशलक्षेम जानने के लिए केजीएमयू गया। प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने पीड़िता के परिजनों से मिलकर घटना की वस्तुस्थित की जानकारी ली तथा परिजनों को हर संभव मदद का आश्वासन दिया साथ ही चिकित्सकों से मुलाकात कर समुचित इलाज का निवेदन किया।इस मौके पर उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी महिला कांग्रेस मध्यजोन की अध्यक्ष ममता चौधरी ने कहा कि प्रदेश में अराजकता का माहौल है। पीड़ित जनता की कहीं भी सुनवाई नहीं हो रही है। जनता दरबार में आई महिला द्वारा आत्मदाह करने का प्रयास उत्तर प्रदेश सरकार की कार्यशैली पर प्रश्नचिन्ह लगाता है। कांग्रेस पार्टी सरकार से पीड़ित परिवार को उचित मुआवजा दिलाने तथा दोषियों पर सख्त कार्यवाही की मांग करती है।

प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों में महिला कांग्रेस की उपाध्यक्ष सुशीला शर्मा, प्रज्ञा सिंह, सुमन प्रजापति, लता द्विवेदी, पूजा सिंह, माया सोलंकी आदि शामिल रहीं।

कैंट अग्निकांड के पीड़ितों से मिला सपा प्रतिनिधिमंडल

लखनऊ। समाजवादी पार्टी लखनऊ महानगर का एक प्रतिनिधिमण्डल मंगलवार को कैन्ट विधानसभा के अन्तर्गत सदर सब्जी मंड़ी बाजार पहुँचा। प्रतिनिधिमण्डल ने सदर सब्जीमण्डी में बीते 4 अगस्त को रात्रि में भीषण अग्निकाण्ड से पीड़ित दुकानदारों से मुलाकात की। अग्निकाण्ड में शाहनवाज हुसैन, अफजाल अंसारी, अब्दुल साहब, अशफाक अली, वहाब अली की दुकाने जल गई थी। अग्निकाण्ड में दुकानदारों को भारी क्षति हुई है। समाजवादी पार्टी प्रतिनिधिमण्डल ने एसएस बेकर्स के मालिक शाहनवाज हुसैन समेत अन्य पीड़ित दुकानदारों से बातचीत की और संकट की इस घड़ी में व्यापारी बन्धुओं के साथ खड़े होने का आश्वासन दिया।

प्रतिनिधि मण्डल में विधायक रविदास मेहरोत्रा, नगर अध्यक्ष फाख़िर सिद्दीकी, प्रदेश अध्यक्ष अल्पसंख्यक सभा श्री शकील अहमद खान, पूर्व नगर अध्यक्ष सुशील दीक्षित, व्यापारी नेता पवन मनोचा, महासचिव इरशाद अहमद गुड्डू, प्रदीप शर्मा, लता जायसवार, गौरव सिंह यादव, विधानसभा अध्यक्ष रितेश साहू, मोहम्मद अतीक मम्मू, शबनम खान, नौशाद अली, रजनीश यादव, मोहम्मद अम्मार, तौफीक, हिमांशु, शम्मी मजनू, शोयब अली, शाहिद अली सहित बड़ी संख्या में समाजवादी पार्टी के नेता शामिल थे।

यूपी को बीते जुलाई माह में हासिल हुआ कुल 17304.60 करोड़ का राजस्व

● वित्तीय वर्ष 2024-25 में माह जुलाई तक कर राजस्व के अन्तर्गत मिला 68477.31 करोड़ का राजस्वः सुरेश खन्ना

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उत्तर प्रदेश के वित्त मंत्री सुरेश कुमार खन्ना ने बताया कि प्रदेश के मुख्य कर-करेत्तर राजस्व वाले मदों में वित्तीय वर्ष 2024-25 के जुलाई माह में कुल 17304.60 करोड़ का राजस्व प्राप्त हुआ जबकि वित्तीय वर्ष 2023-24 के जुलाई माह में 15418.34 करोड़ का राजस्व प्राप्त हुआ था। इस प्रकार गत् वर्ष के माह जुलाई की तुलना में इस वर्ष के माह जुलाई में 1886.26 करोड़ राजस्व अधिक प्राप्त हुआ है। उन्होंने बताया कि माह जुलाई 2024 में जीएसटी एवं वैट के अन्तर्गत 9448.83 करोड़ की प्राप्ति हुई है, जो माह जुलाई में राजस्व प्राप्ति के लक्ष्य का 70.4 प्रतिशत है। जीएसटी एवं वैट के अन्तर्गत गत् वर्ष की तुलना में इस वर्ष माह जुलाई में 663.29 करोड़ की अधिक प्राप्ति हुई है। उन्होंने बताया कि जीएसटी के अन्तर्गत माह जुलाई, 2024 में कुल 6804.46 करोड़ की राजस्व प्राप्ति हुई जबकि गत् वर्ष जुलाई, 2023 के माह में प्राप्ति 6107.25 करोड़ रही थी। वैट के अन्तर्गत माह जुलाई, 2024 में 2644.37 करोड़ की राजस्व प्राप्ति हुई जबकि गत् वर्ष माह जुलाई, 2023 में प्राप्ति 2678.29 करोड़ रही थी।

वित्त मंत्री ने बताया कि आबकारी के अन्तर्गत माह जुलाई, 2024 में कुल 3952.53 करोड़ की राजस्व प्राप्ति हुई जो माह जुलाई 2024 में निर्धारित लक्ष्य का 84.1 प्रतिशत है। जबकि इस मद में गत् वर्ष माह जुलाई, 2023 में प्राप्ति रू0 3423.98 करोड़ रही थी। इसी प्रकार आबकारी मद में जुलाई माह में गत् वर्ष की तुलना में इस वर्ष रू0 528.55 करोड़ अधिक की प्राप्ति हुई है। स्टाम्प तथा निबन्धन के अन्तर्गत माह जुलाई, 2024 की राजस्व प्राप्ति 2762.50 करोड़ है जो माह जुलाई 2024 में निर्धारित लक्ष्य का 86.3 प्रतिशत है। जबकि गत् वर्ष माह जुलाई, 2023 में प्राप्ति 2225.00 करोड़ रही थी। इसी प्रकार स्टाम्प तथा निबन्धन मद में जुलाई माह में गत् वर्ष की तुलना में इस वर्ष 537.50 करोड़ अधिक की प्राप्ति हुई है। उन्होंने बताया कि परिवहन के अन्तर्गत माह जुलाई, 2024 की राजस्व प्राप्ति 902.55 करोड़ है, जो माह जुलाई 2024 में निर्धारित लक्ष्य का 92.2 प्रतिशत है। जबकि गत् वर्ष इस मद में माह जुलाई, 2023 में प्राप्ति 775.98 करोड़ रही थी। इस प्रकार परिवहन मद में जुलाई माह में गत् वर्ष की तुलना में इस वर्ष 126.57 करोड़ अधिक की प्राप्ति हुई है। उन्होंने बताया कि करेत्तर राजस्व प्राप्ति की प्रमुख मद भू-तत्व तथा खनिकर्म के अन्तर्गत माह जुलाई, 2024 में प्राप्ति 238.19 करोड़ है जो इस मद के अन्तर्गत राजस्व प्राप्ति की निर्धारित लक्ष्य का 78.7 प्रतिशत है। जबकि गत् वर्ष माह जुलाई, 2023 में इस मद के अन्तर्गत प्राप्ति 207.84 करोड़ रही थी।

सुरेश कुमार खन्ना ने बताया कि वित्तीय वर्ष 2024-25 में माह जुलाई तक कर राजस्व के अन्तर्गत 68477.31 करोड़ का राजस्व प्राप्त हुआ है,जो माह जुलाई तक राजस्व प्राप्ति के निर्धारित लक्ष्य का 76.4 प्रतिशत है। उन्होंने बताया कि वित्तीय वर्ष 2024-25 में जुलाई माह तक करेत्तर राजस्व प्राप्ति के अन्तर्गत 2977.26 करोड़ की प्राप्ति हुई जो इस अवधि तक राजस्व प्राप्ति के निर्धारित लक्ष्य का 40.3 प्रतिशत है। उन्होंने बताया कि वर्तमान वित्तीय वर्ष में माह जुलाई 2024 तक जीएसटी एवं वैट के अन्तर्गत 37780.04 करोड़ का राजस्व प्राप्त हुआ है, जो इस अवधि तक निर्धारित लक्ष्य 71.8 प्रतिशत है। जिसमें जीएसटी के अन्तर्गत प्राप्ति 28462.31 करोड़ एवं वैट के अन्तर्गत 9317.73 करोड़ है। इसी प्रकार वर्तमान वित्तीय वर्ष में माह जुलाई तक आबकारी मद में 15737.11 करोड़ की प्राप्ति हुई है, जो निर्धारित लक्ष्य का 83.7 प्रतिशत है। स्टाम्प तथा निबन्धन में रू0 10177.65 करोड़ है जो निर्धारित लक्ष्य का 84.4 प्रतिशत है।

उन्होंने बताया कि परिवहन मद में माह जुलाई तक 3870.76 करोड़ का राजस्व प्राप्त हुआ है, जो इस अवधि के निर्धारित लक्ष्य का 96.9 प्रतिशत है।

यूपी में लगातार बढ़ रहा है महिलाओं पर अत्याचारः राजेंद्र चौधरी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

सपा प्रवक्ता राजेन्द्र चौधरी ने कहा कि प्रदेश के मुख्यमंत्री के जनता दरबार में न्याय न मिलने के कारण अंजलि जाटव नाम की महिला ने आत्मदाह कर लिया, महिला का लगभग एक वर्ष का बच्चा है, उत्तर प्रदेश में महिलाओं पर अत्याचार निरंतर बढ़ रहे हैं। सरकार संवेदनहीन और अत्याचारी है। मंगलवार को सपा राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के निर्देश पर समाजवादी पार्टी के प्रतिनिधि मंडल ने सिविल हॉस्पिटल, केजीएमयू ट्राम सेंटर और बर्न यूनिट पहुँच कर महिला का हाल चाल लिया। डॉक्टरों ने महिला की हालत गंभीर बताई। प्रतिनिधिमंडल में समाजवादी महिला सभा की राष्ट्रीय अध्यक्ष जूही सिंह, रीबू श्रीवास्तव प्रदेश अध्यक्ष महिला सभा, नाहिद लारी खान प्रवक्ता, पूजा शुक्ला पूर्व प्रत्याशी लखनऊ उत्तर विधान सभा, शकील नदवी प्रदेश अध्यक्ष अल्पसंख्यक सभा, अनीता श्रीवास्तव, ममता शर्मा, लता जैसवार, सलमा, शबनम, शबीना खान, मुन्नी पाल, विजय लक्ष्मी, रीना कौर शामिल रही।

समितियों से भारतीय लोकतंत्र की नींव को मिलती है सुदृढ़ताः कुंवर मानवेंद्र सिंह

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

● सभापति ने विधान परिषद की पुर्नगठित समितियों की प्रथम बैठक को किया संबोधित

विधान परिषद के सभापति कुंवर मानवेन्द्र सिंह ने कहा है कि समितियों के माध्यम से भारतीय लोकतंत्र के नींव को सुदृढ़ता मिलती है। समितियों को मिनी हाउस (लघु सदन) भी कहा जाता है। जिससे इसका महत्व स्वयं ही बढ़ जाता है। सभापति मंगलवार का उत्तर प्रदेश विधान परिषद की पुर्नगठित समितियों की प्रथम बैठक को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान वित्तीय एवं प्रशासकीय विलम्ब समिति पवन कुमार सिंह (कार्यकारी सभापति), खाद्य पदार्थो में मिलावट और नकली दवाओं के प्रचलन से जन जीवन की स्वास्थ्य समस्याओं पर रोकथाम हेतु समिति, राम गोपाल उर्फ गोपाल 'अंजान' (कार्यकारी सभापति), आश्वासन समिति, बलराम यादव (कार्यकारी सभापति), प्रदेशीय विधुत व्यवस्था सम्बंधी जांच समिति दिनेश कुमार गोयल (कार्यकारी सभापति) और विनियमन समीक्षा समिति।

डा. प्रज्ञा त्रिपाठी (कार्यकारी सभापति) मौजूद थीं। सभापति ने कहा कि सदन में लोक महत्व के विषय के लिए अगर समय कम मिलता है तो समितियां उसकी प्रतिपूरक होती है। जिसमें लोक महत्व के विषय को पर्याप्त समय लेकर उसका निस्तारण किया जाता है।

पायनियर वर्गीकृत

सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मैं पुत्री निशा के द्वारा प्रताड़ित किये जाने व गलत चाल चलन व गलत आचरण से परेशान होकर उसे अपनी समस्त चल व अचल सम्पत्ति से बेदखल कर दिया है। पुत्री निशा के किसी भी कृत्य के लिए मैं व मेरे परिवार का कोई वास्ता व सरोकार नहीं है। **मोहम्मद इरफान, निवासी मकान नम्बर 430/88, वेदनटोला, थाना सआदतगंज, लखनऊ।**

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि पासपोर्ट में मेरा नाम गलती से सैय्यद सनोबर फातिमा दर्ज हो गया है जबकि अन्य दस्तावेजों में मेरा नाम सनोबर फातिमा सैय्यद है जो की सही है सनोबर फातिमा सैय्यद पुत्री मोहम्मद नूरानी सैय्यद निवासी 544/111 और ख्वाजा कॉलोनी एकता नगर कैंपेल रोड बालागंज लखनऊ

सूचना

सूच्य हो कि मैंने अपने पुत्र समीर वर्मा को उसका चाल-चलन ठीक न होने के कारण अपनी समस्त चल-अचल सम्पत्ति से बेदखल कर दिया है। अब से उसके किसी भी कृत्य व लेन-देन से मेरा व मेरे परिवार का कोई वास्ता व सरोकार नहीं रहेगा। जितेन्द्र कुमार पुत्र श्री तोताराम निवासी-ग्राम जमहौरा सिकंदराबाद खीरी, जनपद-लखीमपुर खीरी

आवश्यकता है

एच.एम.एच.पी.जी. कॉलेज
लहरपुर - सीतापुर

आवश्यकता है
प्राचार्य - एक पद
सहायक आचार्य (बी.ए.) - हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू, राजनीति विज्ञान, समाज शास्त्र, शिक्षा शास्त्र, अर्थशास्त्र, गृह विज्ञान, चित्रकला विषयों हेतु।
योग्यता - यू.जी.सी./राज्य सरकार/ लखनऊ विश्वविद्यालय के मानकानुसार इच्छुक अभ्यर्थी समस्त प्रमाण पत्रों सहित आवेदन 15 दिनो में पंजीकृत डाक से भेजें।
प्रबंधक
एच.एम.एच.पी.जी. कॉलेज
लहरपुर-सीतापुर (पिन- 261135)
मो.6307273381

IMRT Law College, Lucknow
Affiliated to University of Lucknow
Applications are invited for the post of
Principal
Eligibility Criteria: Ph.D. degree with Bachelors & Masters level in the relevant branch.
Lecturer
Eligibility Criteria: Ph.D. or NET with LLB & LLM with 55% marks level in the relevant branch.
Non Teaching
Librarian, Office Assistant, Computer Operator.
Apply with testimonials and two photographs within 7 days.
Address :
Management Park, Vipul Khand-6 Gomti Nagar, Lucknow - 226010
Contact No. 9889191505, 8417000701, 0522-3500547
sanjeev1957@gmail.com

बजाज आलियान्ज़ लाइफ़ इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड
पंजीकृत कार्यालय: बजाज आलियांज हाउस, एयरपोर्ट रोड, येरवडा, पुणे - 411006. फोन: 020 66026777,
सार्वजनिक सूचना
इसके द्वारा सूचना दी जाती है कि, बजाज आलियान्ज़ लाइफ़ इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड का मकान नंबर २१८/१९८, वार्ड नंबर-१२, पहली मंजिल, जगदीशगंज, बस स्टॉप के पास कर्वी-चित्रकूट -२१०२०५ उत्तर प्रदेश पर स्थित कार्यालय १५-अक्तूबर-२०२४ से उसके नए पते बजाज आलियान्ज़ लाइफ़ इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, वार्ड नंबर-२१, मो. शास्त्री नगर, प्रथम तल केसरी कॉम्प्लेक्स प्रयागराज रोड कर्वी - चित्रकूट, उत्तर प्रदेश - २१०२०५ पर स्थानातरित होगा।

महाकुंभ में महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य की भी होगी देखभाल

● 407 डॉक्टर्स की टीम और 746 पैरामेडिकल स्टाफ को किया जाएगा तैनात

मेला क्षेत्र में गाइनेकोलॉजिस्ट और पीडियाट्रिक शिफ्टवार 24 घंटे देंगे अपनी सेवाएं

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

प्रयागराज में होने जा रहे महाकुंभ-2025 के महाआयोजन को लेकर योगी सरकार बड़े पैमाने पर तैयारियों में जुटी है। करीब दो माह तक चलने वाले इस आयोजन में रिकार्ड संख्या में श्रद्धालुओं के आने को लेकर महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं के निदान पर भी विशेष फोकस किया जा रहा है। इसके लिए कुंभ मेला क्षेत्र में चार सौ से ज्यादा डॉक्टर्स के साथ ही 700 से अधिक पैरामेडिकल स्टॉफ नियुक्त किये जाने की योजना है। यह मेडिकल टीम 24 घंटे अपनी सेवाएं देगी। कुंभ मेला क्षेत्र में महिलाओं और बच्चों के लिए बड़ी संख्या में बेड भी रिजर्व किये जाएंगे। साथ ही इनके इलाज के लिए शिफ्ट वाइज गाइनेकोलॉजिस्ट और पीडियाट्रिक तैनात होंगे। कुंभ मेला अधिकारी विजय किरण आनंद ने बताया कि मेला क्षेत्र में श्रद्धालुओं को 24 घंटे स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए 407 डॉक्टर्स की तैनाती की जाएगी। इसके साथ ही 182 नर्सिंग स्टाफ, 150 वार्ड ब्वॉयज, 354 फार्मासिस्ट और 60 लैब टेक्नीशियन की भी तैनाती होगी। उन्होंने बताया कि महाकुंभ में बड़ी संख्या में महिला श्रद्धालुओं के आने की संभावना है। ऐसे में उन्हे बेहतर स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध कराने के लिए विशेष इंतजाम किये जा रहे हैं। मेला क्षेत्र में स्थित अस्पतालों में तीन शिफ्ट में 48 महिला चिकित्सक अपनी सेवाएं देंगी। इसके अलावा मेला क्षेत्र में 24 घंटे गाइनेकोलॉजिस्ट भी तैनात रहेंगी। वहीं सेंट्रल अस्पताल में लेबर रूम की स्थापना की जा रही है। साथ ही 40 स्पेशलिस्ट डॉक्टर्स की टीम पर रहेगी। इसके अलावा सीएचसी और पीएचसी में भी 24 घंटे आकस्मिक सेवाएं उपलब्ध रहेंगी। यहां पर अतिरिक्त दवाइयां, मरहम-पट्टी समेत अन्य चीजों के पर्याप्त इंतजाम करने के निर्देश दिये गये हैं।

48 बेड महिलाओं और 15 बच्चों के लिए रहेंगे रिजर्व

एडिशनल डायरेक्टर स्वास्थ्य प्रयागराज डॉ. राकेश शर्मा ने बताया कि सीएम योगी की मंशा के अनुरुप महाकुंभ मेला क्षेत्र के अस्पतालों में महिलाओं और बच्चों के अलग-अलग वार्ड बनाए जाएंगे। इसके लिए 6 गाइनेकोलॉजिस्ट और 6 पीडियाट्रिक को शिफ्टवार तैनात किया जाएगा। यह सभी 24 घंटे अपनी सेवाएं देंगे।

कार्यालय ग्राम पंचायत रहीमाबाद, विकास खण्ड सफीपुर, उन्नाव
पत्रांक : /आंकिक/मनरेगा 2024-25 दिनांक : 05.08.2024
अति अल्पकालीन निविदा सूचना
विकास खण्ड सफीपुर जनपद उन्नाव में समस्त पंजीकृत आपूर्तिकर्ताओं को सूचित किया जाता है कि विकास खण्ड सफीपुर की ग्राम पंचायत रहीमाबाद में राज्य वित्त/चौदहवां वित्त/मनरेगा योजना के अन्तर्गत वित्तीय वर्ष 2024-25 में उपलब्ध धनराशि से ग्राम पंचायत द्वारा स्वीकृत निम्नलिखित निर्माण कार्य सम्पादित कराये जाने हेतु सामग्री आपूर्ति के लिये मोहर बन्द निविदायें दिनांक 08.08.2024 को अपरान्ह 03.00 बजे तक आमंत्रित की जाती है। ग्राम पंचायत के पंचायत भवन/ ग्रामीण सचिवालय भवन में निविदा पेटी में डाली जायेगी तथा उसी दिन सायंकाल 4.00 बजे समिति के समक्ष खोली जायेगी।

क्र0 सं0	कार्य का नाम	सभी का प्रकार	प्राक्कन की लागत (लाख रु0 में)	निविदा मूल्य/ टीटी	सामग्री आपूर्ति की अवधि
1.	कम्पोजिट विद्यालय रहीमाबाद में बाउण्ड्री वाल निर्माण कार्य।	ईंट प्रथम श्रेणी, सीमेण्ट, मौरंग, बालू, सरिया, पत्थर गिट्टी प्रथम श्रेणी, 20 एम.एम.ईटा गिट्टी आदि।	6,94,300/-	200/-	1 माह
2.	हबीबनगर गाटा संख्या 446 में खेल मैदान निर्माण कार्य।		10,81,600/-	200/-	1 माह

नियम व शर्तें : 1. सशर्त निविदा स्वीकार नहीं की जायेगी एवं प्रतिशत में अंकित दरें मान्य न होंगी। 2.सामग्री की मात्रा आवश्यकतानुसार घट-बढ़ सकती है। आपूर्तिकर्ता निविदा डालने के पूर्व कार्यस्थल का निरीक्षण कर लें, एक टेण्डर फार्म केवल एक कार्य के लिए मान्य होगा। 3. सामग्री की आपूर्ति निर्धारित अवधि में पूर्ण न करने पर अनुबन्ध समाप्त कर दिया जायेगा। 4. नियमानुसार स्टॉम्प ड्यूटी एवं अन्य देय कर पर अनुबन्ध समाप्त कर दिया जायेगा। 5. सबसे कम दरों वाली फर्म का टेण्डर स्वीकार होगा। 6. आपूर्ति आदेश प्राप्त होने के पश्चात 3 दिनों के अन्दर सामग्री की आपूर्ति कार्यस्थल पर करनी होगी।
सन्तोष कुमार (ग्राम प्रधान) ग्रा0पं0 रहीमाबाद, वि0ख0सफीपुर, उन्नाव
ग्राम विकास अधिकारी ग्रा0पं0 रहीमाबाद, वि0ख0सफीपुर, उन्नाव

पारदर्शी व नकलविहीन कराई जाए आरक्षी नागरिक पुलिस की भर्ती परीक्षा: मुख्य सचिव

- कहा, 13 से 15 अगस्त तक 'हर घर तिरंगा अभियान' होगा आयोजित
- आमजनमानस को अपने-अपने घरों, कार्यालयों, प्रतिष्ठानों आदि में झण्डा फहराने के लिए किया जाए प्रेरित

सीएस मनोज कुमार सिंह ने सभी मंडलायुक्तों व जिलाधिकारियों के साथ की वीडियो कांफ्रेंसिंग

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह ने काकोरी ट्रेन एक्शन की 100वीं वर्षगांठ के अवसर पर शताब्दी महोत्सव के आयोजन, हर घर तिरंगा अभियान व आरक्षी नागरिक पुलिस के पदों पर सीधी भर्ती-2023 की लिखित परीक्षा के सम्बन्ध में सभी मण्डलायुक्तों एवं जिलाधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

मुख्य सचिव ने कहा कि आरक्षी नागरिक पुलिस के पदों पर सीधी भर्ती-2023 की लिखित परीक्षा दिनांक 23, 24, 25 अगस्त तथा 30, 31 अगस्त, 2024 को दो पालियों में प्रस्तावित है। परीक्षा को पारदर्शी, त्रुटिरहित, नकलविहीन संपन्न कराया जाये। परीक्षा में किसी भी प्रकार की अव्यवस्थता नहीं होनी चाहिए। अभ्यर्थियों को आवागमन में किसी भी प्रकार की असुविधा न हो। सभी परीक्षार्थियों के मोबाइल फोन परीक्षा केन्द्र के बाहर होने चाहिए।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में काकोरी ट्रेन एक्शन एक महत्वपूर्ण घटना है। 9 अगस्त, 2024 से काकोरी ट्रेन एक्शन की 100वीं वर्षगांठ का शुभारम्भ हो रहा है। इसे 9 अगस्त, 2024 से 9 अगस्त, 2025 तक शताब्दी समारोह के रूप में आयोजित किया जाएगा। काकोरी ट्रेन एक्शन दिवस की पूर्व संध्या पर 8 अगस्त, 2024 तथा 09 अगस्त, 2024 को सभी जनपदों में भव्य कार्यक्रम आयोजित किये जायें, इसके लिये सभी तैयारियां समय से पूरी कर ली जायें। उन्होंने कहा कि कार्यक्रम का शुभारम्भ जनभागीदारी एवं उत्साह के साथ होना चाहिये। नगरीय व ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष रूप से शहीद स्मारकों, शहीद स्थलों के आसपास विशेष स्वच्छता अभियान चलाया जाये और सभी कार्यक्रम व्यवस्थित तरीके से कराये जायें। लखनऊ एवं शाहजहांपुर में आयोजित हो रहे शहीद मेले में उत्तर प्रदेश में निर्मित उत्पादों की ही बिक्री की जाये।

उन्होंने कहा कि कार्यक्रम में जनप्रतिनिधियों को अवश्य आमंत्रित किया जाये और स्थानीय कलाकारों को प्रोत्साहित किया जाये। कार्यक्रम में लोगों के बैठने की समुचित व्यवस्था होनी चाहिये। रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाये। कार्यक्रम के पहले मिलेट्री, पैरा मिलेट्री, एनसीसी, पुलिस, पीएसी, स्कूल, कॉलेज के बैण्ड वादन की व्यवस्था की जाये।

उन्होंने कहा कि 9 अगस्त, 2024 को प्रत्येक जनपद में काकोरी ट्रेन एक्शन शताब्दी समारोह का शुभारंभ कार्यक्रम आयोजित किया जाये, जिसमें काकोरी शहीद स्मारक, लखनऊ में आयोजित हो रहे मुख्य राज्य स्तरीय कार्यक्रम के सजीव प्रसारण की व्यवस्था की जाये। कार्यक्रम में भूतपूर्व सैनिकों व शहीद के परिवारीजनों को स्मृति चिन्ह व अंग वस्त्र से सम्मानित किया जाये। इसके अलावा प्रदेश के समस्त शहीद स्मारकों, शहीद स्थलों, अमृत सरोवरों पर वृहद रूप से कार्यक्रमों का आयोजन किया जाये।

उन्होंने यह भी कहा कि प्रात: बेसिक एवं माध्यमिक शिक्षा के सभी बोर्डों के विद्यार्थियों की प्रभात फेरी निकाली जाये, जिसमें बच्चे राष्ट्रभक्ति से सम्बन्धित नारे लिखी तख्तियां लिये हों और राष्ट्रभक्ति के गीतों को गाया अथवा बजाया जाये। प्रभात फेरी के समापन पर शिक्षकों द्वारा काकोरी ट्रेन एक्शन का वृतांत बच्चों को सुनाया जाये और मिष्ठान वितरित किया जाये। इसके अतिरिक्त विद्यालयों में वाद विवाद, चित्रकला, निबंध आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाये, जिनके विजेताओं को पुरस्कृत भी किया जाये। उन्होंने कहा कि प्रत्येक नागरिक के मन में राष्ट्रप्रेम की भावना को जागृत करने के उद्देश्य से गत वर्ष की भांति दिनांक 13 से 15 अगस्त, 2024 'हर घर तिरंगा अभियान' का आयोजन किया जायेगा। आमजनमानस को अपने-अपने घरों, कार्यालयों, वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों, औद्योगिक प्रतिष्ठानों आंगनबाड़ी केन्द्रों, अस्पतालों एवं अन्य सार्वजनिक स्थानों झण्डा फहराने के लिये विभिन्न प्रचार माध्यमों से प्रेरित किया जाये। 13 से 15 अगस्त, 2024 के उपरांत निजी आवासों एवं प्रतिष्ठानों पर लगाये जाने वाले झण्डों को आदर भाव के साथ उतार कर सुरक्षित रखा जाये। बैठक में बताया गया कि वर्ष 2022 एवं 2023 में हर घर तिरंगा अभियान के अंतर्गत संपूर्ण देश में उत्तर प्रदेश ने सर्वाधिक झण्डे फहराये। विगत दोनों वर्षों के अभियानों में प्रत्येक वर्ष 4.5 करोड़ से अधिक झण्डे फहराये गये। प्रदेश के नागरिकों द्वारा सेल्फी अपलोड अभियान में उत्साह पूर्वक भाग लेते हुये सर्वाधिक सेल्फी अपलोड की गई। बैठक में पुलिस महानिदेशक प्रशांत कुमार, अपर मुख्य सचिव गृह दीपक कुमार, कृषि उत्पादन आयुक्त देवेश चतुर्वेदी, अपर मुख्य सचिव ग्राम्य विकास हिमांशु कुमार, प्रमुख सचिव राजस्व पी. गुरु प्रसाद, प्रमुख सचिव तकनीकी शिक्षा एम. देवराज, प्रमुख सचिव उच्च शिक्षा एमपी अग्रवाल, अपर पुलिस महानिदेशक कानून एवं व्यवस्था अमिताभ यश, आयुक्त एवं सचिव राजस्व परिषद मनीषा त्रिघाटिया सहित अन्य विभागों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

जानलेवा हमले के आरोपियों को चार वर्ष की कैद

विधि संवाददाता। लखनऊ

जानलेवा हमले के मामले में दोषी करार दिए गए आरोपी विशुन, जसवंत व संजय को सत्र अदालत ने चार वर्ष के सश्रम कारावास की सजा सुनाई है। विशेष जज रोहित सिंह ने इन पर 15-15 हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया है। सात मार्च 2004 को इस मामले की रिपोर्ट राम किशोर ने थाना माल में दर्ज कराई थी। सरकारी वकील कमलेश कुमार सिंह के मुताबिक राम किशोर के घर के सामने गांव का राम दयाल अक्सर गलत इरादे से आकर बैठता था। राम किशोर ने कई बार राम दयाल को मना किया तो वह उससे रंजिश रखने लगा। घटना वाले दिन राम किशोर प्रधान के घर से अपने घर आ रहा था। जैसे ही वह राम दयाल के दरवाजे पर पहुंचा तो आरोपी विशुन, जसवंत, संजय व गजराज ने उसे देखते ही गाली देना शुरू कर दिया। जब उसने मना किया तो चारों लोगों ने उसे दौड़ा लिया। जिस पर वह अपने घर की ओर भागा। जैसे ही अपने घर के दरवाजे पर पहुंचा, तब सभी ने उसे लात घूंसों से मारना शुरू कर दिया। वह बचने के लिए घर के अंदर घुस गया। कुंडी से दरवाजे को बंद कर लिया तो आरोपी दरवाजा तोड़ते हुए घर के अंदर आ गए। संजय के ललकारने पर विशुन ने कट्टा निकालकर फायर कर दिया लेकिन वह मिस हो गया। शोर मचाने पर गांव के लोग आ गए। तब आरोपी जानमाल की धमकी देते हुए भाग गए। विचारण के पश्चात अदालत ने गजराज को साक्ष्य के अभाव में बरी कर दिया है।

ससुराल वालों की प्रताड़ना से क्षुब्ध महिला ने खुद को लगाई आग

- गंभीर हालत में केजीएमयू की बर्न यूनिट में चल रहा इलाज

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उन्नाव के पुरवा थानाक्षेत्र के छत्ता खेड़ा गांव में रहने वाली एक महिला ने ससुरालियों से प्रताड़ित होकर उनके खिलाफ थाने में मुकदमा दर्ज कराया था। जिस पर पुलिस ने सोमवार को पति और देवर पर कार्रवाई कर जेल भेज दिया था। इधर, मंगलवार को महिला ने लखनऊ में सीएम आवास के बाहर आत्मदाह की कोशिश की। महिला को गंभीर हालत में केजीएमयू की बर्न यूनिट में भर्ती कराया गया है। जानकारी के अनुसार महिला गोद में बच्चा लेकर मंगलवार को सीएम आवास जनता दरबार में आई थी। बाहर आकर उसने अपन बच्चे को सड़क किनारे रख दिया। फिर बैग से पेट्रोल की बोतल निकाली। खुद पर पेट्रोल डालकर आग लगा ली। उन्नाव के पुरवा थाना के गांव छत्ताखेड़ा की रहने वाले अंजली जाटव पत्नी देशराज को उसके ससुरालीजन मारने पीटने के साथ ही प्रताड़ित करते थे, जिसकी शिकायत अंजलि ने पुरवा पुलिस से की। इधर अंजलि की तहरीर पर पुलिस ने ससुरालियों के खिलाफ मारपीट और प्रताड़ित करने की धाराओं में रिपोर्ट दर्ज की। जिसके बाद सोमवार को महिला के पति और देवर को पुलिस ने गिरफ्तार करने के बाद कार्रवाई कर दी। इसके बावजूद ससुरालीजन उसे प्रताड़ित कर रहे थे। जिससे परेशान होकर मंगलवार को वह लखनऊ सीएम आवास के बाहर अपने मासूम बच्चे को गोद में लेकर पहुंची। जहां उसने बैग में रखी पेट्रोल की बोतल निकाली और खुद पर छिड़कने के बाद आग लगा ली। यह देख वहां मौजूद पुलिस कर्मियों में हड़कंप मच गया। आसपास के पुलिसकर्मी जब तक कुछ समझ पाते तब तक महिला बुरी तरह से आग की चपेट में आ गई। पुलिसकर्मी महिला को बचाने के लिए दौड़े, लेकिन आग इतनी तेज थी कि हिम्मत नहीं कर पाए। बमुश्किल पुलिसकर्मियों ने महिला पर कंबल डालकर आग बुझाई। तब तक महिला 70 से 80 प्रतिशत जल चुकी थी। महिला की आग बुझी तो वह रो-रोकर चिल्लाने लगी। खुद को बचाने की गुहार लगाने लगी। वह बार-बार अपने बच्चे की तरफ देख रही थी। पुलिस तुरंत महिला को सिविल अस्पताल ले गई। जहां उसकी हालत नाजुक है। डीसीपी मध्य रवीना त्यागी ने बताया-महिला ने आत्मदाह करने की कोशिश की है। उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया है। शुरुआती जांच में पारिवारिक विवाद की वजह से उसने यह कदम उठाया है। महिला 70 फीसदी जल चुकी है। मामले की जांच की जा रही है।

बैंक कराएं लाभार्थियों की समस्याओं का प्राथमिकता पर निस्तारण: निदेशक सूडा

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

राज्य नगरीय विकास अभिकरण मुख्यालय में सभी बैंकों के प्रतिनिधियों संग निदेशक सूडा डॉ. अनिल कुमार ने आवश्यक बैठक की। इस बैठक में बैंक ऑफ बड़ौदा, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, बड़ौदा यूपी बैंक, आर्यवर्त बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक, बैंक ऑफ इण्डिया, प्रथमा बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, इण्डियन ओवरसीज बैंक, इण्डियन बैंक, यूको बैंक व केनरा बैंक के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया।

बैठक के दौरान निदेशक सूडा डॉ. अनिल कुमार ने कहा कि प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना के लाभार्थियों व स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों के सम्मुख बैंक से जुड़ी हुई जो भी समस्याएं हैं, उनका जल्द से जल्द निस्तारण सुनिश्चित कराया जाए। लाभार्थियों से जुड़ी शिकायतों के निस्तारण में बैंकों को विभाग की ओर से पूरा सहयोग दिया जाता रहा है और आगे भी दिया जाता रहेगा। अतः विशेष अभियान चलाकर शिकायतों का निस्तारण किया जाए। जिससे पात्रों को योजनाओं का लाभ मिल सके। बैठक में मुख्य रूप से प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना के अंतर्गत ऋ ण वितरण तथा लाभार्थियों के सम्मुख आने वाली बैंक से जुड़ी समस्याओं व स्वयं सहायता समूहों के लिए बैंक लिंकेज समेत बैंक से सम्बद्ध अन्य मुद्दों पर चर्चा की गई। आपको बताते चलें कि प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना के अंतर्गत स्ट्रीट वेंडर्स को प्रथम लोन के रूप में 10000 रुपए, द्वितीय लोन के रूप में 20000 रुपए व तृतीय लोन के रूप में 50000 रुपए का ऋण बैंक द्वारा दिया जाता है। इसके साथ ही स्वयं सहायता समूह यानी एसएचजी का बैंक लिंकेज किया जाता है। स्वयं सहायता समूह को बैंक लिंकेज के माध्यम से उनकी बचत के अनुरूप व बैंक अपनी ग्रेडिंग के हिसाब से उनकी बचत का अधिकतम चार गुना ऋण देते हैं। इस बैठक में प्रदेश के सभी 75 जनपदों से परियोजना अधिकारियों व शहर मिशन प्रबंधक ने भी वर्चुअल कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से भाग लिया। इस दौरान बैंकर्स को समस्याओं से अवगत कराया गया। जिसे समस्त बैंक प्रतिनिधियों ने बेहद गंभीरतापूर्वक सुना व जल्द ही प्रभावी निस्तारण का आश्वासन भी दिया इस बैठक के दौरान अपर निदेशक सूडा श्री आनंद कुमार शुक्ला, संस्थागत वित्त एवं सिडबी के अधिकारियों समेत बड़ी संख्या में विभाग के अधिकारी, कर्मचारी व बैंकर्स उपस्थित रहे।

लोहिया संस्थान में पहली बार मिला बॉम्बे ब्लड ग्रुप का मरीज

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

डॉ. राम मनोहर लोहिया आयुर्विज्ञान संस्थान में पहली बार बाम्बे ब्लड ग्रुप का मरीज मिला है। पेशाब में खून आने की,सांस का फूलना तथा शिशु का गर्भ में कम घूमने की शिकायत के साथ लेकर रायबरेली से रेफर होकर आई थी। संस्थान में राखी (बदला हुआ नाम) उम्र 25 वर्ष, महिला प्रसव के 40 हफ्ते 6 दिन के बाद रायबरेली से रेफर होकर राम मनोहर लोहिया संस्थान आई थी। राखी को पेशाब में खून आने की,सांस का फूलना तथा शिशु के गर्भ में कम घूमने की शिकायत थी। जिसके बाद मरीज के खून का नमूना ट्रांसफ्यूजन मेडिसिन विभाग में आया। जिसके विस्तृत जांचों के बाद इसको बाम्बे ब्लड ग्रुप में चिन्हित किया गया। यह अनुवांशिक होता है इस मरीज को केवल यही रक्त का ग्रुप दिया जा सकता है। मरीज का हीमोग्लोबिन 5.1 पाया गया। इसके पश्चात विभाग द्वारा मरीज के पूरे परिवार की खून के नमूने की विस्तृत जांच की गई। जिसमें मरीज के भाई का भी बॉम्बे ब्लड ग्रुप पाया गया। तत्पश्चात मरीज को उसके भाई का रक्त दिया गया मरीज प्रसव उपरान्त अब सुरक्षित है। संस्थान के ट्रांसफ्यूजन मेडिसिन विभाग के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर सुब्रत चंद्रा द्वारा बताया गया कि बॉम्बे ब्लड ग्रुप भारत में 10000 में 1 व्यक्तियों में पाया जाता है।

इंटर स्कूल प्रतियोगिता में बच्चों ने दिखाई प्रतिभा

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

- गोद लिए गावों के विद्यालयों के बच्चों में एकेटीयू करा रहा विभिन्न प्रतियोगिताएं

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय का 22वां दीक्षांत समारोह 13 अगस्त को होगा। समारोह में कुलाधिपति आनंदीबेन पटेल के निर्देश पर विश्वविद्यालय के 12 गोद लिये गांवों के प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों एवं आंगनबाड़ी केंद्रों के बच्चों के बीच चित्रकला, कहानी कथन एवं भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था।

मंगलार को प्रथम राउंड की प्रतियोगिता में स्कूल स्तर पर प्रथम और द्वितीय आने वाले छात्रों का विश्वविद्यालय में दूसरे राउंड की इंटर स्कूल प्रतियोगिता आयोजित हुई। अपने शिक्षकों के साथ आये बच्चों ने चित्रकला, कहानी कथन एवं भाषण प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। इसके बाद शिक्षकों ने छात्रों का मूल्यांकन किया। जिसमें सभी प्रतियोगिताओं के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय आये छात्रों के नामों की घोषणा की गयी। इन

छात्रों को दीक्षांत समारोह में मंच से राज्यपाल सहकुलाधिपति श्रीमति आनंदीबेन पटेल सम्मानित करेंगी। स्कूल स्तर पर प्रथम एवं द्वितीय आने वाले सभी शिक्षकों को कुलपति प्रो जेपी पांडेय ने पुरस्कार देकर सम्मानित किया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि ग्रामीण बच्चों के लिये यह अवसर बहुत मायने रखता है। विश्वविद्यालयम में मंच से पुरस्कार पाना बच्चों को जीवन पर्यंत याद रहेगा। उन्होंने स्कूलों के शिक्षकों से भी कहा कि इन बच्चों की प्रतिभा को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी आपकी है। जैसा आप इन्हें बनायेंगे ये बच्चे आगे वैसे ही होंगे। कुलसचिव रीना सिंह ने कहा कि बच्चों को आगे बढ़ाने में शिक्षकों का अहम योगदान होता है। ये उनकी जिम्मेदारी है कि कक्षा में पीछे रहने वाले बच्चे पर उतना ही ध्यान दें जितना की आगे की पंक्ति में बैठे बच्चे पर रहता है। स्वागत करते हुए अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो ओ पी सिंह ने कहा कि बच्चों में काफी उत्साह रहा। कार्यक्रम का समन्वय सहा कुलसचिव डॉ आयुष श्रीवास्तव ने किया जबकि संचालन आंजनेय शर्मा ने किया।

इन गांवो के स्कूलों में हो रही प्रतियोगिता

विश्वविद्यालय के गोद लिये अलग-अलग विकासखंडों के धुबैला, पलहरी, पश्चिम गांव, फरूखाबाद, कोन्दरी भउली, सैरपुर, दुगवार, मिर्जापुर, दिगोई, दुर्जनपुर, रसूलपुर, और रैथा गांवों के स्कूलों में ये प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है। साथ ही बच्चों की बनाई पेंटिंग की बनी किताब समारोह के दौरान प्रदर्शित की जाएगी। इसके अलावा भाषण और कहानी कथन को बच्चे अपनी हैंडराइटिंग में लिखेंगे जिसकी किताब बनायी जाएगी।

लोहिया संस्थान ने मनाया विश्व स्तनपान सप्ताह

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

- मां का दूध है सर्वोत्तम आहार, शिशु के पोषण का आधार...जो करे राष्ट्र निर्माण

डॉ. राम मनोहर लोहिया आयुर्विज्ञान संस्थान के बाल रोग विभाग में निदेशक प्रोफेसर सीएम सिंह के मार्गदर्शन में शैक्षिक कार्यक्रमों और गतिविधियों की एक श्रृंखला के साथ 1 से 7 अगस्त, 2024 तक विश्व स्तनपान सप्ताह मनाया जा रहा है। इसी क्रम में मंगलवार को एक सतत चिकित्सा शिक्षा (सीएमई) सत्र आयोजित किया गया। इसमें संस्थान के डीन प्रोफेसर प्रद्युम्न सिंह, प्रोफेसर एके सिंह, मुख्य चिकित्सा अधीक्षक (सीएमएस) की उपस्थिति थी। सम्मानित अतिथि वक्ताओं में लखनऊ एकेडमी ऑफ पीडियाट्रिक्स की अध्यक्ष डॉ. निर्मला जोशी, डॉ. एस.एन. सिंह, केजीएमयू में प्रोफेसर और एसजीपीजीआई से डॉ. अनिता शामिल थीं। बाल रोग विभागाध्यक्ष डॉ. दीप्ति ने सभी गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। आयोजन सचिव डॉ शितांशु श्रीवास्तव ने स्तनपान सप्ताह की विभिन्न गतिविधियों का समन्वय किया, जिसमें एमबीबीएस छात्रों और स्टाफ नर्सों के लिए एक पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित की गयी थी। कार्यक्रम के दौरान सर्वश्रेष्ठ पोस्टरों के विजेताओं को सम्मानित किया गया। डॉ.अशोक गुप्ता ने स्नातकोत्तर प्रश्नोत्तरी का समन्वय किया। मदर नॉलेज क्विज़ का भी आयोजन किया गया, दोनों को खूब सराहा गया। डीन ने स्तनपान के महत्व और इसके समर्थन में स्वास्थ्य पेशेवरों की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि हमारा लक्ष्य स्तनपान कराने वाले परिवारों के लिए समर्थन और स्वीकृति की संस्कृति बनाना है। डॉ. एके सिंह, मुख्य चिकित्सा अधीक्षक ने अपने सम्बोधन में कहा कि मां का दूध शिशुओं के लिए पोषण का सबसे अच्छा स्रोत है, जो स्वस्थ वृद्धि और विकास के लिए आवश्यक पोषक तत्वों का सही संतुलन प्रदान करता है।

एडवांस्ड इक्विप्मेंट्स से लैस होगा एसजीपीजीआई

- संजय गांधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान में 26 प्रकार की 280 आधुनिक मशीनों व उपकरणों की स्थापना का मार्ग होगा प्रशस्त
- 26.84 करोड़ रुपए के धनावंटन के जरिए निर्धारित कार्यों को किया जाएगा पूरा

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उत्तर प्रदेश में उत्तम स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध योगी सरकार ने लखनऊ स्थित संजय गांधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान (एसजीपीजीआई) को एड्वांस्ड मशीनरी व इक्विप्मेंट्स से लैस करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। इस क्रम में, सीएम योगी की मंशा अनुरूप वर्ष 2024-25 में 26 प्रकार की 280 आधुनिक मशीनों व उपकरणों की स्थापना तथा संचालन के लिए 26.84 करोड़ रुपए का धनावंटन स्वीकृत किया है। इन आधुनिक उपकरणों में पोर्टेबल इको मशीन, हाई डेफिनेशन ड्यूडेनोस्कोप, हाई एंड अल्ट्रासाउंड मशीन तथा रोबोटिक ऑपरेशन थिएटर जैसे विभिन्न मशीनरी व इक्विप्मेंट्स की स्थापना की जाएगी। इसके साथ ही, परिसर में सीसीटीवी कैमरे के इंस्टॉलेशन प्रक्रिया को भी पूर्ण किया जाएगा। इस प्रक्रिया के पूर्ण होने पर लखनऊ समेत पूरे प्रदेश से इलाज कराने आने वाले मरीजों को उन्नत स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा। परियोजना के अंतर्गत एनेस्थीसियोलॉजी में ट्रांसक्रेनियल ड्रॉपर, कार्डियोलॉजी में पोर्टेबल ईको मशीन, सेंट्रल रिसर्च फैसिलिटी (कोर लैब) में स्पेक्ट्रोफोटोमीटर, सीवीटीएस में नाइट्रिक ऑक्साइड इनहेलेशन यूनिट, इमर्जेंसी में एयर-वे कार्ट व इंडोक्राइन सर्जरी में इलेक्ट्रो कॉटेरी मशीन इंस्टॉल की जाएगी। वहीं, एंडोक्राइनोलॉजी में रेफ्रिजरेटेड बेंच टॉप सेंट्रीफ्यूग, डीएनए एस्टीमेशन के लिए फ्लॉरोमीटर, गैस्ट्रोएंटरोलॉजी में एचडी ड्यूडेनोस्कोप समेत विभिन्न प्रकार की मशीनें इस्टॉल की जाएंगी। जनरल हॉस्पिटल में एनेस्थीसिया वर्क स्टेशन, हाई प्रेशर सक्शन मशीन, ओटी डबल डोम लाइट व मल्टीपैरा मॉनिटर्स लगाए जाएंगे। इसी प्रकार, हेमैटॉलोजी में थ्री डी बायोप्रिंटर, ऑटोमेटेड न्यूक्लिक एसिड एक्सट्रैक्शन युक्त हेप्टोलॉजी में बेंचटॉप कैपिलरी इलेक्ट्रोफोरेसिस सिस्टम समेत विभिन्न उपकरणों को स्थापित किया जाएगा।

साइबर क्राइम को रोकना एक बड़ी चुनौती: प्रशांत कुमार

- डीजीपी ने किया एसबीआई के साइबर सुरक्षा जागरूकता पखवाड़े का शुभारम्भ
- 6 प्रचार वाहनों को दिखाई हरी झंडी, साइबर सुरक्षा बुकलेट का भी विमोचन किया

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

डीजीपी प्रशांत कुमार द्वारा पुलिस मुख्यालय गोमतीनगर विस्तार में भारतीय स्टेट बैंक, लखनऊ मण्डल द्वारा साइबर ठगी के प्रति चलाये जा रहे साइबर सुरक्षा जागरूकता पखवाड़ा का शुभारम्भ एवं साइबर सुरक्षा बुकलेट का विमोचन किया गया। जनता को जागरूक किये जाने हेतु भारतीय स्टेट बैंक, लखनऊ मण्डल द्वारा आयोजित साइबर सुरक्षा पखवाड़ा के अंतर्गत प्रदेश के लखनऊ, बरेली, प्रयागराज, कानपुर, वाराणसी एवं गोरखपुर मण्डलों के लिये भेजी जाने वाली 6 प्रचार वाहनों को भी डीजीपी ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। प्रदेश की सभी स्टेट बैंक शाखाओं में आम जनमानस को वितरित किये जाने हेतु साइबर अपराधों के प्रति जागरूक किये जाने के उद्देश्य से 'साइबर ठग और राजू' बुकलेट का भी डीजीपी ने विमोचन किया।

प्रशांत कुमार ने स्टेट बैंक आफ इण्डिया के इस अभिनव प्रयोग के लिए बधाई देते हुए कहा कि साइबर क्राइम एक ऐसा क्षेत्र है, जो पिछले कुछ वर्षों में विकराल रूप धारण कर लिया है, साइबर क्राइम को रोकना एक बड़ी चुनौती है। इससे निजात पाने के लिए उपभोक्ता या डिजिटल लेन देन वाले संस्थानो को भी सचेत रहने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि पुलिस विभाग के साथ-साथ स्टेट बैंक आफ इण्डिया ने आम जनता को जागरूक करने का जो तरीका अपनाया है सराहनीय है। जागरूकता का माध्यम वही होना चहिये जो आम जनता के समझ में आये। प्रदेश सरकार द्वारा भी इस चुनौती से निपटने के लिए निरन्तर सार्थक प्रयास किया जा रहा है। साइबर क्राइम पर प्रभावी रोकथाम के दृष्टिगत वर्तमान में प्रदेश के सभी जनपदो में साइबर थाने खोले गये है तथा आम जनमानस की सुविधा हेतु जनपदों के प्रत्येक थानों पर साइबर हेल्प डेस्क की स्थापना भी की गयी है। उप्र पुलिस साइबर क्राइम से लड़ने और साइबर क्राइम की गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए दृढ़ संकल्पित है। कार्यक्रम के दौरान भारतीय स्टेट बैंक, लखनऊ मण्डल के मुख्य महाप्रबन्धक द्वारा बताया गया कि साइबर सुरक्षा पखवाड़ा के अंतर्गत साइबर वित्तीय धोखाधड़ी से बचाव हेतु आम जनता को जागरूक करने के लिये रेडियो जिंगल, समाचार पत्रों में विज्ञापन के साथ-साथ 24 केन्द्रों पर नुक्कड़ नाटक का भी आयोजन किया जा रहा है। आयोजन के दौरान भारतीय स्टेट बैंक, लखनऊ मण्डल के मुख्य महाप्रबन्धक, शरद एस. चांडक, अपर पुलिस महानिदेशक कानून व्यवस्था, अपर पुलिस महानिदेशक अपराध, अपर पुलिस महानिदेशक स्थापना, अपर पुलिस महानिदेशक मुख्यालय, अपर पुलिस महानिदेशक / पुलिस महानिदेशक के जीएसओ, अपर पुलिस महानिदेशक मानवाधिकार सहित अन्य पुलिस अधिकारी एवं भारतीय स्टेट बैंक के अधिकारी उपस्थित रहे।

संवाद व समन्वय से समस्याओं का निराकरण करें अफसर

- ग्रीन फंड के लोगो का किया शुभारंभ
- अयोध्या के 1000वें होम स्टे को प्रमाण पत्र प्रदान किया

सीएम योगी ने की अयोध्या के विकास कार्यों व कानून व्यवस्था की समीक्षा

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ अयोध्या

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि सभी अधिकारी जनप्रतिनिधियों एवं जनपदवासियों के साथ समन्वय बनाकर कार्य करें और समस्याओं का निराकरण संवाद एवं समन्वय से करें। मुख्यमंत्री ने निर्देश दिया कि अयोध्या के नगरीय एवं शहरी क्षेत्रों में विद्युत आपूर्ति 24 घंटे सुनिश्चित करायें तथा जहां भी ट्रांसफॉर्मर के जलने/खराब होने की शिकायत मिले, उसे यथाशीघ्र ठीक करायें।

मुख्यमंत्री मंगलवार को आयुक्त सभागार में अयोध्या के विकास कार्यों व कानून व्यवस्था की समीक्षा कर रहे थे। योगी ने जनप्रतिनिधियों की समस्याएं सुनीं। रुदौली के विधायक ने आयुर्वेदिक मेडिकल कालेज के निर्माण कार्य व आईटीआई मवई के संचालन के बारे में अपनी बात रखी। इस पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने आयुक्त व जिलाधिकारी सहित सम्बंधित विभाग के अधिकारियों को कार्यवाही के निर्देश दिये। बैठक में वाहनों की पार्किंग से जुड़े मुद्दे पर योगी आदित्यनाथ ने कहा कि बनाए गए पार्किंग स्थलों को पूरी क्षमता से संचालित किया जाय। मेला/ उत्सव आदि के दौरान आवश्यकता पड़ने पर अस्थायी पार्किंग की व्यवस्था के भी इंतजाम हों। मुख्यमंत्री ने कहा कि अयोध्या आने वाले श्रद्धालुओं साधु-संतों व आम नागरिकों को धार्मिक नगरी अयोध्या में आने वाले श्रद्धालुओं को कम से कम पैदल चलना पड़े, इसके लिए ई-कार्ट, ई-बस आदि की व्यवस्था को सुदृढ़ किया जाए। यातायात व्यवस्था सुदृढ़ करने के लिए रूट व रंगों के आधार पर अलग-अलग उसका विभाजन किया जाय। सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि कुंडों के जीर्णोद्धार के कार्यों में पुरानी पद्धति का इस्तेमाल करें और जल शोधन करते हुए जल को शुद्ध रखें।

सीएम योगी आदित्यनाथ ने अयोध्या में आपातकालीन चिकित्सा सुविधा के लिए हॉस्पिटल कम ट्रामा सेंटर के लिए भूमि चिह्नित करने का प्रस्ताव भेजने का निर्देश दिया, जिससे आम नागरिकों को अयोध्या में ही ट्रामा सेन्टर की सुविधा उपलब्ध हो सके। मुख्यमंत्री ने पर्यटन समेत अन्य विभागों द्वारा कराए जा रहे

कार्यकर्ताओं में भरा उत्साह, कहा-विपक्ष की गुमराह करने की राजनीति का दें जवाब

लखनऊ/ अयोध्या। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मिल्कीपुर विधानसभा चुनाव की तैयारियों को लेकर चुनाव प्रभारियों, पार्टी पदाधिकारियों के साथ सर्किट हाउस में समीक्षा की। चुनाव को लेकर उन्होंने बूथ प्रबंधन पर विशेष जोर दिया। बूथ प्रबंधन के विभिन्न विषयों पर उन्होंने विस्तार से पदाधिकारियों को जानकारी दी। सीएम योगी आदित्यनाथ ने 'हर घर तिरंगा (13 से 15 अगस्त)' अभियान को लेकर पार्टी पदाधिकारियों को प्रत्येक परिवार से सम्पर्क स्थापित करने के लिए निर्देशित किया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कार्यकर्ताओं में जोश भरा। बोले कि सरकार हर वर्ग के लिए विकास योजनाएं चला रही हैं। इसका लाभ भी आमजन को मिल रहा है। हमारे कार्यकर्ता हर हाल में आमजन से जुड़कर विकास के मुद्दे लोगों तक पहुंचाएं। सीएम ने कार्यकर्ताओं से कहा कि विपक्ष की गुमराह करने की राजनीति का जवाब दें। इसके लिए पदाधिकारियों को सक्रिय रहना होगा।

साधु-संतों व धर्माचार्यों से मिले सीएम, जाना कुशलक्षेम

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/अयोध्या

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपने अयोध्या दौरे के पहले दिन अपने व्यस्ततम प्रशासनिक कार्यक्रमों के बीच साधु-संतों व धर्माचार्यों से भी मुलाकात की। सीएम योगी आदित्यनाथ ने सरयू अतिथि गृह में मंगलवार रात साधु-संतों व धर्माचार्यों से भी मुलाकात के दौरान उनका कुशलक्षेम जाना। इसके बाद सीएम सभी संतों से व्यक्तिगत रूप से मुखातिब हुए। सीएम ने संतों से उनकी समस्याएं भी पूछीं। साधु-संतों ने भी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के समक्ष अपनी बातें रखीं। सीएम ने साधु-संतों संग रात्रिभोज भी किया। इस दौरान दशरथ महल के महंत बिंदु गद्याचार्य देवेंद्र प्रसादाचार्य, धर्मदास जी महाराज, राजकुमार दास, कमल नयन दास, महंत रामदास, महंत अवधेश दास, महापौर गिरीश पति त्रिपाठी, शशिकांत दास, विधायक वेदप्रकाश गुप्त आदि मौजूद रहे।

श्रीकृष्ण जन्मोत्सव समारोह के लिए व्यापक सुरक्षा सुनिश्चित की जाए: जयवीर सिंह

- जन्मोत्सव कार्यक्रम को दिव्य एवं अलौकिक स्वरूप प्रदान करने के निर्देश

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने मथुरा जिला प्रशासन एवं विभागीय अधिकारियों को निर्देश दिये हैं कि भगवान श्रीकृष्ण का 5251वां जन्मोत्सव समारोह पूरी आस्था एवं अलौकिक ढंग से मनाया जाए। उन्होंने यह भी कहा कि भगवान श्रीकृष्ण की जन्माष्टमी के दिन देश दुनिया से बड़ी संख्या में श्रद्धालु एवं भक्त जन्मोत्सव को देखने के लिए आते हैं। इसलिए कार्यक्रम स्थल पर स्वास्थ्य, सुरक्षा, यातायात, पार्किंग, आवागमन मार्ग, विद्युत, साफ-सफाई, पेयजल, लाइटिंग एवं शौचालय आदि की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। उन्होंने यह भी कहा कि भीड़ को नियंत्रित करने के लिए पर्याप्त पुलिस फोर्स के साथ ही आवागमन एवं निकासी के लिए सुरक्षित व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। पर्यटन मंत्री सोमवार को उप्र ब्रजतीर्थ विकास परिषद मथुरा के सभागार में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव की तैयारी को लेकर एक उच्चस्तरीय बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होंने कहा कि जन्मोत्सव का आयोजन दिव्य, भव्य एवं अलौकिक होना चाहिए।

उन्होंने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण द्वारा श्रीमदभागवत में जो कालजयी संदेश दिये गये हैं, वह सम्पूर्ण मानवता के लिए कल्याणकारी तथा कर्तव्यपथ पर निरन्तर आगे बढ़ने का है। उनके संदेशों में मानव कल्याण के तथ्य निहित हैं। उन्होंने कहा कि जन्मोत्सव का व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि संतो का सुझाव है कि रक्षाबंधन से लेकर नन्दोत्सव तक 9 दिवसीय पर्व मनाया जाए। इसके साथ ही सभी घरों, मंदिरों एवं आश्रमों में आयोजन किया जाए।

15 जिलों के आउट आफ स्कूल बच्चों को पढ़ाएंगे रिटायर्ड शिक्षक

लखनऊ। प्रदेश 15 जिलों में आउट ऑफ़ स्कूल बच्चों को अब रिटायर शिक्षक पढ़ायेंगे। इन जिलों में बेसिक शिक्षा विभाग ने सबसे अधिक आउट आफ स्कूल बच्चों को चिन्हित किया है। इन बच्चों के लिए रिटायर शिक्षकों को मानदेय पर रखने का निर्णय किया है। जिस क्षेत्र में पांच से अधिक आउट ऑफ स्कूल बच्चे पाये जाएंगे उस क्षेत्र के परिषदीय स्कूलों में रिटायर शिक्षकों को अस्थाई रूप से मानदेय पर रखा जाएगा। इन रिटायर शिक्षकों को प्रतिमाह छह हजार मानदेय दिया जाएगा। आउट ऑफ स्कूल बच्चों की अधिक संख्या वाले प्रमुख जिलों में मुरादाबाद, अमरोहा, शामली, मेरठ, गाजियाबाद, अलीगढ़, कानपुर, बहराइच, बलरामपुर, बलिया, वाराणसी, भदोही, कासगंज, बदायूं तथा गोण्डा जिले के नाम शामिल हैं। स्कूल शिक्षा महानिदेशक ने प्रदेश के सभी बेसिक शिक्षा अधिकारियों को आउट ऑफ स्कूल बच्चों को शिक्षित करने के लिए रिटायर शिक्षकों के चयन की प्रक्रिया शीघ्र शुरू कराने के निर्देश भी दिए हैं।

मुख्यमंत्री की घोषणाओं को पूरा कराने के लिए प्रधान संगठन ने उठाई आवाज

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री की घोषणाओं को पूरा कराए जाने की मांग को लेकर प्रधान संगठन ने मंगलवार को सुबह विभागीय मंत्री ओम प्रकाश राजभर तथा शाम को मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह से मुलाकात की। प्रतिनिधिमंडल ने 1500 से कम आबादी वाली उत्तर प्रदेश की 12168 ग्राम पंचायतों को प्रत्येक वर्ष अधिक धनराशि दिये जाने सहित विभिन्न विषयों पर वार्ता की। संगठन के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. अखिलेश सिंह के नेतृत्व वाले प्रतिनिधिमंडल में प्रदेश अध्यक्ष ललित शर्मा,वाराणसी के जिलाध्यक्ष राकेश कुमार सिंह,विनोद पांडेय,रामआसरे मौर्या, राज कुमार, रमेश राजभर एवं कैलाश यादव शामिल थे। राष्ट्रीय संयोजक ने बताया कि 1000 से कम आबादी वाली ग्राम पंचायतों को प्रत्येक वर्ष 5 लाख का अतिरिक्त अनुदान दिया जाना है। एक हज़ार से 1500 के बीच आबादी की ग्राम पंचायतों को 6 लाख की धनराशि प्रति वर्ष प्रदान किया जाना प्रस्तावित है। 2 प्रधानों को ज़िला योजना समिति का सदस्य बनाए जाने तथा एमजी नरेगा के भुगतान का डोंगल ग्राम पंचायतों को प्रदान किए जाने सम्बन्धी मुख्यमंत्री की घोषणाओं को पूरा किए जाने पर भी विभागीय मंत्री के साथ विचार विमर्श की जानकारी संगठन द्वारा दी गयी है।

डीएलएड प्रथम व तृतीय सेमेस्टर की परीक्षा आठ अगस्त से

लखनऊ। डीएलएड प्रथम और तृतीय सेमेस्टर की परीक्षा आठ अगस्त से शुरू होगी। इस बावत परीक्षा नियामक प्राधिकारी (पीएनपी) प्रयागराज के सचिव ने परीक्षा का कार्यक्रम जारी कर दिया है। परीक्षा छह दिन होगी। परीक्षा का समापन 14 अगस्त को होगा। इस दौरान आठ-आठ प्रश्न पत्रों की परीक्षा होगी। डीएलएड प्रथम सेमेस्टर की परीक्षा आठ अगस्त से शुरू होगी। पहले दिन दो पाली में सुबह 10 से 12 बजे तक बाल विकास और दोपहर 1.30 से 3.30 बजे तक शिक्षण अधिगम के सिद्धांत की परीक्षा होगी। नौ अगस्त को सुबह 10 से 11 बजे तक विज्ञान, 11.30 से 12.30 बजे तक गणित और दो से चार बजे तक सामाजिक अध्ययन की परीक्षा होगी। 10 अगस्त को सुबह 10 से 11 बजे तक हिंदी, 11.30 से 12.30 बजे तक संस्कृत या उर्दू और दो से तीन बजे तक कंप्यूटर की परीक्षा होगी। तृतीय सेमेस्टर की परीक्षा 12 अगस्त से शुरू होगी।

जेई के बाद अमेठी सबस्टेशन का कुशल श्रमिक भी निलंबित

संवाददाता। मोहनलालगंज

बिजली चोरी छिपाने के आरोप में अमेठी सबस्टेशन के एक कर्मचारी को भी सस्पेंड कर दिया गया है। जबकि अमेठी सबस्टेशन की जिम्मेदारी गोसाईंगंज के जेई को सौंपी गई है। उधर अमेठी सबस्टेशन के कुछ संविदाकर्मियों को भी हटाने की तैयारी है। मोहनलालगंज के अमेठी सबस्टेशन अंतर्गत प्राइवेट प्लॉटिंग का एक वीडियो वायरल होने के बाद एक्सइएन एसके अग्रवाल की जांच रिपोर्ट के आधार पर जेई आरके शुक्ल के बाद कुशल श्रमिक जय सिंह को भी सस्पेंड कर दिया गया है। जय सिंह पर बिजली चोरी की घटना छिपाने का आरोप है। उधर अधिकारियों ने अमेठी सबस्टेशन की जिम्मेदारी गोसाईंगंज के जेई रूपेश कुमार सिंह को सौंप दी है। वहीं अमेठी सबस्टेशन में वर्षों से जमे कुछ संविदाकर्मियों को भी हटाने की कार्रवाई शुरू हो गई है। एक्सइएन एसके अग्रवाल ने बताया जल्द ही कुछ संविदा कर्मचारियों को अमेठी से हटाकर दूसरी जगह भेजा जाएगा। मोहनलालगंज खण्ड के विभिन्न विद्युत उपकेंद्रों पर कुछ संविदाकर्मी वर्षों से जमे हुए हैं। मठाधीशी कर रहे इनमे से कुछ कर्मचारी अधिकारियों की भी अनसुनी करते रहते हैं। जिससे विभागीय कार्यों को वक्त पर पूरा करने में बाधा पहुंचती रहती है। ऐसे मठाधीश संविदाकर्मियों पर तलवार लटक रही है। जेई और एसडीओ से ऐसे कर्मचारियों की जानकारी देने को कहा गया है। एक्सइएन एसके अग्रवाल ने बताया जिन संविदाकर्मियों के विरुद्ध शिकायतें मिल रही हैं। जांच कराकर उनके विरुद्ध कार्रवाई की जाएगी।

नाबालिग बेटी का सौदा करने के आरोपी पर मुकदमा दर्ज

मोहनलालगंज। नगर पंचायत के एक गांव के निवासी बेबस पिता ने अपने ही परिवार पर नाबालिग बेटी का सौदा करने का आरोप लगाया है। कोर्ट के आदेश पर पुलिस ने केस दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है। मोहनलालगंज के एक गांव निवासी पिता ने अपनी पत्नी बेटों और बहु पर अपनी नाबालिग बेटी का सौदा करने का आरोप लगाया है। पिता का आरोप है कि आरोपियों ने बारहवीं में पढ़ रही बेटी का आपत्तिजनक वीडियो बना लिया है। जिसे वो वायरल करने की धमकी दे रहे हैं। यही नही तरह तरह से बाप बेटी को तंग किया जा रहा है। पुलिस से मदद नहीं मिलने पर आहत पिता ने कोर्ट से गुहार लगाई है। कोर्ट के आदेश पर पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

मोहनलालगंज में करंट की चपेट में आकर दो भैंसों की मौत

मोहनलालगंज। गनियार और कुढ़ा गांव में करंट की चपेट में आकर दो भैंसों ने दम तोड़ दिया। जिसकी वजह गांव में सप्लाई भी बाधित रही। ग्रामीणों ने विभाग से मुआवजे की मांग की है। मोहनलालगंज के गनियार गांव में मंगलवार को खेतों से गुजरी एलटी लाइन का तार अचानक टूट गया। सूचना के बावजूद विद्युतकर्मियों ने वक्त पर पहुंचकर टूटे तार को जोड़ने की जरूरत नही समझी। लिहाजा शाम करीब 4 बजे गांव के लक्ष्मी पाल की भैंस चरते हुए खेतों में पहुंच गई। जिससे तार की चपेट में आकर करंट लगने से भैंस ने दम तोड़ दिया। ग्रामीणों ने पावर हाउस फोन कर नाराजगी जताई तब जाकर सप्लाई बंद की गई। उधर मौके पर पहुंचे विद्युतकर्मियों ने तार जोड़े बिना ही लाइन खोल दी और वापस लौट गए। वहीं कुढ़ा गांव में नालियां चोंक होने से रास्ते पर जलभराव होता है। रास्ते में किनारे पोल और स्टे वायर लगा हुआ है। मंगलवार की शाम सुनील यादव की भैंस चरकर वापस लौट रही थी। तभी जलभराव के बीच पोल के निकट से गुजरते हुए करंट की चपेट में आकर भैंस की मौत हो गई। जिसके बाद काफी देर तक गांव की सप्लाई बंद रही। तहसील बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष श्रवण कुमार यादव ने ब्लॉक प्रशासन पर जलभराव की समस्या दूर कराने में लापरवाही बरतने का आरोप लगाकर बीडीओ को फोन कर शिकायत दर्ज कराई है। उन्होंने विद्युत विभाग से पशुपालक को मुआवजा देने की भी मांग की है।

परिवहन मंत्री ने छात्र-छात्राओं को वितरित किए स्मार्ट फोन

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

परिवहन राज्य मंत्री स्वतंत्र भारत दया शंकर सिंह ने आज प्रदेश के युवाओं को तकनीकी रूप से सबल बनाने की उत्तर प्रदेश सरकार की महत्वाकांक्षी स्वामी विवेकानंद युवा सशक्तिकरण योजना 'डीजी शक्ति' के अंतर्गत डी.ए.वी. डिग्री कॉलेज, लखनऊ में छात्र-छात्राओं को स्मार्टफोन वितरित किए। उन्होंने कहा कि यह योजना देश एवं प्रदेश के युवाओं को ग्लोबल रूप से सशक्त बनाने की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के विकसित भारत की आधारशिला है। कार्यक्रम में लगभग 300 छात्र-छात्राओं को स्मार्टफोन वितरित किए गए। आगामी दिवसों में भी छात्र/ छात्राओं को स्मार्टफोन वितरित किए जाएंगे। परिवहन मंत्री ने कहा कि हम प्रदेश में बढ़ती दुर्घटनाओं को रोकने हेतु प्रत्येक महाविद्यालय में रोड सेफ्टी क्लब स्थापित कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि यदि छात्र जीवन से ही बच्चों को सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूक एवम अनुशासित किया जाए तो एक दिन सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने में सफलता प्राप्त की जा सकती है।

प्रदेश के 26 राज्य विश्वविद्यालयों में समर्थ ईआरपी का क्रियान्वयन: योगेन्द्र उपाध्याय

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उच्च शिक्षा विभाग के सहयोग से डा. राम मनोहर लोहिया राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय में 8 अगस्त तक राज्य विश्वविद्यालयों के अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए समर्थ ई.आर.पी. पोर्टल के क्रियान्वयन हेतु फाइनेंस एवं एकाउन्ट्स मॉड्यूल पर चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया है।

कार्यशाला के दूसरे दिन मंगलवार को उच्च शिक्षा मंत्री योगेन्द्र उपाध्याय ने समर्थ ई.आर.पी. के महत्व और इसके क्रियान्वयन की प्रगति पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उच्च शिक्षा को तकनीक से जोड़ने का कार्य किया जा रहा है। इसका मुख्य उद्देश्य उच्च शिक्षण संस्थानों की प्रक्रियाओं को स्वचालित (ऑटोमेटेड) करना है, जिससे सूचना तक निर्बाध पहुँच और प्रक्रियाओं में उत्पादकता में वृद्धि हो सके। उन्होंने कहा कि वर्तमान में प्रदेश के 26 राज्य विश्वविद्यालयों में समर्थ ई.आर.पी. का क्रियान्वयन किया जा रहा है। इनमें से 22 विश्वविद्यालयों में लीव मॉड्यूल को लागू कर दिया गया है, 24 विश्वविद्यालयों में पे रोल मॉड्यूल के कन्फीग्रेशन का कार्य पूर्ण हो चुका है, और 14 विश्वविद्यालयों द्वारा जुलाई 2024 का वेतन समर्थ ईआरपी के माध्यम से जनरेट किया गया है।

पशुधन मंत्री ने बीकेटी में अस्थाई गोवंश संरक्षण केन्द्र का आकस्मिक निरीक्षण किया

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

पशुधन एवं दुग्ध विकास मंत्री धर्मपाल सिंह ने बख्शी का तालाब में ढिलवासी एवं भगौतीपुर स्थित अस्थायी गौवंश संरक्षण केन्द्र का आकस्मिक निरीक्षण किया। पशुधन मंत्री ने गौशाला का गहन निरीक्षण करते हुए वहां गोवंश हेतु चारा, भूसा, चिकित्सा, औषधियॉ, प्रकाश एवं सुरक्षा आदि व्यवस्थायें देखी। सिंह ने गौशाला में टीन शेड की व्यवस्था और दुरूस्त किये जाने तथा खड़न्जा लगाये जाने के निर्देश दिये। उन्होंने गौसंरक्षण केन्द्र की गोवंश के स्वास्थ्य पर और ध्यान दिये जाने तथा हरे चारे की उचित व्यवस्था करने के निर्देश दिये।पशुधन मंत्री ने गौशाला को आत्मनिर्भर बनाने पर बल देते हुए निर्देशित किया कि गौशाला के स्वावलम्बन हेतु गौ जनित पदार्थों के उपयोग को बढ़ावा दिया जाए। उन्होंने गोशाला में गोबर के कंडें बनवाकर बिक्री किये जाने तथा कम्पोस्ट खाद बनाये जाने का भी सुझाव दिया। मंत्री ने गौशाला की व्यवस्था पर संतोष व्यक्त करते हुए कहा कि गौशाला में गायों के लिए निरन्तर हरा चारा, भूसा एवं पेयजल की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए और गोवंश के संरक्षण में किसी भी प्रकार की लापरवाही न की जाए। पशुधन मंत्री ने गोआश्रय स्थल पर गोवंश को केला, चना एवं गुण खिलाकर आशीर्वाद प्राप्त किया।

मनरेगा में मांग के अनुरूप शत प्रतिशत श्रमिकों को मिल रहा रोजगार

- गरीबी उन्मूलन में सहायक सिद्ध हो रही मनरेगा योजना

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य के नेतृत्व व निर्देशन में प्रदेश में मनरेगा योजना के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्र में निवास कर रहे परिवारों के इच्छुक वयस्क सदस्यों को उनकी मांग के अनुसार रोजगार उपलब्ध करने का उद्देश्य शत -प्रतिशत पूरा हो रहा है। महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) एक मांग-आधारित मजदूरी रोजगार कार्यक्रम है।

उत्तर प्रदेश में गरीब परिवारों को आर्थिक तौर पर मजबूत करना और ग्रामीण परिवेश में रह रहे वयस्क नागरिकों को रोजगार के लिये न भटकना पड़े, इसको लेकर लगातार मनरेगा के माध्यम से श्रमिकों को रोजगार उनके ही गांव में उपलब्ध कराया जा रहा है। ग्राम्य विकास विभाग द्वारा समय-समय पर जन कल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से रोजगार सृजन किया जा रहा है। ग्राम्य विकास विभाग का उद्देश्य ग्रामीण परिवेश में रहने वाले लोगों कोउन सभी मूलभूत सुविधाओं को पहुंचाना है, जो आम जनता को मिलनी चाहिए। गांवों में रहने वाले श्रमिकों को समय-समय पर रोजगार उपलब्ध कराना भी विभाग द्वारा सुनिश्चित किया जाता है। ग्राम्य विकास विभाग मनरेगा योजना के अंतर्गतआने वाले विभिन्न कार्यो के माध्यम से ग्रामीणों को रोजगार उपलब्ध करा रहा है। वर्तमान वित्तीय वर्ष 2024-25 में रोजगार की मांग के अनुरूप करीब-करीब 100 फीसदी रोजगार उपलब्ध कराया जा रहा है। वर्तमान वित्तीय वर्ष में 58,42,483 से अधिक श्रमिकों ने रोजगार की मांग की, जिसमें लगभग सभी को रोजगार उपलब्ध करा दिया गया है।

अगले महीने से कर सकेंगे जुरासिक पार्क की सैर डायनासोर के रियल साइज मॉडल बढ़ाएंगे रोमांच

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

गोमती नगर विस्तार के जनेश्वर मिश्र पार्क में विकसित किया जा रहा जुरासिक पार्क लोगों के लिए अगले महीने से खोल दिया जाएगा। लखनऊ विकास प्राधिकरण द्वारा मंगलवार को पार्क का निरीक्षण करके कार्य की प्रगति की समीक्षा की गयी। उपाध्यक्ष द्वारा महीने के अंदर समस्त अवशेष कार्य पूर्ण कराकर जुरासिक पार्क को संचालित करने के निर्देश दिये गए।

गोमतीनगर के जनेश्वर मिश्र पार्क में 5 एकड़ क्षेत्रफ ल में विकसित किया जा रहा यह पार्क यूपी का पहला डायनासोर पार्क है। यहां गॉडजिला, मैमथ, किंग कॉग व डायनासोर की विभिन्न प्रजातियों के रियल साइज मॉडल लगाये गये हैं। यह मॉडल अत्याधुनिक सेंसर से लैस हैं, जिससे कि दर्शकों को डायनासोर के ब्रीथिंग व साउंड इफेक्ट के साथ मूवमेंट भी देखने को मिलेगा। पार्क में स्कल्पचर आदि के निर्माण में निष्प्रयोज्य वस्तुओं जैसे कि गाड़ियों के स्क्रैप व टायर इत्यादि का प्रयोग किया गया है। निरीक्षण में पाया गया कि स्थल पर 95 प्रतिशत कार्य पूरा हो चुका है। उपाध्यक्ष ने शेष कार्यों को हर हाल में 30 दिन के अंदर पूर्ण कराने के निर्देश दिये हैं। साथ ही जुरासिक पार्क के लिए अलग से बिजली कनेक्शन लेने के लिए लेसा से समन्वय स्थापित करके शीघ्र कार्यवाही कराने के निर्देश दिये गये हैं। उपाध्यक्ष प्रथमेश कुमार ने कहा कि जुरासिक पार्क, 5डी मोशन चेयर व मल्टीमीडिया लेजर शो के टिकट वितरण के लिए सिंगल विन्डो सिस्टम के तहत व्यवस्था करायी जाए, जिससे कि लोगों को टिकट लेने के लिए इधर.उधर भटकना न पड़े। उन्होंने निर्देशित किया कि जनेश्वर मिश्र पार्क के जिस गेट से लोगों का सर्वाधिक आवागमन होता है, वहीं पर काउंटर स्थापित कराकर टिकट वितरण का कार्य कराया जाए। साथ ही टिकट के लिए नगद भुगतान के साथ.साथ ई.पेमेंट का भी विकल्प देते हुए व्यवस्था सुनिश्चित करवायी जाए।

आय कम होने पर तय होगी संस्था की जवाबदेही

उपाध्यक्ष ने 5 डी मोशन चेयर का भी निरीक्षण किया। अधिकारियों द्वारा अवगत कराया गया कि इसका संचालन व अनुरक्षण कार्यदायी संस्था द्वारा कराया जा रहा है। इस पर उपाध्यक्ष ने निर्देश दिये कि जितनी सीटें हैं, उतनी ही संख्या में मैग्निफाइंग चश्मों की उपलब्धता सुनिश्चित करवायी जाए। उन्होंने कहा कि अगर 5 डी मोशन चेयर शो से प्रतिमाह 3 लाख रुपये से कम की आय होती है तो कार्यदायी संस्था की जिम्मेदारी तय करते हुए आर्थिक दंड लगाया जाए।

राजनीतिक विद्वेष की भावना से जनेश्वर मिश्र पार्क का सौंदर्य बिगाड़ रही भाजपा सरकार: सपा

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव बीते 5 अगस्त 2024 को समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता जनेश्वर मिश्र की जयंती पर जनेश्वर मिश्र पार्क श्रद्धासुमन अर्पित करने गए थे। सपा प्रवक्ता ने कहा कि वहां उन्होंने इस पार्क की जो दुर्दशा देखी उससे वे काफी क्षुब्ध तथा चिंतित हुए। लोगों की जिंदगी में भी हरियाली का एहसास हो इस उद्देश्य से यह पार्क बना था। भाजपा सरकार इसे बदसूरत और बदहाल बनाने पर उतारू है।

सपा प्रवक्ता ने कहा कि प्रकृति का सौंदर्य न केवल धरती के परिवेश को अपितु जीवन में भी रंग-उमंग भरने में समर्थ होता है। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव की पर्यावरण संरक्षण में विशेष अभिरुचि रही है और उन्होंने अपने मुख्यमंत्रित्वकाल में जो कदम उठाए उनका प्रतिफल आज भी मिल रहा है। अखिलेश यादव ने अपने मुख्यमंत्रित्वकाल में जहां राजधानी लखनऊ में 376 एकड़ में जनेश्वर मिश्र पार्क का निर्माण कराया, जो लंदन के हाईड पार्क के तर्ज पर उतने ही क्षेत्रफल में बना है। वहीं इटावा में एक हजार एकड़ में लायन सफारी बनाकर उन्होंने वन्य जीवों के संरक्षण के साथ वन संरक्षण की दिशा में भी काम किया। इसके अलावा एक हजार एकड़ में ग्रीन बेल्ट विकसित की गई थी। यह अलग बात हैं कि लायन सफारी में जहां दशक पूर्व के प्रयासों के सुफल स्वत: मिलने लगे हैं वहीं राजनीतिक विद्वेष भावना के चलते लखनऊ में जनेश्वर मिश्र पार्क का सौंदर्य बिगाड़ने में भाजपा सरकार कोई कोरकसर नहीं छोड़ रही है। सपा प्रवक्ता ने कहा कि लायन सफारी की हरियाली और जनेश्वर मिश्र पार्क की हरियाली से पर्यावरण संतुलन की अनोखी भूमिका निर्मित हुई है।

इफको इम्पलाइज यूनियन का चुनाव संपन्न

●पंकज पाण्डेय अध्यक्ष और विजय यादव महामंत्री निर्वाचित

संवाददाता। प्रयागराज

इफको इम्पलाइज यूनियन का चुनाव मंगलवार को चुनाव अधिकारी पी के पटेल की देखरेख में सकुशल संपन्न हो गया। चुनाव में अध्यक्ष पद पर पंकज पाण्डेय विजई घोषित हुए हैं। पंकज पाण्डेय ने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी संतोष कुमार को 23 मतों से पराजित किया है। पंकज पाण्डेय को 107 और संतोष कुमार को 84 तथा मनोज कुमार तिवारी को 22 मत मिले। वहीं महामंत्री पद पर विजय कुमार यादव ने जीत दर्ज की है।

विजय कुमार यादव ने विनय कुमार यादव को दो मतों से पराजित किया। विजय कुमार यादव को 92 विनय कुमार यादव को 90 एवं मनोज कुमार श्रीवास्तव को 28 मत प्राप्त हुए हैं। इसी प्रकार उपाध्यक्ष पद पर धर्म सिंह पटेल मात्र एक मत से विजयी घोषित किए गए हैं। धर्म सिंह पटेल को 87 प्रभात कुमार को 86 और सुरेश कुमार सिंह यादव को 39 मत मिले।

इसी प्रकार संयुक्त मंत्री संगठन पर सालिक राम पटेल समान मत होने पर लॉटरी से विजयी घोषित किए गए। सालिक राम पटेल को 61 संताज अली को 61 विनोद कुमार यादव को 60 एवं वीरम यादव को 30 मत मिले। संयुक्त मंत्री प्रचार पर अभयराज यादव तीन मतों से विजयी घोषित किए गए। अभयराज यादव को 91 रजनीश राव को 88 तथा राहुल कुमार को 34 मत मिले। कोषाध्यक्ष पद पर गौरव श्रीवास्तव ने तीन वोटों से जीत दर्ज की। गौरव श्रीवास्तव को 80 अतुल तिवारी 77 तथा दिनेश कुमार मौर्य को 55 मत मिले सहायक मंत्री पद पर अभिषेक पटेल तथा राम चन्द्र गौतम निर्वाचित हुए। अभिषेक पटेल को 77 राम चन्द्र गौतम को 85 विनीत कुमार राय को 71 राम बाबू जायसवाल को 64 एनी जी नायर को 38 तथा ज्ञान सिंह पटेल 25 मत मिले।कार्यकारिणी सदस्य पद पर मनोज पटेल तथा विनोद कनौजिया निर्वाचित हुए। मनोज पटेल को 77 विनोद कनौजिया को 77 सुनील कुमार पाल को 60 सुनील वैश्य को 53 मो आरिफ अंसारी को 57 तथा पंकज सिंह 40 मत मिले। वरिष्ठ कार्यकारी निदेशक इकाई प्रमुख संजय कुदेशिया विभागाध्यक्ष मानव संसाधन शम्भू शेखर इफको ऑफिसर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष अनुराग तिवारी और महामंत्री स्वयम प्रकाश ने सभी विजई प्रत्याशियों को बधाई दी। यह जानकारी स्वयम प्रकाश जनसम्पर्क अधिकारी इफको फूलपुर ने दी।

12 अगस्त को होगा बर्फ शिवलिंग का सजीव दर्शन

प्रयागराज। श्री राम मंदिर सभा की बैठक श्री राम मंदिर हीवेट रोड के प्रांगण में आयोजित की गई। सभा के अध्यक्ष बसंत लाल आजाद ने बताया कि श्रावण महोत्सव के अवसर पर बाबा मुक्तेश्वर नाथ महादेव का भव्य बर्फ शिवलिंग का संजीव श्रृंगार दर्शन 12 अगस्त को रात्रि आठ बजे किया जाएगा। जो बाबा अमरनाथ के स्वरूप में होगा। सभा के मीडिया प्रभारी राजेश केसरवानी ने बताया कि 13 अगस्त को दोपहर दो बजे बाबा मुक्तेश्वर नाथ महादेव जी को भंडारे का भोग लगाया जाएगा इसके पूर्व 11 अगस्त को ज्योतिषाचार्य अमित बहोरे के द्वारा पूर्ण विधि विधान के अनुसार बाबा मुक्तेश्वर नाथ महादेव जी का रुद्राभिषेक जलाभिषेक का आयोजन किया जाएगा और पार्थिव शिवलिंग का निर्माण किया जाएगा।

रेणुसागर के आडिटोरियम में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया हरियाली तीज उत्सव

संवाददाता। सोनभद्र

रेणुसागर के पैराडाइज ऑडिटोरियम में दिशिता महिला मंडल की अध्यक्षा इंदू सिंह के नेतृत्व में हरियाली तीज का उत्सव बहुत ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। ससुराल गेंदा फूल थीम पर आधारित हरियाली तीज उत्सव में अनेक रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत हुए। महिलाओं ने इस बार कजरी डांस का आनंद उठाया। मुख्य अतिथि रेणुकूट के तरंगिणी महिला मंडल की अध्यक्षा लक्ष्मी नागेश तथा रेणुकूट महिला मंडल की वरिष्ठ सदस्याएं सीमा जसबीर तथा पूनम राय की उपस्थिति ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। तीज क्वीन प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल में पूनम वार्ष्णेय तथा निशा महापात्रा थीं, जिन्होंने बखूबी अपनी भूमिका को निभाया।

एक दिन पूर्व मेहंदी प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया, जिसमें महिलाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। ससुराल गेंदा फूल थीम पर एक फन गेम पासिंग द पार्सल तथा एक अन्य खेल हुआ जिसका महिलाओं ने खूब आनंद उठाया। मेहंदी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर जोंसी सोनी, द्वितीय स्थान पर पूर्णिमा पांडेय तथा तृतीय स्थान पर शालिनी श्रीवास्तव रही। लेडी इन ग्रीन प्रतियोगिता में श्रीमती नीलिमा निकुंज विजेता रही। तीज क्वीन प्रतियोगिता में सेकंड रनर अप वंदना बी कुमार, फर्स्ट रनर पूर्णिमा पांडेय रही।

शालिनी श्रीवास्तव को तीज क्वीन के किताब से नवाज़ा गया। कार्यक्रम की शुरुआत सचिव कविता श्रीमाली ने मुख्य अतिथियों के स्वागत से की तथा समापन संयुक्त सचिव तूलिका श्रीवास्तव के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ। खुशबू सरावगी ने संचालन किया। कल्चरल सचिव मेनका अरोड़ा तथा संयुक्त कल्चरल सचिव वैष्णवी कार्तिक ने सभी रंगारंग कार्यक्रम के जिम्मेदारी बखूबी निभाई। कार्यक्रम में वर्किंग टीम की सदस्याएं विभा सिंह, सविता चौबे, रजनी रुंगटा तथा सीमा बियाला उपस्थित रहीं।

छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को लेकर शिक्षकों को दिया प्रशिक्षण

सोनभद्र। मुख्य चिकित्साधिकारी अश्वनी कुमार ने कहाकि बच्चों में मानसिक तनाव के चलते मानसिक बीमारियां बढ़ रही है, और अब बच्चें भी आत्महत्या जैसे कदम उठा रहे है, उन्हे ही रोकने के लिए राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के अन्तर्गत अध्यापकों को विशेष प्रशिक्षण दिया गया, सोमवार को कार्यालय मुख्य चिकित्साधिकारी सभागार में जिला विद्यालय निरीक्षक द्वारा चयनित जनपद के 24 हाईस्कूल एवं इण्टरमिडिएट कालेजों के शिक्षकों को छात्रों में मानसिक रोग के बारे में बताया गया। प्रशिक्षण की अध्यक्षता कर रहे मुख्य चिकित्साधिकारी ने कहा कि बच्चों में मानसिक एवं शारिरिक स्वास्थ्य एक दुसरे के पूरक है, मानसिक लक्षणों में मन उदास होना, पश्चाताप , उलझन व घबराहट, पढ़ाई में मन न लगना, स्कूल में अक्सर अनुपस्थित रहना, अक्सर अपने सहपाठियों के साथ मार-पिट करना, अपने सहपाठियों के वस्तुएं चुराना, स्कूल में समायोजन की समस्या, ध्यान केन्द्रित करने की समस्या, होम वर्क को पूरा न करना, अकेले रहना, एक शब्द या वाक्य को बार-बार दोहराना, अक्षर को पहचानने में परेशानी, नशे की लत इत्यादि मानसिक समस्याओं के लक्षण हो सकते है। वर्तमान में मोबाइल फोन का बढ़ता दुरूपयोग, पारिवारिक कलह, मनचाही वस्तुओं का न मिलना, अभिभावकों की अत्यधिक अपेक्षाएं, परिवार के बड़े लोगों का साथ न मिलना तथा परीक्षा के उपरान्त छात्रों के मशां अनुरूप परिणाम न आना भी कई मानसिक समस्याओं को जन्म दे रहा है। बच्चों के मानसिक समस्याओं कि उपचार काउंसलिंग हेतु मानसिक स्वास्थ्य टीम स्कूलों मे भ्रमण कर मानसिक समस्याओं से ग्रसित छात्रों का पहचान किया जा रहा है मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने बताया की मानसिक समस्याओं के उपचार काउंसलिंग हेतु भारत सरकार द्वारा टेली मानस नंबर-14416 टोल फ्री जारी किया गया है।

विजयी प्रत्याशियों को शपथ दिलाकर दायित्यों का कराया गया बोध

संवाददाता। बीजपुर, सोनभद्र

शिवम संकल्प इंटर मीडिएट कॉलेज बकरिहवां में चुनाव प्रक्रिया का पूर्णत: पालन करते हुए निर्वाचन प्रभारी विद्यालय के वरिष्ठ शिक्षक प्रहलाद राम तिवारी, सुरेंद्र दुबे व रविन्द्र दुबे तथा बुथ प्रभारी उमेश कुमार दुबे के देख रेख में चुनाव सम्पन्न किया गया था। जिसका परिणाम मंगलवार को घोषित होने पर विद्यालय के प्रधानाचार्य राम प्रकाश पाण्डेय ने विजयी प्रत्याशियों को शपथ दिलाकर विद्यार्थियों के दायित्यों का बोध कराया।

उन्होंने कहा कि प्रारंभिक तौर पर नेतृत्व करने की क्षमता विद्यालय से ही प्रारंभ होती है। शपथ ग्रहण के पूर्व चुनाव हेतु कुल आठ पदों के लिए विद्यार्थियों ने नामांकन किया था जिसमें प्रमुख छात्र-छात्रा का खिताब 12 वीं विज्ञान वर्ग का छात्र अंकित जायसवाल ने 170 मत व 12 वीं कला वर्ग की छात्रा ममता प्रजापति ने 93 मत पाकर हासिल किया। इसी क्रम में अनुशासन प्रभारी के लिए छात्रों में 152 मत पाने वाले 11वीं विज्ञान वर्ग के छात्र प्रवीण कुमार व 202 मत पाने वाली इसी कक्षा व वर्ग की छात्रा आंचल तिवारी को विजयी घोषित किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रभारी हेतु छात्रों में 60 मत पाकर 11वीं कला वर्ग के दीपक कुमार व छात्राओं में 96 मत पाने वाली 11वीं विज्ञान वर्ग की छात्रा ज्योति दुबे को विजेता घोषित किया गया। स्वछता प्रभारी के लिए छात्रों में 100 मत पाने वाले कक्षा 11 कला वर्ग के शिवानंद को एवं छात्राओं में 154 मत हासिल करने वाली कक्षा 11 विज्ञान वर्ग की छात्रा दिव्या दुबे को विजेता घोषित किया गया। कार्यक्रम का संचालन सीसीए कोऑर्डिनेटर दीपक कुमार यादव ने किया। इस अवसर पर विद्यालय के शिक्षक, शिक्षिकाएं और विद्यार्थी आदि उपस्थित रहे।

किसान के साथ 50 हजार की हुई टप्पेबाजी

चंदौली। मुगलसराय कोतवाली क्षेत्र के बैंक ऑफ इंडिया के बाहर एक किसान से 50 हजार रुपए की टप्पेबाजी का मामला सामने आया है। बैंक से पैसे निकालने के दौरान किसान से दो लोगों ने इस घटना को अंजाम दिया है। पीड़ित किसान मुग़लसराय कोतवाली पहुँचकर मामले में अपनी शिकायत दर्ज कराई है। वहीं पुलिस मामले की जांच में जुट गई है। किशोरी लाल ने एक लाख रुपए में रेहन (खेत का एक वर्ष का किराया) पर खेत तय किया था। जिसके लिए 50 हजार रुपए कम पड़ रहे थें। किशोरी लाल ने मंगलवार को अपने खाते से पैसा निकालने के लिए बैंक ऑफ इंडिया पहुँचे। जहां उन्होंने 50 हजार रुपए निकाल लिए। पैसे मिलने के दौरान किशोरी लाल से दो लोग मिले। जिन्होंने पेन मांगने के नाम पर किशोरी लाल से बात करना प्रारंभ किया। उन्हें अपने साथ बैंक से लेकर बाहर आए। वहीं दोनों टप्पेबाजों ने अपने बातों ही बातों में उनसे झोला ले लिया। इस दौरान उन्होंने अपने पैसे अपने साथ लिए झोले में रख लिए।

क्विक न्यूज

छात्रवृत्ति कार्यशाला का हुआ आयोजन

सोनभद्र। मुख्य विकास अधिकारी सौरभ गंगवार की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में चालू वित्तीय वर्ष शैक्षिक सत्र 2024-25 में छात्रवृत्ति एवं शुल्क प्रतिपूर्ति योजनान्तर्गत जारी छात्रवृत्ति समय सारिणी एवं बैंकिंग एन0पी0सी0आई0 नयी गाईडलाइन्स के अनुसार आनलाईन आवेदन से लेकर वितरण तक की कार्यवाही में आ रही कठिनाईयो के सम्बन्ध में जनपद के समस्त पूर्वदशम दशमोत्तर शिक्षण संस्थानो के प्राचार्य प्रधानाचार्यों के साथ छात्रवृत्ति कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस दौरान मुख्य विकास अधिकारी ने कहा कि पूर्वदशम एवं दशमोत्तर छात्रवृत्ति व शुल्क प्रतिपूर्ति योजनान्तर्गत छात्र छात्राओं द्वारा किये गये छात्रवृत्ति आवेदन पत्रों एवं नया शासनादेश में आधार पेमेन्ट ब्रिज प्रणाली के माध्यम से छात्र के आधार सीडेड बचत बैंक खाते में सीधे धनराशि अन्तरित किये जाने का प्रावधान है, जिसके लिए छात्र छात्राओं को आधार सीडेड बैंक खाते को एन0पी0सी0आई0 से मैपिंग कराने आदि के सम्बन्ध में जानकारी दी गयी, उन्होंने कहा कि निर्देशो एवं आवेदन पत्रों में प्रगति लाये जाने से सम्बन्धित शिक्षण संस्थान स्तर से धीमी गति से डाटा अग्रसारण होने की स्थिति में जनपद के समस्त पूर्वदशम दशमोत्तर शिक्षण संस्थानो को प्राचार्य प्रधानाचार्य छात्रवृत्ति नोडल एवं छात्रवृत्ति एवं शुल्क प्रतिपूर्ति से सम्बन्धित समस्त कल्याण विभाग एवं जिला अग्रणी प्रबन्धक लीड बैंक के साथ कार्यशाला बैठक का आयोजन हो रहा है।

लोगों में पुस्तकों के प्रति स्वयं पैदा होती है जिज्ञासा: खरे

प्रयागराज। हर साल नौ अगस्त को नेशनल बुक लवर्स डे मनाया जाता है ताकि लोगों के मन में सीखने और पढ़ने का सुकून और पुस्तकों के प्रति जिज्ञासा पैदा हो। यह पुस्तक प्रेमियों को अपनी पसंदीदा पुस्तकों में डूबने नई नई चीजों के बारे में जानने और साहित्य के प्रति अपने जुनून को दूसरों के साथ साझा करने का मौका देता है। यह दिन पढ़ने के महत्व और मानसिक शारीरिक और भावनात्मक स्वास्थ्य पर इसके प्रभाव पर रोशनी डालता है। इस खास दिन के मौके पर जी टीवी के शो कुंडली भाग्य की श्रद्धा आर्य कुमकुम भाग्य की राची शर्मा प्यार का पहला नाम राधा मोहन के मनित जौरा और भाग्य लक्ष्मी की ऐश्वर्या खरे सहित जी टीवी के कलाकारों ने किताबों और पढ़ने के अपने शौक के बारे में दिलचस्प बातें बताईं। कुंडली भाग्य में प्रीता का रोल निभा रहीं श्रद्धा आर्य बताती हैं 'जब भी मेरे पास खाली वक्त होता है तब मुझे एक अच्छी किताब पढ़ना अच्छा लगता है। भाग्य लक्ष्मी में लक्ष्मी के रोल में नजर आ रहीं ऐश्वर्या खरे ने कहा जब मैं छोटी थी तो मुझे किताबें पढ़ना पसंद नहीं था। कुमकुम भाग्य में पूर्वी का रोल निभा रहीं राची शर्मा ने कहा किताबें पढ़कर मुझे सुकून मिलता है और ये खुशी और मुश्किल दोनों ही पलों में मेरी मार्गदर्शक रही हैं।

अक्षयवट, पातालपुरी, सरस्वती कूप तथा लेटे हनुमान मंदिर का होगा सौंदर्यीकरण

प्रयागराज। आगामी महाकुंभ की भव्यता को बढ़ाने तथा आने वाले श्रद्धालुओं के अक्षयवट पातालपुरी सरस्वती कूप तथा लेटे हुए हनुमान मंदिर के दर्शन के अनुभव को और सुगम बनाने के दृष्टिगत उक्त सभी स्थलों पर कराए जा रहे सौंदर्यीकरण के कार्यों का निरीक्षण मंगलवार को मेला प्रशासन तथा पुलिस प्रशासन के अधिकारियों ने संयुक्त रूप से किया। सर्वप्रथम सेना के अधिकारियों की देख रेख में तथा स्मार्ट सिटी से वित्तपोषित अक्षयवट पातालपुरी एवं सरस्वती कूप कॉरिडोर का निरीक्षण अधिकारियों ने किया।

निरीक्षण करते हुए अधिकारियों ने वहां पर कराये जा रहे लैंडस्कैपिंग एवं सौंदर्यीकरण के कार्यों को देखा। इसके बाद अक्षय वट के आगे जोधाबाई द्वार के पास के स्थान को जोधा वाटिका के रूप में विकसित करने हेतु कराए जा रहे कार्यों को

देखा। उक्त स्थान पर श्रीकृष्ण की एक भव्य प्रतिमा लगाते हुए लैंडस्केपिंग एवं ग्रीनरी विकसित करने का कार्य कराया जा रहा है। इसी क्रम में पातालपुरी मंदिर के ऊपर एवं अन्दर के हिस्से तथा सरस्वती कूप के सौंदर्यीकरण के कार्यों का भी निरीक्षण किया गया।

सभी कार्य पूर्ण होने के पश्चात इन्हें श्रद्धालुओं के लिए कुंभ से पहले ही खोलने की योजना है। अधिकारियों ने हनुमान मंदिर कॉरिडोर बनाने के दृष्टिगत प्रस्तावित कार्यों के लेआउट को भी देखा तथा मंदिर प्रांगण जाकर वहां पर सर्कुलेटिंग एरिया बढ़ाने एवं सौंदर्यीकरण करने हेतु प्रस्तावित कार्यों को विस्तार पूर्वक समझा। आने वाली भीड़ के बेहतर प्रबन्धन हेतु प्रवेश एवं निकासी मार्गों पर किन किन तरह की सुविधाएं उपलब्ध करानी है उस पर भी मंथन किया।

निरीक्षण में एडीजी ज़ोन भानु भास्कर मंडलायुक्त विजय विश्वास पंत पुलिस आयुक्त तरुण गाबा कुंभ मेला अधिकारी विजय किरण आनंद पीडीए के उपाध्यक्ष अरविंद कुमार चौहान समेत तमाम अधिकारी उपस्थित रहे।

कैम्प लगाकर किसानों को बीज मिनी किट का वितरण

मड़िहान, मिर्जापुर। विकास खण्ड पटेहरा कलां के कृषि बीज भंडार के द्वारा कृषि विभाग उत्तर प्रदेश के निर्देशानुसार ग्राम अमोइ में राम नगीना सिंह पटेल कृषि प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड पर कैंप लगाकर किसानों को किया गया बीज मिनी किट का वितरण। जानकारी के अनुसार मंगलवार को ग्राम अमोइ मड़िहान मिर्जापुर राम नगीना सिंह पटेल फार्मर प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड पर कृषि विभाग उत्तर प्रदेश के तत्वावधान में कैंप लगाकर सम्मानित किसानों को मिनी बीज किट का वितरण, किया गया।सरकार के मनसूबे के अनुसार मोटे अन्नों के पैदावार को बढ़ाने के उपलक्ष्य में मोटे अनाज बाजरा, सामा,ज्वार, आदि मोटे अन्नो के मिनि किटों को किसानों में वितरण किया गया। वितरण के ,समय राम नगीना सिंह पटेल फार्मर प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड के प्रोफेसर राजन सिंह पटेल, पूर्व प्रमुख दिनेश सिंह, पूर्व पंचायत सदस्य श्रवण सिंह पटेल, कृषि एडीओ अनूज पटेल, आदि मौजूद रहे।

पुलिस अधीक्षक ने 29 उप निरीक्षकों की तैतानी में किया फेरबदल

गाजीपुर। जनपद के पुलिस अधीक्षक ने 29 एसआई का स्थानांतरण कर दिया है। जिसमे एसआई मनोज कुमार कोतवाली से कासिमाबाद, एसआई रामअवध प्रजापति यूपी 112 से थाना कोतवाली, एसआई विजय बहादुर थाना कोतवाली से थाना जमानियां, एसआई लालमणि पाल यूपी 112 से थाना कोतवाली, एसआई सत्यनारायण शुक्ला कोतवाली से दिलदारनगर, एसआई राजित राम करंडा से दिलदारनगर, एसआई प्रदीप कुमार सिंह थाना जंगीपुर से थाना भांवरकोल, एसआई इंद्रजीत जंगीपुर से मुहम्मदाबाद, एसआई हरिशचंद्र पांडेय यूपी 112 से थाना जंगीपुर, एसआई कृष्ण कुमार पांडेय रामपुर माझा से बरेसर, राकेश कुमार यादव को रामपुर माझा भेजा गया है। रुस्तम खां भुडकुड़ा से बरेसर, प्रमोद कुमार सिंह को भुड़कुड़ा भेजा गया है। एसआई अनिल कुमार मिश्रा को नंदगंज से भांवरकोल, एसआई दयाशंकर सिंह नंदग्रंज से करीमुद्दीनपुर, एसआई किफायतुल्लाह यूपी 112 से नंदगंज, एसआई शाहिद सिद्दीकी शादियाबाद से करीमुद्दीनपुर, एसआई उदय सिंह यूपी 112 से शादियाबाद, होरिल यादव दुल्लहपुर से थाना मुहम्मदाबाद, श्रीमन नारायण पाठक यूपी 112 से दुल्लहपुर, एसआई मईयादीन सैदपुर से मुहम्मदाबाद, एसआई विद्याधर तिवारी यूपी 112 से सैदपुर, एसआई रुपचंद सादात से बहरियाबाद, एसआई बलवंता खानपुर से बहरियाबाद, एसआई गुलाब चंद यूपी 112 से खानपुर, एसआई वीरेंद्र राय यूपी 112 से थाना नोनहरा, एसआई हनिफ खां यूपी 112 से बहरियाबाद, एसआई सुभाष चंद पांडेय यूपी 112 से नोनहरा, एसआई धनकेश्वर प्रसाद यूपी 112 से थाना नगसर भेजा गया है।

सीएम योगी के दौरे को लेकर डीएम ने किया निरीक्षण

अंबेडकर नगर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के 7 अगस्त को प्रस्तावित जनपद अंबेडकर नगर भ्रमण कार्यक्रम के दृष्टिगत जिलाधिकारी अविनाश सिंह ने कलेक्ट्रेट परिषद में विभिन्न कार्यक्रम स्थलों का जायजा लिया एवं संबंधित विभाग के अधिकारी, कर्मचारियों को निर्देशित किया कि समस्त तैयारी को ससमय पूर्ण कर लिया जाए । इसमें किसी प्रकार की कोई लापरवाही न होने पाए। इस दौरान जिलाधिकारी द्वारा सर्किट हाउस तथा कलेक्ट्रेट परिसर के साथ-साथ कलेक्ट्रेट में लगाई जा रही विभिन्न विभागों द्वारा संचालित जन कल्याणकारी योजनाओं की प्रदर्शनी,स्टॉल का भी अवलोकन किया गया तथा संबंधित विभागीय अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए।

विद्यालय में बच्चों ने निकाली शिव जी की कावड़ यात्रा

मीरजापुर। श्रावण मास शिवजी को समर्पित महीना होता है, इस महीने में हर तरफ उत्साह, उमंग, हरियाली प्रसन्नता , तन एवं मन को ठंडक प्रदान करने वाला जल यह सभी शिव जी के पृथ्वी आगमन पर ही संभव होता है। इस पवित्र मास की पावन कावड़ यात्रा देखते ही बनती है ।सभी शिव भक्ति में लीन हो जाते हैं । इसी कड़ी में डैफोडिल्स पब्लिक स्कूल के नन्हे मुन्ने छात्रों के द्वारा कावड़ यात्रा निकाली गई एवं बोल-बम के नारों से विद्यालय गुंजायमान हो उठा।बच्चों ने अर्धनारीश्वर के रूप को धारण किया। ऐसा लगा कि साक्षात पृथ्वी पर शिव का आगमन हो रहा हो । पूरा माहौल शिवमय हो गया था । भक्तिमय कार्यक्रम आयोजित किया गया।विद्यालय की प्रधानाचार्या महोदया व शिक्षक गण के नेतृत्व में नर्सरी, एलकेजी यूकेजी के बच्चों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया।

बालिकाओं में बढ़ रहा सर्वाइकल कैंसर: डॉ अर्पित

●डॉ अर्पित बंसल ने एमपीवीएम में छात्राओं को किया जागरूक

●बच्चों व अभिभावकों को इसके प्रति जागरूक होना होगा: अल्पना डे

संवाददाता। प्रयागराज

बालिकाओं में सर्वाइकल कैंसर बड़ी तेजी से बढ़ रहा है इसके लिए बालिकाओं को जागरूक रहने की जरूरत है। यह बातें डा अर्पित बंसल ने मंगलवार को महर्षि पतंजलि विद्या मंदिर के विशाल सभागार में आठवीं और नौवीं कक्षा की छात्राओं को जागरूक करते हुए कहीं। उन्होंने कहा कि लड़कियों के जीवन की बहुचर्चित समस्या सर्वाइकल कैंसर से संबंधित हैं। ऐसे में इसकी जानकारी होना जरूरी है। कहा कि बालिकाओं एवं महिलाओं के मध्य आजकल इस बीमारी की तादात बढ़ती ही जा रही है। कहा कि कैंसर कोशिकाओं के अवयव हम सबके शरीर में रहते हैं। किन्तु हमें उसे बढ़ने से बचाना होता है।

उसकी पहचान और निदान दोनों ही पक्षों पर हमारी सतर्कता जागरूकता अनिवार्य है। आज के प्रगतिशील युग में इस बीमारी से घबराने के बजाय उसके लक्षणों का ज्ञान एवं उपचार के क्रम को जानना ज्यादा जरूरी है। शरीर के किसी भी अंग पर यदि ट्यूमर है तो समय के रहते उसकी जांच होनी आवश्यक है। यहां तक कि कीमोथेरेपी और रेडियो थेरेपी के द्वारा भी कैंसर का इलाज बहुत हद तक सम्भव है।

बशर्ते उसकी जांच समय से हो जाए। उन्होंने भिन्न भिन्न प्रकार की वैक्सीन और इंजेक्शन की जानकारी दी। जो बहुत महंगी नहीं है। जिसके प्रयोग से हम स्वस्थ हो सकते हैं। कहा कि इस बीमारी के फैलने में थोड़ा समय लगता है। जितनी जल्दी हो सके उपचार के क्रम में लग जाना चाहिए। शरीर में जल की मात्रा का पर्याप्त होना।

60 से 70 प्रतिशत शरीर में जल की मात्रा हमेशा बनी रहे। इसके लिए खूब पानी पीना यहां तक कि प्यास लगी हो या न लगी हो पानी पीते रहना चाहिए। उन्होंने बताया कि भोजन का समय नियमित योगाभ्यास और व्यायाम अति आवश्यक है। साथ ही यदि हो सके तो तैराकी अवश्य करें ये क्रिया हमें बीमारी से दूर रखेंगी। कहा कि हमारे हाथों में है हमारा स्वस्थ जीवन हम स्वयं भी बचे व अपने परिवार एवं समाज को भी स्वस्थ रखने में पूरा सहयोग दे सकते हैं।

इस अवसर पर रोटरी क्लब प्रयागराज की अध्यक्ष डा राधा सक्सेना एवं सचिव नीरज चुग के साथ क्लब के वरिष्ठ सदस्य भी उपस्थित थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ वन्दना के साथ हुआ। जिसे विद्यालय की शिक्षिका अंशुल मालवीय ने गाया। विद्यालय की प्रधानाचार्या अल्पना डे ने डा अर्पित बंसल को तुलसी का पौधा भेंट किया। कार्यक्रम का संचालन शिक्षिका अम्बिका ने किया।

मिठाई कारीगर का शव नहर में उतराता देख मचा कोहराम

सकलडीहा, चन्दौली। कोतवाली क्षेत्र के लेहरा मडई गांव निवासी 32 वर्षीय शेखर यादव गांव के काली माता मंदिर का पुजारी है7 चंदौली में वह मिठाई के दुकान पर कारीगर है। सोमवार को शाम काम करने के बाद साइकिल से घर लौट रहा था । देर रात तक घर नहीं आने पर लोग परेशान थे। परिजनों ने रात भर खोजबीन किया। मंगलवार को सुबह 11 बजे करीब गांव के समीप सकलडीहा रजवाहा में शव बहता देख ग्रामीणों ने बाहर निकाला। शव का शिनाख्त होने पर हड़कंप मच गया । मौके पर पहुंची कोतवाली पुलिस शव को कब्जे में लेकर के पोस्टमार्टम की कार्रवाई में जुड़ गई है। घटना को लेकर परिजनों ने हत्या की आशंका जताया है।

लेहरा गांव के रामवृक्ष यादव के पांच पुत्र हैं राम बहोरी यादव ,ऋषि नारायण, राजन, उदय और शेखर यादव 32 वर्षीय शेखर यादव गांव का पुजारी भी है। वह चंदौली मिठाई की दुकान पर मीठा बनाने का काम करता है । कल शाम को काम करने के बाद साइकिल से घर वापस आ रहा था। लेट होने पर घर की महिलाओं ने फोन करने पर बताया कि दवा लेकर आ रहे है। लेकिन देर रात तक घर नहीं आने परिजन परेशान होकर रातभर खोजते रहे। सुबह 11 बजे सकलडीहा रजवाहा में बहता हुआ शव देख गांव के लोगों ने कूदकर बाहर निकला। इस दौरान काफी संख्या में लोगों को भीड़ जुड़ गई। परिजनों द्वारा शिनाख्त करने पर कोहराम मच गया।

सूचना पर पहुंची कोतवाली पुलिस शव को कब्जे में लेकर के पोस्टमार्टम कार्रवाई में जुट गई है 7 इस बाबत कोतवाल संजय कुमार सिंह ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है। पीएम रिपोर्ट आने पर ही स्थिति स्पष्ट हो पाएगा । पत्नी गुड़िया देवी पुत्र पवन पुत्री पायल सहित परिजनों का रोते-रोते बुरा हाल है।

101 टीबी मरीजों को डीएम की उपस्थिति में पोषण पोटली भेंट कर लिया गोद

मीरजापुर। राष्ट्रीय क्षय रोग उन्मूलन अभियान के तहत दिनांक 6 अगस्त 2024 को जनपद मिर्जापुर के सिटी क्लब सभागार में इटरनल ग्रेस ट्रस्ट द्वारा पूर्व की भांति इस बार भी 101 टीबी मरीजों को जिलाधिकारी श्रीमती प्रियंका निरंजन महोदया (मुख्य अतिथि) की उपस्थिति में पोषण पोटली भेट करते हुए गोद लेने का सराहनीय कार्य किया। कार्यक्रम के दौरान जिलाधिकारी महोदय द्वारा ट्रस्ट के उपरोक्त सराहनीय कार्य की प्रशंसा करते हुए सभागार में उपस्थित सभी मरीज से समय से दवा लेने व खानपान पर विशेष ध्यान रखने का सुझाव दिया, उन्होंने कहा कि क्षय रोग का लक्षण दिखने पर तत्काल बगैर शर्म और निराशा के जिले में मौजूद सभी सीएचसी/ पीएससी पर उपलब्ध नि:शुल्क जांच व इलाज सुविधा का लाभ उठाएं, जिससे कि 2025 तक हमारा देश टीबी मुक्त देश हो सके। जिला क्षय रोग अधिकारी डॉक्टर अनिल कुमार ओझा द्वारा अपने संबोधन में बताया गया कि टीबी के मरीजों को सभी जगह सुविधा नि:शुल्क दी जा रही है, यदि उन्हें किसी भी प्रकार की कहीं कोई समस्या होती है तो नि:संकोच वह मुझे या विभागीय कर्मचारियों को किसी भी टाइम सूचित कर सकते हैं। उनके द्वारा बताया गया कि टीबी मरीज को नि:क्षय पोषण योजना के तहत सरकार द्वारा पांच सौ रुपया प्रति माह, पूरे इलाज अवधि तक उनके खाते में देने का कार्य जारी है।

न्याय में देरी

सुधार जरूरी

भारत के प्रधान न्यायाधीश ने अदालतों में न्याय मिलने में देरी से पैदा निराशा को देखते हुए तत्काल सुधारों की आवश्यकता पर जोर दिया है। उन्होंने बहुत से लोगों द्वारा व्यक्त की जा रही चिन्ता का साझा किया है। भारतीय अदालतों में लगने वाले लंबे समय से जनता में भारी निराशा व्याप्त है जिससे 'न्यायिक प्रक्रिया' एक अवांछित परेशानी बन गई है। एक हालिया बयान में प्रधान न्यायाधीश जस्टिस डी.वाई. चंद्रचूड़ ने कहा, 'लोग अदालतों में चलने वाली लंबी कार्यवाहियों से परेशान हो गए हैं और प्रक्रिया अपने आप में दंड बन गई है।' यह कठोर टिप्पणी भारत की कानूनी व्यवस्था में लंबित मामलों के परेशान करने वाले मुद्दे को तत्काल संबोधित करने की आवश्यकता उजागर करती है। भारतीय न्यायपालिका में भारी संख्या में मुकदमे लंबित हैं। यह लंबे समय से जनता में व्याप्त निराशा तथा विधिक विश्लेषण का विषय बनी हुई है। भारत के प्रधान न्यायाधीश का हालिया बयान इस मुद्दे की गंभीरता रेखांकित करता है। इससे स्पष्ट होता है कि अदालतों में विलंब से न केवल न्यायिक प्रक्रिया बाधित होती है बल्कि कानून व्यवस्था में जनता का विश्वास भी घटता है। हालिया अनुमानों के अनुसार, भारतीय न्यायपालिका में विभिन्न स्तरों पर 40 मिलियन से अधिक मुकदमे लंबित हैं और वर्तमान गति के अनुसार इनको निपटाने में 300 साल लग सकते हैं। इस भारी संख्या में दीवानी, आपराधिक और प्रशासनिक मामले शामिल हैं जिनमें से अनेक सालों या यहां तक कि दशकों से लंबित हैं।

ये लंबित मुकदमे एक बाधा पैदा करते हैं जिससे समय पर न्याय नहीं मिल पाता है, कानूनी लड़ाई लंबी खिंचती जाती है तथा वादी-प्रतिवादियों का खर्च बढ़ता जाता है। बहुत अधिक विलंब से न्यायपालिका पर विश्वास घट सकता है क्योंकि लोग कानूनी प्रक्रिया को धीमी और अक्षम मानने लगते हैं। अदालतों में बिना समाधान के मुकदमे लंबित रहने के कारण लोग न्यायिक व्यवस्था की प्रभावशीलता और विश्वसनीयता पर संदेह करने लगते हैं। कानूनी प्रक्रिया लंबी खिंचने के भय से बहुत से लोग अदालतों के माध्यम से न्याय की मांग करने से बचते हैं। यह अनिच्छा खासकर ऐसे लोगों में दिखती है जो लंबी मुकदमेबाजी का खर्च नहीं उठा सकते हैं या जो व्यक्तिगत या वित्तीय बाधाओं के कारण जल्दी समाधान चाहते हैं। असाधारण विलंब के कारण लोग विकल्प तलाशने लगते हैं तथा अक्सर विवादों के समाधान के 'न्यायेत्तर' तरीके खोजते हैं। इसके अलावा बिजनेसों और निवेशकों को अनुबंध लागू करने तथा विवादों के समाधान के लिए जीवन्त विधि व्यवस्था की आवश्यकता है। न्यायिक प्रणाली के प्रति निष्ठा तथा उसकी प्रभावशीलता बनाए रखने के लिए मुकदमे निपटाने में विलंब दूर करना जरूरी है। इससे सुनिश्चित होगा कि न्याय तक सभी नागरिकों की समय पर पहुंच हो। भारत में लंबित मुकदमों के पीछे अनेक कारण हैं। बड़ी संख्या में न्यायिक पद खाली हैं। भारत में कानूनी प्रक्रियायें अत्यधिक जटिल हैं जो अक्सर अनावश्यक विलंब का कारण बनती हैं। अनेक अदालतों में आवश्यक ढांचागत संरचना तथा तकनीकी समर्थन की कमी है। लेकिन विलंब का सबसे बड़ा कारण बार-बार कार्यवाही रुकना है जिसके अक्सर बहुत मामूली कारण होते हैं। बालीवुड फिल्म का संवाद 'तारीख पे तारीख' इस पर सटीक बैठता है। हालांकि कुछ मुद्दों को 'भारतीय न्याय संहिता' के माध्यम से निपटाने का प्रयास किया गया है, पर बहुत कुछ करना अभी बाकी है। कहावत है कि 'न्याय में विलंब न्याय से इनकार है।' न्याय व्यवस्था को वर्तमान समय में तेजी से बदलते समाज की आवश्यकतायें पूरी करनी चाहिए।

जापान की नई रक्षा रणनीति

दुनिया इस समय हिरोशिमा व नागासाकी पर 79 वर्ष पहले हुए आणविक हमलों की याद कर रही है। ऐसे समय जापान अपनी रक्षा रणनीति में व्यापक परिवर्तन कर रहा है।

संतोष मैथ्यू
(लेखक, असोशियेट प्रोफेसर हैं)

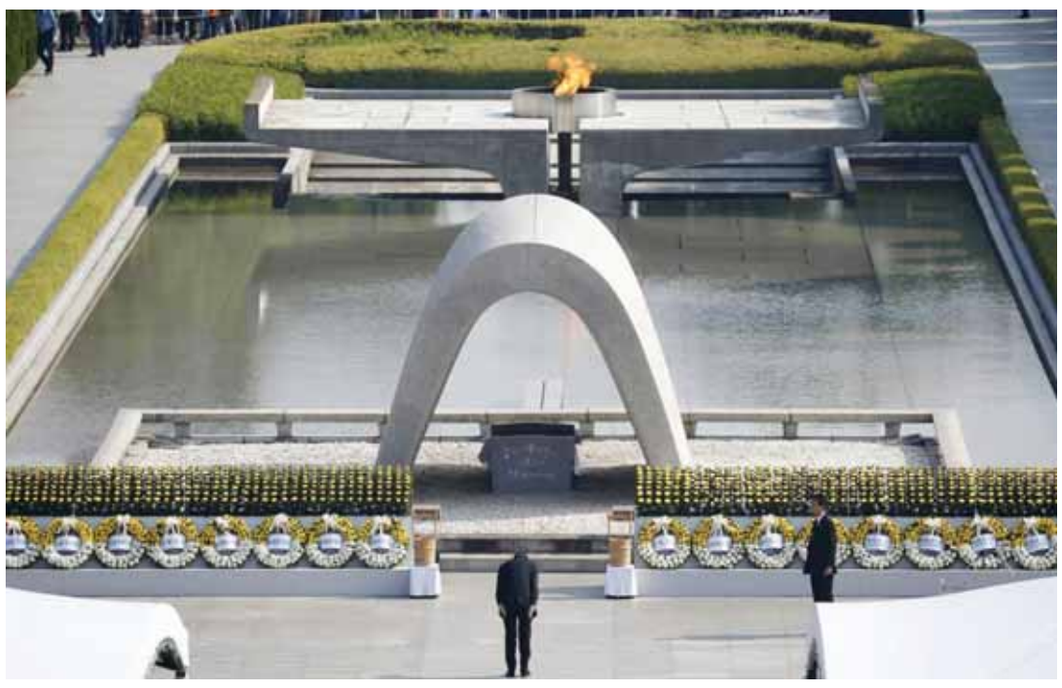

दुनिया इस समय हिरोशिमा व नागासाकी पर 79 वर्ष पहले हुए आणविक हमलों की याद कर रही है। इस महत्वपूर्ण मोड़ पर जापान अपनी रक्षा रणनीति में व्यापक परिवर्तन कर रहा है। 6 और 9 अगस्त, 1945 को जापान के हिरोशिमा और नागासाकी शहर संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा गिराए गए अणु बमों से नष्ट हो गए थे। यह द्वितीय विश्वयुद्ध तथा युद्धों के इतिहास में परिवर्तनकारी मोड़ था। इस बमबारी से दसियों हजार लोग तत्काल मर गए थे, जबकि विकिरण के कारण बीमारियों व घावों से मरने वाले लोगों की कुल संख्या 200,000 से अधिक थी। पहले हिरोशिमा पर 'लिटिल ब्वाय' कहे जाने वाले अणु बम से हमला किया गया जिससे ज्यादातर शहर नष्ट हो गया।

इसके तीन दिन बाद नागासाकी पर 'फैट मैन' अणु बम गिराया गया। इस असाधारण विनाश और मानव जीवन की क्षति के कारण जापान ने 15 अगस्त, 1945 को आत्मसमर्पण कर दिया और प्रभावी रूप से द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त हो गया। इन घटनाओं से 'नाभिकीय युग' की शुरुआत हुई जिसने आणविक आयुधों की भयानक विनाशकारी शक्ति स्पष्ट की तथा नाभिकीय नैतिकता, युद्ध और निशस्त्रीकरण पर दुनिया भर में बहस छेड़ दी। इन आणविक बम हमलों ने नाभिकीय टकराव के विनाशकारी परिणामों को उजागर किया। इसके साथ ही आणविक बमों के प्रयोग से दुनिया भर में शांति और अंतरराष्ट्रीय सहयोग का महत्व भी उजागर हुआ।

सिविलियनों की जान लेने वाले इन विनाशकारी नाभिकीय हमलों ने पूरे देश की सामूहिक चेतना पर अमिट छाप छोड़ी और एक 'शांतिवादी संविधान' की नीव रखी। इन भयानक घटनाओं के बाद जापान ने 'रक्षात्मक तटस्थता' की नीति अपनाई जिसे संविधान के अनुच्छेद 9 में शामिल किया गया। इसके अनुसार युद्ध को अस्वीकार करते हुए युद्ध के लिए रक्षा बलों के रखरखाव पर प्रतिबंध लगाया गया। शांतिवाद के प्रति यह प्रतिबद्धता जापान की पहचान का प्रमुख बिंदु बन गई। इससे उसे विश्व समुदाय में बहुत सम्मान प्राप्त हुआ तथा उसे कई बार नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। लेकिन वर्तमान समय में जब दुनिया भू-राजनीतिक खतरों का लगातार सामना कर रही है, जापान ने अपनी रक्षा रणनीति में महत्वपूर्ण परिवर्तन की घोषणा की है। जापान सरकार ने अपनी जीडीपी का 2 प्रतिशत रक्षा पर खर्च करने का निर्णय किया है जो लंबे समय से चले आ रहे शांतिवादी दृष्टिकोण में व्यापक परिवर्तन है। उत्तर कोरिया और चीन से बढ़ते खतरों को देखते हुए इस परिवर्तन से जापान अब वैश्विक स्तर पर सऊदी अरब के बाद दुनिया में दूसरा सबसे बड़ा हथियार आयातक बन गया है। जापान की नई राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति क्षेत्र में बढ़ते तनावों की प्रतिक्रिया है। उत्तर कोरिया ने पहले ही ऐसी मिसाइलों का परीक्षण किया है जो जापानी क्षेत्र तक पहुंचने में सक्षम हैं। इसके साथ ही दक्षिण चीन सागर में चीन की बढ़ती आक्रामकता और उसकी व्यापक क्षेत्रीय महत्वाकांक्षाओं ने टोकियों में खतरे की घंटियां बजा दी हैं।

इन परिवर्तनों ने जापान को द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अपनाई अपनी रक्षा रणनीति पर पुनर्विचार के लिए मजबूर किया है। जापान के शांतिवादी संविधान की समीक्षा के मजबूत पैरोकार पूर्व प्रधानमंत्री शिंजो आबे ने तर्क दिया था कि क्षेत्रीय खतरों का मुकाबला करने के लिए किसी देश को पहले अपनी सैनिक क्षमतायें मजबूत करनी चाहिए। हालांकि, आबे के कार्यकाल में कुछ विधायी परिवर्तन कर मझोले दर्जे के 'आत्मरक्षा बल' के गठन की अनुमति दी गई, पर जनता के व्यापक विरोध के कारण अनुच्छेद 9 को पूरी तरह नहीं बदला जा सका। लेकिन इसके बावजूद मजबूत जापानी सेना का दृष्टिकोण लगातार वर्तमान नीतियों को प्रभावित कर रहा है।

'हाउस आफ कौंसिलिर्स' व 'हाउस आफ रिप्रेजेंटेटिव्स' में रह चुके वर्तमान प्रधानमंत्री फुमियो किशिदा ने अपना नया रक्षा एजेंडा सामने रखा है। लेकिन जनता की भावनायें मोटेतौर से इन परिवर्तनों के खिलाफ बनी हुई हैं। 'क्योदो न्यूज़ एजेंसी' के एक सर्वेक्षण के अनुसार देश की 80 प्रतिशत जनसंख्या संविधान संशोधन के प्रयासों का विरोध कर रही है। इससे जापानी जनता में शांतिवाद के प्रति गहरी प्रतिबद्धता प्रकट होती है। हिरोशिमा और नागासाकी की वर्षगांठ पर रक्षा नीतियों में परिवर्तन का निर्णय खासतौर से महत्वपूर्ण है। नाभिकीय युद्ध की भयानक यादें युद्ध की विभीषिका तथा शांति के महत्व को याद दिलाती हैं। हिरोशिमा और नागासाकी का विनाश न केवल एक सैनिक रणनीति, बल्कि अभूतपूर्व मानवीय त्रासदी भी थी। अमेरिका ने युद्ध को समाप्त करने के नाम पर इन आणविक बम हमलों को सही ठहराया था, पर इन क्रूर वैज्ञानिक प्रयोगों ने अवर्णनीय पीड़ा तथा दीर्घकालीन परिणामों को जन्म दिया था।

अणु बमों के हमलों ने जापान को एक शांति-उन्मुख संविधान अपनाने को मजबूर किया, जिसमें टकराव पर निशस्त्रीकरण और संवाद को महत्व दिया गया था। अनुच्छेद 9 उम्मीद की किरण तथा जापान की प्रतिबद्धता का प्रतीक है जो सुनिश्चित करता है कि ऐसा विनाश फिर कभी नहीं होगा। ऐसे में नीतिगत परिवर्तन जापान में शांतिवाद के भविष्य पर महत्वपूर्ण सवाल खड़े करता है। इसके साथ ही वह अंतरराष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा में जापान की भूमिका पर भी सवाल पैदा करता है। जापान द्वारा अपना रक्षा बजट बढ़ाने तथा अपनी सैनिक क्षमताओं का आधुनिकीकरण करने के साथ यह कदम एक जटिल व प्रतियोगी हथियारों की दौड़ शुरू कर सकता है। एक समय शांतिवाद की उम्मीद का किरण समझा जाने वाला देश अब स्वयं को एक दोराहे पर खड़ा पाता है। उसे शांति के प्रति अपनी ऐतिहासिक प्रतिबद्धता तथा लगातार बढ़ती समकालीन सुरक्षा चुनौतियों को संबोधित करने के बीच संतुलन स्थापित करना है। हिरोशिमा और नागासाकी की विरासत बनी हुई है। यह दुनिया को युद्ध, खासकर नाभिकीय युद्ध के विनाशकारी परिणामों के प्रति चेतावनी देते हुए शांति के स्थाई मूल्यों को आगे बढ़ाने की आवश्यकता रेखांकित करता है। अपनी नई रक्षा रणनीति पर आगे बढ़ते हुए जापान को अपने अतीत और वर्तमान को एकसाथ रख कर देखना होगा तथा यह सुनिश्चित करना होगा कि शांति और मानवता के सिद्धान्त उसकी राष्ट्रीय पहचान का प्रमुख अंग बने रहें। हिरोशिमा और नागासाकी की छाया में जापान की रक्षा नीति में परिवर्तन उसके इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय बनने जा रहा है। सारी दुनिया की नजर इस समय जापान पर है। वह देख रही है कि जापान लगातार बढ़ते अनिश्चित वैश्विक परिदृश्य में अपना भविष्य सुरक्षित रखते हुए शांति के प्रति प्रतिबद्धता कैसे बनाए रखता है।

हिरोशिमा और नागासाकी पर हुए भयानक अणु बम हमलों ने द्वितीय विश्व युद्ध में परिवर्तनकारी मोड़ पैदा किया था। इसके परिणामस्वरूप जापान ने आत्मसमर्पण कर दिया और युद्ध समाप्त हुआ। इन त्रासद घटनाओं ने जापान की राष्ट्रीय चेतना पर व्यापक प्रभाव डाला और उसे शांतिवाद के प्रति प्रतिबद्ध किया। इसे द्वितीय विश्व युद्ध के बाद बने जापानी संविधान में शामिल किया गया। लेकिन उत्तर कोरिया के मिसाइल परीक्षणों से बढ़ते भू-राजनीतिक खतरे तथा चीन की क्षेत्रीय महत्वाकांक्षाओं को देखते हुए वर्तमान समय में जापान के पास अपने 'शांतिवादी' दृष्टिकोण पर पुन: विचार करने के सिवा कोई और रास्ता नहीं है।

इस बदलते भू-राजनीतिक परिदृश्य तथा दुनिया में जारी युद्धों के कारण पैदा अस्थिरता से जापान को अपने शांतिवादी दृष्टिकोण पर पुन: विचार करना पड़ रहा है। इसके कारण जापान ने अपने रक्षा बजट में उल्लेखीय वृद्धि की है। जापान दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति है और वह अद्यतन तकनीक के मामले में भी किसी से पीछे नहीं है। ऐसे में जीडीपी का 2 प्रतिशत रक्षा पर खर्च करने वाला जापान जल्द ही एक महत्वपूर्ण सैनिक शक्ति बन जाएगा। लेकिन इसके बावजूद देश में शांति के प्रति दीर्घकालीन प्रतिबद्धता पर बहस हो रही है।

बांग्लादेश में उपद्रव भारत के लिए झटका

पारुल चंद्रा
(लेखक पेशे से पत्रकार हैं)

सोमवार को प्रधानमंत्री शेख हसीना को इस्तीफा देकर देश से भागने पर मजबूर होना पड़ा, लेकिन बांग्लादेशी प्रधानमंत्री शेख हसीना के हटने का जश्न मना रहे हैं, लेकिन उनका हटना भारत के लिए एक बड़ा झटका है। उनके प्रधानमंत्री रहते हुए न केवल नई दिल्ली-ढाका संबंध प्रगाढ़ हुए, बल्कि अवामी लीग की नेता भारत के सामरिक हितों के प्रति भी सजग रहीं। उन्होंने चीन के साथ संबंधों को संतुलित करते हुए भारत के सामरिक हितों को भी ध्यान में रखने की कोशिश की। उनके 15 साल के अखंड शासन के दौरान नई दिल्ली-ढाका संबंधों में स्थिरता और आपसी विश्वास दोनों ही रहे। लेकिन बांग्लादेश में सेना के कार्यभार संभालने और अंतरिम सरकार के कार्यभार संभालने के साथ ही भारत के लिए चिंता की बहुत बड़ी वजह है। एक तो यह कि पिछले 15 साल में शेख हसीना सरकार के साथ बहुत सहज कामकाजी संबंध बनाने के बाद अब उसे नई सरकार से निपटना होगा। दूसरे, उसे इस तथ्य से भी जूझना होगा कि अंतरिम सरकार के रहते हुए भी वास्तविक नियंत्रण सेना के पास ही रहेगा। तीसरे, अगर बांग्लादेश में नई सरकार बनाने के लिए चुनाव होते हैं तो भारत को एक बिल्कुल नए राजनीतिक ढांचे से निपटना होगा। भारत ने शेख हसीना के पीछे अपना पूरा जोर लगा दिया है, ऐसे में उसे विपक्षी दलों के साथ संबंध बनाने में बड़ी चुनौती का सामना करना पड़ सकता है।

अगर पाकिस्तान समर्थक बांग्लादेश नेशनल पार्टी (बीएनपी) सत्ता में लौटती है तो भारत भी मुश्किल में पड़ सकता है। इसने हाल ही में इंडिया आउट अभियान चलाकर बांग्लादेश में भारत विरोधी भावनाओं को भड़काया था, जो सौभाग्य से जल्दी ही खत्म हो गया। विपक्षी दल इन भावनाओं को फिर से हवा दे सकते हैं, खासकर यह देखते हुए कि नई दिल्ली की उनकी सरकार के साथ कितनी निकटता है।

दरअसल, नई दिल्ली के लिए ढाका के साथ संबंध शेख हसीना के तहत एक सोनाली अध्याय (स्वर्णिम अध्याय) रहे हैं, जिन्होंने नई दिल्ली की उम्मीदों पर खरा उतरते हुए महत्वपूर्ण तीस्ता जल बंटवारे समझौते को पूरा करने में भारत की अक्षमता को कम करके आंका। लेकिन नई सरकार के सत्ता में आने के बाद यह सब बदल सकता है। इसलिए, नई दिल्ली को अब एक मुश्किल कूटनीतिक स्थिति से चतुराई से निपटना होगा। ऐसा करने के अलावा उसके पास कोई विकल्प नहीं है, क्योंकि बांग्लादेश की स्थिरता में उसके आर्थिक से लेकर सामरिक तक सभी महत्वपूर्ण दांव लगे हुए हैं, एक ऐसे देश में जिसके साथ उसकी 4,096 किलोमीटर लंबी सीमा लगती है।

यह भी उम्मीद की जाएगी कि बांग्लादेश में स्थिति जल्द ही स्थिर हो जाएगी, क्योंकि यह अच्छी तरह से पता है कि वहां लंबे समय तक अस्थिरता भारत के लिए गंभीर सुरक्षा और आर्थिक परिणाम हो सकती है। उदाहरण के लिए, नई दिल्ली की सुरक्षा चिंताओं को ध्यान में रखते हुए, शेख हसीना ने प्रधानमंत्री के रूप में अपने दूसरे कार्यकाल की शुरुआत में ही बांग्लादेशी क्षेत्र में शरण लिए हुए पूर्वोत्तर के उग्रवादियों पर नकेल कसी थी।

उनकी सरकार द्वारा पाकिस्तान समर्थक बीएनपी के साथ-साथ उसके सहयोगी जमात-उद-दावा को लगातार निशाना बनाए जाने से भी भारत के सुरक्षा हितों को मदद मिली। भारत के लिए उतनी ही चिंता की बात बांग्लादेश में हिफाजत-ए-इस्लाम जैसे अन्य कट्टरपंथी इस्लामी संगठनों का उदय है, जिसने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की यात्रा से पहले भारत विरोधी प्रदर्शन आयोजित किए थे। म्यांमार से भागकर बांग्लादेश में शरण लेने वाले दस लाख से अधिक रोहिंग्या शरणार्थी भी भारत के लिए सुरक्षा संबंधी चिंता का विषय रहे हैं। अवैध बांग्लादेशी प्रवासियों की एक बड़ी संख्या पहले से ही भारत में है। इसलिए भारत को अपने संकटग्रस्त देश से भागने के इच्छुक शरणार्थियों की और अधिक आमद की भी चिंता होगी। पूर्वोत्तर में पांच भारतीय राज्य बांग्लादेश की सीमा से लगे हुए हैं, ऐसे में इस तरह की कोई भी आमद इस क्षेत्र के लिए एक बड़ी सुरक्षा चुनौती बन सकती है।

इसके अलावा, वहां लंबे समय तक अशांति रहने से रेल संपर्क और समुद्री मार्ग का उपयोग करके बांग्लादेश के माध्यम से पूर्वोत्तर तक कनेक्टिविटी बढ़ाने के भारतीय प्रयासों को नुकसान हो सकता है। भारत लंबे समय से कमजोर सिलीगुड़ी कॉरिडोर को बायपास करने के लिए वैकल्पिक मार्गों की तलाश कर रहा है, जिसे अगर अवरुद्ध कर दिया जाता है तो यह पूरे पूर्वोत्तर तक भूमि पहुंच को काट सकता है। बांग्लादेश के माध्यम से पूर्वोत्तर तक छोटे मार्गों की मांग, जिससे माल की आवाजाही के लिए समय और लागत में कमी आएगी, को भी झटका लग सकता है। भूमि बंदरगाहों पर ट्रकों की आवाजाही ठप होने के बाद कोटा आंदोलन ने द्विपक्षीय व्यापार को पहले ही प्रभावित कर दिया है। हालाँकि अब सीमा पार व्यापार फिर से शुरू हो गया है, लेकिन दोनों तरफ़ से भारी आर्थिक नुकसान हुआ है। लंबे समय तक उथल-पुथल दोनों देशों के बीच व्यापारिक संबंधों को और ख़राब कर सकती है।

बांग्लादेश दक्षिण एशिया में भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है। वित्त वर्ष 2022-23 में, द्विपक्षीय व्यापार 15.9 बिलियन डॉलर था, हालाँकि यह भारत के पक्ष में भारी रूप से झुका हुआ है। भारत के लिए बहुत कुछ दांव पर लगा है क्योंकि उसका करीबी पड़ोसी अपने शासन और राजनीतिक परिदृश्य में कुछ बड़े बदलाव देख रहा है। इसका मतलब है कि उसे बांग्लादेश में नई व्यवस्था के प्रभारी व्यक्ति तक पहुँचने के लिए अपनी पूरी कूटनीतिक और राजनीतिक ताकत लगानी होगी।

आप की बात

मंदी का खतरा

दुनिया की सबसे बड़ी इकॉनमी अमेरिका और यूरोप की सबसे बड़ी इकॉनमी जर्मनी में एक बार फिर मंदी की आशंका मंडराने लगी है। अमेरिका में हाल में आए रोजगार के आंकड़े उम्मीदों के मुताबिक नहीं रहे हैं। इससे वहां एक बार फिर मंदी की आशंका पैदा हो गई है। इस कारण सोमवार को भारत समेत दुनिया भर के शेयर बाजारों में भारी गिरावट देखने को मिली। भारत की इकोनॉमी मजबूत होने के बावजूद शेयर बाजार में निवेशकों का कुछ ही घंटे में 10 लाख करोड रुपए डूब जाना दर्शाता है कि भारत भी संभावित विश्वव्यापी मंदी से अछूता रहने वाला नहीं है। भारत सरकार को समय रहते ही इन परिस्थितियों को देख कर सुरक्षात्मक व्यवस्था कर लेनी चाहिए। रुपये का भी लगभग प्रतिदिन गिरना कोई अच्छा संकेत नहीं है। दुनिया में मंदी के कारणों में विश्व अर्थव्यवस्था पर युद्धों के कारण मंडराता खतरा भी शामिल है। रूस-यूक्रेन युद्ध तथा पश्चिम एशिया में इस्त्राइल-हमास संघर्ष के कारण पहले से ही खाद्यान्नों, उर्वरकों, पेट्रोलियम उत्पादों, आदि की सप्लाई श्रृंखला प्रभावित हुई है। विड़बना है कि इन युद्धों के और विस्तार लेने का खतरा मंडरा रहा है। अमेरिकी राष्ट्रपति पद के दोनों उम्मीदवारों को अपनी भावी आर्थिक नीतियों के बारे में कुछ कहना चाहिए।

-सुभाष बुडावन वाला, रतलाम

शेख हसीना का भविष्य

इतिहास अपने आपको दोहराता है। बांग्लादेश और शेख हसीना के मामले में शायद यही हो रहा है। 15 अगस्त 1975 को जब भारत आज़ादी की 49 वीं वर्षगाँठ मना रहा था, उसी दिन बांग्लादेश की सेना ने बगावत कर बंग बंधु शेख मुजीबुर रहमान के लगभग पूरे परिवार की हत्या कर दी थी। शेख हसीना और उनकी बहन रेहाना उस समय यूरोप में थीं और नरसंहार से बच गईं। अब शेख हसीना ने विरोध के दबाव में न सिर्फ त्यागपत्र दिया बल्कि वे एक बार फिर भारत आने को मजबूर हुई हैं। पता नहीं वे यहाँ राजनीतिक शरण मांगेंगी या किसी यूरोपीय देश जाएंगी। अगस्त 1975 में वे सीधे भारत आयीं थीं और उनको दिल्ली के पंडारा रोड में शरण मिली थी। इंदिरा गांधी की सरकार ने हसीना को राजनीतिक शरण दी थी। वे अगले छह वर्षों तक पंडारा रोड स्थित घर में रहीं। क्या इस बार भी ऐसा होगा? भारत को लगता था कि हसीना ने अपने देश में मुस्लिम कट्टरवाद को काबू कर लिया है। लेकिन हसीना न केवल विफल रहीं, बल्कि हंगामी भीड़ द्वारा बंग बंधु मुजीबुर रहमान की मूर्तियां तोड़े जाने से वहां मुक्ति संग्राम की विरासत तथा भारत के सहयोग पर संशय की स्थिति है। सवाल है कि शेख हसीना का भविष्य कैसा होगा?

- जंग बहादुर सिंह, जमशेदपुर

धर्मांतरण पर कठोर कानून

उत्तर प्रदेश सरकार ने नए धर्मांतरण-विरोधी कानून में सख्त नियम बनाए हैं। इस पर कुछ तथाकथित बुद्धिजीवी सवाल खड़े कर रहे हैं। आजादी के बाद से ही सरकार की लापरवाही और अनदेखी के चलते बड़ी संख्या में गरीब और आदिवासी वर्ग के लोगों को मुफ्त सुविधाओं, शिक्षा और चिकित्सा के लालच में ईसाई व मुसलमान बनाने के कदम उठाए गए। विडंबना है कि प्रशासनिक व न्यायिक लापरवाही के कारण धर्म परिवर्तन के बावजूद ऐसे अनेक लोग जाति के नाम पर मिल रहे आरक्षण का भी भरपूर लाभ उठा रहे हैं। यह प्रवृत्ति अभी भी जारी है। मानव सेवा के लिए धर्मांतरण की कोई जरूरत नहीं है। हमारे देश के अनेक बड़े उद्योगपति और कई सामाजिक संस्थाएं गरीबों की सहायता कर रही हैं। विदेशों से वैध-अवैध तरीके से धन प्राप्त करने वाली अनेक संस्थायें भी गरीबों व निरक्षरों के धर्म परिवर्तन में लिप्त पाई गई हैं। उनका उद्देश्य भारत की जनसंख्या संरचना बदल कर उसकी एकता और अखंडता पर प्रहार करना है। ऐसे धर्मांतरण की अनुमति देना देश की सुरक्षा से खिलवाड़ करना है। उत्तर प्रदेश की तरह दूसरे राज्यों को भी कठोर धर्मांतरण-विरोधी कानून बनाने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ना चाहिए।

- विभूति बुपक्या, खाचरोद

बांग्लादेश में तख्तापलट

बांग्लादेश में तख्तापलट के बाद उपद्रवियों ने राष्ट्रपिता मुजीबुर रहमान की मूर्तियां तोड़ी हैं। इससे तख्तापलट में पाकिस्तान और चीन का हाथ होने की आशंका है। बांग्लादेश में लंबे समय से इस्लामवादी व जिहादी ताकतें शेख हसीना सरकार द्वारा लागू सेक्युलरिज्म का विरोध कर रही थीं। तख्तापलट के बाद हिंदुओं के घरों और मंदिरों पर हो रहे हमले बांग्लादेश में कट्टरपंथियों के उभार तथा वहां सेक्युलरिज्म के समाप्त होने का खतरा पैदा करते हैं। यह स्थिति भारत व खासकर पश्चिम बंगाल सरकार के लिए चिन्ताजनक है। यदि बांग्लादेश में हिंदुओं पर होने वाले हमले बंद नहीं होते हैं तो बड़ी संख्या में वहां से हिंदुओं के भारत पलायन का खतरा बना हुआ है। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने लोगों से अपील की है कि वे शांति बनाए रखें तथा कोई भड़काऊ बयानबाजी न करें। उन्होंने भारत सरकार से पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया है। भारत सरकार ने नेता विपक्ष राहुल गांधी को भी पूरी स्थिति से अवगत कराया है। उम्मीद है कि भारत के सभी राजनीतिक दल एकजुट होकर पूरे घटनाक्रम पर गौर करेंगे।

- हेमा हरि उपाध्याय, उज्जैन

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से
responsemail.hindipioneer@gmail.com
पर भी भेज सकते हैं।

अयोध्या दुराचार की घटना के विरोध में एसडीएम को सौंपा ज्ञापन

संवाददाता। डलमऊ, रायबरेली

अयोध्या में नाबालिग बच्ची के साथ हुए दुराचार जैसे घृणित अपराध को किसी भी जाति समुदाय के नजरिये से नही देखा जाना चाहिए। देश मे अयोध्या की घटना ने एक बार फिर मानवता, को झकझोर कर रख दिया जहां एक बच्ची को ये भी पता नही है कि उसके साथ व्यक्ति ने कितना घिनौना अपराध किया है। ऐसे व्यक्ति के लिए देश व समाज मे कहीं भी स्थान नही होना चाहिए। ऐसे कुंठित व विकृत मानसिकता के लोगों के कारण ही समाज मे अराजकता और भय का माहौल बनाता है जिसे जड़ से उखाड़ना नितांत आवश्यक है।

इस घटना से पूरे देश मे आक्रोश व्याप्त है विरोध के क्रम में डलमऊ निषाद समाज व तीर्थ पुरोहित समाज ने आगे बढ़कर उपजिलाधिकारी डलमऊ मनोज कुमार सिंह को मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश के नाम से ज्ञापन देकर फास्ट ट्रैक कोर्ट में वाद चलकर शीघ्र कड़ी से कड़ी कार्यवाही फांसी की कठोरतम सजा की मांग की उपजिलाधिकारी ने इस जघन्य अपराध पर दुःख व्यक्त करते हुए सरकार की कार्रवाइयों से अवगत कराया जिससे निषाद समाज के युवाओं द्वारा सरकार की कार्रवाई से संतोष नजर आया।

वर्तमान उत्तर प्रदेश सरकार ने घटना में नामजद अपराधी मो मोईद अयोध्या के पूराकलंदर इलाके में एक 12 साल की नाबालिग बच्ची से बलात्कार के आरोप में गिरफ्तार किया गया. प्रमुख विपक्षी पार्टी से जुड़े मोहम्मद मोईद खान का पहले भी आपराधिक गतिविधियों का एक लंबा इतिहास है। हालांकि, क्षेत्र में उनके राजनीतिक प्रभाव ने स्थानीय सरकारों और कानून प्रवर्तन को उनके खिलाफ कार्रवाई करने से रोक दिया था लेकिन इस मामले में योगी सरकार ने उनपर बड़ी कार्रवाई की है और उनकी बेकरी को ध्वस्त कर दिया गया है। साथ ही बच्ची से रेप के आरोप में मोईद खान को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है।

मुठही कलां गांव में डीएम ने ग्रामीणों से किया संवाद, सुनीं समस्याएं

संतकबीरनगर। जिलाधिकारी महेंद्र सिंह तंवर ने जनपद में राजस्व विवाद रहित ग्राम अभियान के तहत तहसील धनघटा के राजस्व ग्राम मुठही कलां में पहुंचकर ग्राम वासियों से बातचीत की। जिलाधिकारी ने राजस्व प्रशासन द्वारा भूमि विवाद के निस्तारण के संबंध में किए जा रहे कार्यों को देखा एवं राजस्व विभाग के अधिकारियों कर्मचारियों को अभियान के संबंध में विवाद रहित ग्राम की संकल्पना को साकार करने हेतु महत्वपूर्ण सुझाव एवं निर्देश भी दिए। जिलाधिकारी द्वारा ग्रामवासियों से बातचीत करते हुए उनकी समस्याओं के निस्तारण हेतु उनसे भी सुझाव मांगे गए। इस अभियान में जिलाधिकारी ने ग्रामवासियों से सहयोग की भी अपेक्षा की। पुलिस अधीक्षक सत्यजीत गुप्ता द्वारा भी ग्रामवासियों से वार्ता की गई एवं समस्याओं के निस्तारण हेतु महत्वपूर्ण सुझाव एवं निर्देश दिए गए। इस अवसर पर जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक द्वारा पर्यावरण संरक्षण अभियान के तहत वृक्षारोपण भी किया गया। उन्होंने ग्रामवासियों से भी अपने आसपास के पर्यावरण को स्वच्छ एवं सुंदर बनाने के दृष्टिगत अधिक से अधिक वृक्षारोपण करने की अपील भी की।

जिलाधिकारी ने जिला समन्वय समिति की समीक्षा कर दिये आवश्यक निर्देश

- फाइलेरिया उन्मूलन के लिए दिए विशेष निर्देश

संवाददाता। रायबरेली

जिलाधिकारी हर्षिता माथुर ने कलेक्ट्रेट सभागार में जिला समन्वय समिति की बैठक कर स्वास्थ्य सुविधाओं को प्राथमिकता के साथ संचालित कराने के निर्देश दिए। साथ ही विशेष प्रयास कर प्रगति में सुधार लाने को कहा। उन्होंने शासन द्वारा संचालित समस्त स्वास्थ्य योजनाओं का बेहतर ढंग से क्रियान्वयन करते हुए अधिक से अधिक जन सामान्य को लाभान्वित करने के निर्देश दिए। बैठक में समिति के समक्ष अस्पतालों में स्वास्थ्य सेवाओं को और बेहतर बनाने, संस्थागत प्रसव, जननी सुरक्षा योजना, नवजात शिशु टीकाकरण, आयुष्मान कार्ड, आशा भुगतान, आशा रिपोर्टिंग, नियमित टीकाकरण, फैमिली प्लानिंग, सहित अन्य योजनाओं, कार्यक्रमों की समीक्षा तथा स्वास्थ्य विभाग द्वारा संचालित सभी योजनाओं कार्यक्रमों का सही ढंग से क्रियान्वयन करने एवं स्वास्थ्य सेवाओं को और अधिक बेहतर करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सभी सीएचसी, पीएचसी हेल्थ वेलनेस सेंटर आदि का निरीक्षण कर लिया जाए तथा जहां पर जो भी कमियां हैं उसमें सुधार करा लिया जाए। उन्होंने कहा कि गर्भवती महिलाओं और किशोरी बालिकाओं को आयरन युक्त गोलियां उपलब्ध कराई जाए। साथ ही उनको स्वास्थ्य संबंधी जरूरी जानकारी भी दी जाए।

10 अगस्त से 2 सितंबर 2024 तक चलने वाले फाइलेरिया उन्मूलन कार्यक्रमों को सफल बनाने के लिए जिलाधिकारी ने संबंधित को निर्देश देते हुए कहा कि सभी सरकारी कार्यालयो,संस्थाओं तथा सार्वजनिक स्थलों पर लोगों को फाइलेरिया की दवा मुफ्त खिलाई जाए। साथ ही इसका व्यापक प्रचार प्रसार कराया जाएगा। लोगों को फाइलेरिया रोग से बचने के उपायो के बारे में भी बताएं जाए। बैठक के दौरान सीडीओ अर्पित उपाध्याय, सीएमओ डॉ वीरेंद्र सिंह, सीएमएस डॉ निर्मला साहू, डॉ अरविंद सहित अन्य मौजूद रहे।

जल जीवन मिशन योजना के तहत दो दिवसीय प्रशिक्षण हुआ संपन्न

तिलोई, अमेठी। जल जीवन मिशन योजना के अन्तर्गत हर घर जल, दक्षता संवर्धन दो दिवसीय कार्यशाला राजा बहादुर मोहन सिंह ब्लाक सभागार तिलोई में सम्पन्न हुई। प्रशिक्षक महेन्द्र प्रताप यादव ने जल से होने वाली बीमारियों,जल को स्वच्छ रखने के उपाय,जल जीवन मिशन योजना से मिलने वाले जल की उपयोगिता पर जानकारी प्रदान किया। प्रशिक्षण के संयोजक संगम लाल ने प्रशिक्षण की सम्पूर्ण व्यवस्था मुहैया कराई। समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप आंकाक्षा सिंह, खण्ड विकास अधिकारी-तिलोई, विशिष्ट अतिथि - राम किशन कश्यप, एवं अध्यक्षता धीरेन्द्र प्रताप सिंह, प्रदेश उपाध्यक्ष एवं जिलाध्यक्ष, उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ -अमेठी ने किया। कार्यक्रम का संचालन रमाकांत मौर्य जी-महामंत्री, जूनियर हाई स्कूल शिक्षक संघ-अमेठी ने किया। प्रशिक्षण में 177 प्रतिभागी उपस्थित रहे। जिसमें 108 प्रधानाध्यापकों/प्रभारी प्रधानाध्यापकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। आकांक्षा सिंह ने सभी प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए कहा आप सबको प्रशिक्षण में जो जानकारियां जल की उपयोगिता व जल से होने वाली बीमारियों के बारे में मिली है, बच्चों व अभिभावकों तक पहुंचाएं।राम किशन कश्यप ने सभी शिक्षकों से विद्यालय पर पहुंच कर बच्चों को शुद्ध पेयजल व बीमारियों से बचाव एवं उपाय के प्रति जागरूक करें। धीरेन्द्र प्रताप सिंह ने कहा हम सभी प्रतिभागियों को प्रशिक्षण में बहुत सुन्दर जानकारी प्राप्त हुई है,हम सब बच्चों व अभिभावकों को शुद्ध पेयजल की उपयोगिता के सम्बन्ध में प्रेरित करके छोटी -छोटी बीमारियों से बचाव संभव है।

घटिया निर्माण पर पुजारी ने की आपत्ति, ठेकेदार ने धमकाया

अमेठी। विकासखंड बाजारशुकुल में स्थित मां कामाख्या धाम मंदिर का पर्यटन विभाग की ओर से कायाकल्प कराया जा रहा है। काम करवाने के लिए यूपीपीसीएल को कार्यदाई संस्था नामित किया गया है। ठेकेदार द्वारा निर्माण में घटिया सामग्री प्रयोग किए जाने को लेकर पुजारी ने आपत्ति जाहिर की तो ठेकेदार ने उन्हें धमकाना शुरू कर दिया। पुजारी ने मामले की शिकायत डीएम से की है। बाजारशुकुल क्षेत्र के माझगांव में मां कामाख्या का मंदिर स्थित है। सरकार की ओर से यहां पर निर्माण कार्य कराए जा रहे हैं। मंदिर परिसर में एक धर्मशाला और शौचालय आदि का निर्माण भी कराया जा रहा है। निर्माण की जिम्मेदारी यूपीपीसीएल संस्था को सौंपी गई है। मंदिर के पुजारी सुरेंद्र महाराज का आरोप है कि ठेकेदार द्वारा पीली ईंट और घटिया सीमेंट का प्रयोग निर्माण कार्य में किया जा रहा है। उन्होंने इसको लेकर ठेकेदार से आपत्ति की। उनका आरोप है कि ठेकेदार द्वारा धर्मशाला निर्माण में पीली ईंटों का प्रयोग किया जा रहा है। इसके साथ ही घटिया सीमेंट लगाई जा रही है।

मंदिर आंदोलन के महानायक रामचंद्र परमहंस को पद्मश्री दे सरकार: डॉ वेदांती

अयोध्या। मां सरयू के संत तुलसीदास घाट स्थित श्री राम जन्मभूमि आंदोलन के पुरोधा प्रतिवाद भयंकर उपाधि से विभूषित श्री रामचंद्र दास परमहंस महाराज की समाधि पर अयोध्या के संतो महंतों ने 21वीं पुण्यतिथि के पूर्व संध्या पर समाधि का जीर्णोद्धार कराने वाले उनके शिष्य एवं श्री महंत रामचंद्र दास परमहंस सेवा ट्रस्ट के अध्यक्ष आचार्य नारायण मिश्रा के संयोजन में श्रद्धांजलि अर्पित की गई और श्रद्धांजलि सभा का आयोजन हुआ जिसमें मुख्य अतिथि के तौर पर बोलते हुए पूर्व सांसद ब्रह्मर्षि डॉ रामविलास दास वेदांती महराज ने केंद्र सरकार से मांग किया कि राम मंदिर आंदोलन के महानायक तथा श्री राम जन्मभूमि न्यास के पूर्व अध्यक्ष दिगम्बर अखाड़े के पूर्व श्रीमहंत परमहंस महाराज को मरणोपरांत पदमश्री एवार्ड से सम्मानित करे। कहा कि साथ ही साथ गोरखनाथ पीठाधीश्वर पूर्व महंत अवैद्यनाथ महराज तथा राम मंदिर आंदोलन के लिए अलख जगाने वाले विश्व हिन्दू परिषद के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष स्व अशोक सिंघल को भी पद्मश्री सम्मान से नवाजा जाए। निहत्थे कारसेवकों पर गोली चलाने वाले मुलायम सिंह यादव को यह सम्मान दिया जा सकता है तो आंदोलन के असली हकदार को क्यों नहीं।

चोरियों का खुलासा कर पुलिस ने दो को भेजा जेल

लालगंज, रायबरेली। कस्बे के शांती नगर व रानीपुर गांव में हुई ताबड़तोड़ चोरियों के मामले का खुलासा करते हुए पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से नकदी व कुछ जेवरात भी बरामद किया है। पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ आवश्यक विधिक कार्रवाई करते हुए उन्हे जेल भेज दिया है। उल्लेखनीय है कि बीती 30 मई की रात क्षेत्र के पूरे तुला मजरे रानीपुर गाव निवासी पंकज पुत्र ईश्वरदीन के घर चोरो ने धावा बोलकर घर में रखी 10 हजार की नकदी समेंत लाखों के जेवर पार कर दिये थे। इसी प्रकार कस्बे के शांती नगर मोहल्ले में भी चोरो ने चार घरो को निशाना बनाते हुए रवी गुप्ता व अंकित के घर में रखी नकदी समेंत जेवर पर हाथ साफकर दिये थे। पीड़ितो की तहरीर पर पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच पड़ताल शुरू की और मुखबिरो की मदद से कस्बे के बेहटा चौराहे से दो आरोपियों को गिरफ्तार करने का दावा किया है।

ग्राम पंचायत उप निर्वाचन के दृष्टिगत डीएम-एसपी ने किया निरीक्षण

श्रावस्ती। जिलाधिकारी अजय कुमार द्विवेदी एवं पुलिस अधीक्षक घनश्याम चौरसिया ने पंचायत उप निर्वाचन के मतदान को सकुशल सम्पन्न कराने हेतु मतदेय स्थल पर चल रहे मतदान का जायजा लिया। इस दौरान उन्होने विकास खण्ड हरिहरपुररानी के अन्तर्गत बनाये गये मतदेय स्थल हरिहरपुर पहुंचकर चल रही मतदान प्रक्रिया का निरीक्षण किया तथा निर्वाचन कार्य मे लगे अधिकारियों/कर्मचारियों तथा सुरक्षा में लगे पुलिस के अधिकारियों को सकुशल एवं भयमुक्त वातावरण में मतदान सम्पन्न कराने का निर्देश दिया। जिला निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि मतदान हेतु कुल 08 मतदेय स्थल बनाये गये है जिसमें विकास खण्ड सिरसिया अन्तर्गत 3 मतदेय स्थल सदस्य क्षेत्र पंचायत पद हेतु तथा विकास खण्ड हरिहरपुररानी अन्तर्गत 5 बूथों पर प्रधान पद हेतु मतदान प्रक्रिया करायी जा रही है। इस दौरान पुलिस अधीक्षक ने कहा कि संदिग्ध अराजक तत्वों पर पैनी नजर रखी जा रही है। उन्होने वहीं पर उपस्थित सुरक्षा कर्मियों को निर्देशित किया कि मतदान के दौरान यदि कोई व्यक्ति अमन-चैन में बाधा उत्पन्न करने कि कोशिश करें तो तत्काल उसके विरूद्ध कार्यवाही की जाए।

केंद्रीय विद्यालय प्रबंध समिति की बैठक संपन्न

श्रावस्ती। केंद्रीय विद्यालय श्रावस्ती की सत्र की पहली विद्यालय प्रबंध समिति की बैठक अध्यक्ष डीएम अजय कुमार द्विवेदी की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में संपन्न हुई। बैठक में विद्यालय के प्राचार्य अशोक कुमार द्विवेदी ने पिछली बैठक की कार्यवाहियों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करते हुए आज की बैठक के एजेंडे को अध्यक्ष एवं अन्य सदस्यों के समक्ष रखा विद्यालय के परीक्षा परिणाम लखनऊ संभाग में दूसरे स्थान पर था इस पर सभी ने प्रसन्नता व्यक्त की। डीएम ने लखनऊ संभाग के विद्यालयों के विषय में जानकारी लेते हुए कहा कि पीएम श्री विद्यालय में जो बाल वाटिका आरम्भ होनी है इसकी विस्तृत जानकारी देते हुए आगामी सत्र में अनुमोदन के लिए कार्रवाई की जाए।

30 वर्षों से हरपुर हल्ला गांव के साथ हो रहा उपेक्षापूर्ण व्यवहार

संवाददाता। रायबरेली

सलोन ब्लाक के हरपुर हल्ला गांव खड़ंजा न बनाए जाने को लेकर ग्रामीणों रोष व्याप्त है। ग्राम प्रधान ब्लॉक प्रमुख एवं जिला पंचायत से भी लिखित रूप में इस रास्ते को दुरुस्त करने के लिए कई बार आवेदन किया गया परंतु पक्की सडक से इंटरलॉकिंग तक का लगभग 60 मी खडंजा पिछले कई वर्षों से नहीं लगवाया गया जिससे लोगों को रास्ते में भर पानी से गुजरना पड़ता है।

इसी रास्ते का एक मंजर यह भी नजर आया कि मोहल्ले में मृत्यु हो जाने के बाद उसे ले जाने के लिए लोगों को इस रास्ते से निकलना पडा इस बात को लेकर लोगों में रोष व्याप्त है और यदि जल्द ही जल्द ही इस रास्ते को दुरुस्त न कराया गया तो धरना जिला अधिकारी कार्यालय के सामने किया जाएगा।

जानकारी के अनुसार रायबरेली जनपद के सलोन ब्लाक क्षेत्र के हरपुर हल्ला गांव का मामला सामने है नजर आया है जिसमें उसे ग्रामीण एक शव यात्रा में घुटने घुटने में तक भरे पानी से गुजर रहे हैं जो कि इस ग्राम सभा के लिए बहुत ही शर्मनाक है ग्रामीणों ने ग्रामीणों ने किस रास्ते को दुरुस्त करने के लिए ग्राम प्रधान से लेकर ब्लॉक प्रमुख वह जिला अध्यक्ष तक की है लेकिन आज तक कोई सुनवाई नहीं हुई है इसी ग्राम सभा के सचिन रामनरेश हैं जिसे ग्रामीणों ने मुलाकात कर इस रास्ते को दुरुस्त करवाने की मांग की थी लेकिन ग्राम सचिव रामनरेश भी इस मामले में मात्र सांत्वना ही दे पाए।

ग्रामीणों का यह भी आरोप है कि ग्राम सचिव प्रधान से मिलकर इस मार्ग का भुगतान भी करवा चुके हैं लेकिन मौके पर इस रास्ते को दुरुस्त नहीं कराया गया है खंड विकास अधिकारी से भी इस मामले में कार्रवाई के लिए कहा गया तो वह भी मात्र शांत होना देकर ही शांत हो गए और यह मार्ग जैसे का तैसा खस्ता हाल पड़ा हुआ है। पक्की सडक से लेकर मात्र 60 मीटर तक मार्ग गड्ढा युक्त व जल युक्त रहता है एवं उसके बाद इंटरलॉकिंग लगी हुई है। पिछले लगभग 30 वर्षों से इस मोहल्ले के साथ बेगानों जैसा व्यवहार किया जा रहा है।

ग्रामीण रामेश्वर, सुंदरलाल, अंकित, राजेंद्र, पिंकू, संतराम, पवन, दिलीप आदि लोगों बताया कि रास्ता इतना खराब हो गया है कि स्कूल जाने वाले बच्चे बारिश में अक्सर गिर जाते है। जिसमे घुटने घुटनें तक पानी भर जाता है और लोग रास्ते में गिरते रहते है। इस रोड को पक्की बनवाए जाने के लिए दर्जनों बार शिकायती पत्र दिया गया है। लेकिन अभी तक कोई सुनवाई नहीं हुई।

मोटरसाइकिलों की भिड़ंत में युवक की मौत

ऊंचाहार। दो बाइकों की जोरदार भिड़ंत में बाइक सवार एक युवक की मौत हो गई, जबकि दूसरे घायल युवक को सीएचसी से प्राथमिक उपचार के बाद जिला अस्पताल रेफर किया गया है। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को भेजा है। मीरा सवैया मजरे हटवा गाँव निवासी कमल किशोर 36 वर्ष मंगलवार की दोपहर बाइक से त्योहार का सामान लेकर बहन के घर चंदऊ मजरे जब्बारीपुर गांव जा रहा था, तभी अरखा गांव के पास पूरे किशुनी मोड़ पर संतोष कुमार 26 वर्ष निवासी बसिया की बाग मजरे पट्टी रहस कैथवल की बाइक से उसकी बाइक टकरा गई दोनों युवक सड़क पर गिरकर गम्भीर रूप से घायल हो गये, राहगीरों की सूचना पर पहुंची एम्बुलेंस ने घायलों में सीएचसी पहुंचाया, जहां कमल किशोर को डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया जबकि सन्तोष कुमार को प्राथमिक उपचार के बाद जिला अस्पताल रेफर किया गया था।

इनरव्हील क्लब ने महिला अस्पताल में स्तनपान दिवस मनाया

रायबरेली। जिला महिला अस्पताल में इनरव्हील क्लब द्वारा स्तनपान दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ क्लब की अध्यक्षा दीप्ती सिकारिया ने डा. विधि उपाध्याय को पुष्प गुलदस्ता देकर स्वागत किया तत्पश्चात डॉक्टर विधि ने बताया कि अस्पताल में भर्ती शिशु की माताओं को मां का दूध बच्चे के लिए अमृत तुल्य है अगर ज्यादा कमजोरी की वजह से मां के दूध नही होता तो डॉक्टर की सलाह ले तब भी दूध ना हो तो गाय व बकरी का दूध पिलाएं। बच्चे के जन्म के साथ मां की जिम्मेदारी बढ़ जाती है। परिवार वालों को चाहिए कि मां व बच्चें को साथ में ज्यादा रहने दे और अच्छा स्वास्थ्यवर्धक भोजन दिया जाना मां के लिए बहुत जरूरी है तथा परिवार वाले सहयोग करे। डाक्टर विधि उपाध्याय ने बताया कई बार घर के काम के कारण माता बच्चों को बॉटल वाला दूध दे देती है. ऐसा ना करें बच्चों को अपना ही दूध, पिलाएं। माँ के दूध पिलाने में सारे पोषक तत्व होने से बच्चा स्वस्थ रहता है। आशा सिंह इनर व्हील क्लब ने सभी डॉक्टर को मोमेंटो देकर सम्मानित किया।

सहाब की गौशाला में गौवंशों को मिल रहा सड़ा भूसा

जालौन, उरई। गोशालाओं की हालत बहुत अच्छी नहीं है। मुख्यमंत्री से लेकर अधिकारी तक लागातार व्यवस्थाओं को सुधारने की नसीहत दे रहे हैं। इसके बाद भी गोशालाओं की हालत में सुधार नहीं हो रहा है। सहाव स्थित गोशाला में गोवंशी पशुओं को सड़ा हुआ भूसा खिलाया जा रहा है तो अकोढ़ी दुबे स्थित गोशला में सफाई न होने और कीचड़ में रहने से बीमार एक गोवंश की मौत हो गई। विकास खंड के ग्राम सहाव में गोशाला संचालन में जिम्मेदार अपने कर्तव्यों को ढंग से नहीं निभा रहे हैं। नतीजा यह है गोशाला में दुर्दशा बनी हुई है। यहां तक कि बारिश के मौसम में भूसा को सुरक्षित रखने के कोई उपाय नहीं किए गए। जिसके चलते बारिश में भूसा भीगकर सड़ चुका है। ग्रामीण प्रशांत कुमार ने एसडीएम को शिकायती पत्र देकर आरोप लगाया कि गोशाला में लगभग 150 गोवंशीय पशु बंद हैं। इन पशुओं के लिए चारे पानी के इंतजाम के लिए ग्राम पंचायत सचिव द्वारा जो भूसा मंगवाया गया है वह भी गीला, सड़ा हुआ है और बदबू आ रही है। इसी भूसे को गोवंशीय पशुओं को खिलाया जा रहा है। जिससे पशुओं के बीमार होकर मृत होने की आशंका है। उन्होंने आरोप लगाया कि उन्होंने जब इसकी शिकायत की तो उसके ऊपर ही मंगलवार को सही भूसा मंगवाकर डाल दिया गया है। इसी तरह अकोढ़ी दुबे में संचालित गोशाला में बंद गोवंशों की स्थिति अच्छी नहीं है। मंगलवार को अकोढ़ी दुबे स्थित गोशाला में एक गाय की मौत हो गई। इसी तरह एक सप्ताह पूर्व भी गोशाला में बंद चार गोवंशों की मौत हो गई थी।

डिप्टी सीएम ने दिये 500 करोड़ की जमीनों को भूमाफ़ियाओं के कब्जे से मुक्त कराने के निर्देश

- अधिवक्ता पांच वर्षों से सरकारी जमीनों को मुक्त कराने की लड़ रहा लड़ाई
- नजूल की जमीनों के बैनामे में भी हुआ गोलमाल
- शिकायत पर डीएम ने तीन अधिकारियों को सौंपी जांच

संवाददाता। उरई, जालौन

सुप्रीम कोर्ट के अधिवक्ता अनुभव चतुर्वेदी द्वारा प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मोर्य को दिए गये पत्र में बताया कि उरई में 200 करोड़ की सरकारी सम्पत्ति का कुछ भूमाफ़ियाओं द्वारा अवैध तरीके से बेंचने के और अभी तक सरकारी जमीन पर सरकार को कब्जा न मिलने के एवं शेष लगभग 15 हैक्टेयर सरकारी जमीन जिसकी अनुमाति कीमत लगभग 500 करोड है का फर्जी इंद्राज समाप्त कर सरकार के नाम इंद्राज कराने के संबंध में है। जिसको डिप्टी सीएम ने गंभीरता से लेते हुये जिलाधिकारी को नजूल की जमीनों को भूमाफ़ियाओं के चंगुल से मुक्त कराने के निर्देश दिए।

सुप्रीम कोर्ट के अधिवक्ता अनुभव चतुर्वेदी ने उप मुख्यमंत्री को संबोधित दिये गये पत्र में बताया कि वह कई वर्षों से एक व्हिसल ब्लोअर की तरह काम कर रहा है और इसी तरह की सरकारी गबन और अनेकों संवेदनशील मुद्दों पर निडरता से अपराध का पर्दाफाश किया है। भूमाफ़िया संजय, राजीव, विनय श्रीवास्तव पुत्रगण रामेश्वर दयाल निवासीगण कृष्णा नगर उरई जिनके खिलाफवर्ष 2019 से लेकर अब तक आधा दर्जन से अधिक मुकदमे सदर कोतवाली में पंजीकृत है जिसमें उप्र गिरोबंद अधिनियम गैंगस्टर एक्ट तथा सार्वजनिक सम्पत्ति नुकसान निवारण अधिनियम के गंभीर धाराओं में इनके एवं इनके अन्य पुत्रगणों के विरुद्ध उरई कोतवाली में पंजीकृत हैं। जिसमें आराजी नंबर 204 (1) जो कि एसडीएम उरई के आदेश संख्या टी 201906350305602 के द्वारा सरकार यानि नगर पालिका के स्वामित्व की घोषणा हो चुकी है। उक्त आराजी नंबर 204 (1) रकवा 5.439 हैक्टेयर में करीब 40 से अधिक बैनामा कर दिये गये हैं। यह सभी बैनामों में करोड़ों रुपये का सरकारी धन का गबन संजय श्रीवास्तव आदि के द्वारा किया गया है। बेंचे हुये प्लास्ट की गिनती और बहुत ज्यादा है जिनकी लिस्ट देना संभव नहीं है क्योंकि भूमाफ़ियाओं ने बहुत ही खतरनाक तरीके से बैनामों में गाटा संख्या या मौजा बिना खोले हुये बैनामा कर दिया और वह रजिस्ट्रार कार्यालय से बगैर किसी विशेष प्रसाद के उसकी जानकारी कर पाना संभव नहीं है। जबकि हकीकत में मौके पर आधे से ज्यादा सरकारी जमीन बेंची जा चुकी है।

पिछले समय एसपी व डीएम द्वारा भूमाफ़ियाओं के विरुद्ध कार्यवाही हुई लेकिन वह मामूली है। अधिवक्ता ने बताया कि 100 करोड़ की सम्पत्ति के बदले ढाई करोड़ रुपये ही बैंक में सीज हुये जिससे भूमाफ़िया अभी भी निडरता से शहर में घूम रहा है।

उरई का पहला जमींदार जिसका कोई मुहाल नहीं?

उरई। वैसे तो उरई में जमींदारी के कई मुहाल है जिनमें भवानी प्रसाद, मन्नीलाल, कालका प्रसाद, भोजराज, इकलासपुरा में भी जमींदारी कायम हैं। जिनमें मुहाल जियालाल आदि बघौरा में भी मुहाल नामों से हैं लेकिन यह पहले जमींदार है जिनका कोई मुहाल का कोई नाम नहीं है। क्योंकि अगर यह पुश्तैनी जमींदार होते तो इनके मुहाल का नाम होता। इनके बाबा या इनके किसी पूर्वजों का नाम 1359 फसली में होता या इनके पास जमींदारों से बैनामे होते चूंकि लेखपाल, पटवारी से सांठगांठ करके फर्जी इंद्राज किये गये हैं और रिकार्डों में भी हेराफेरी की गयी हैं। प्रशासन यदि इसकी गहनता और कड़ाई से जांच करा लें तो यह सारे माफिया और इनके साथी कर्मचारी जेल में होंगे।

एसडीएम के निरीक्षण में अधिकांश राशन दुकानों में तालाबंदी मिली

कालपी, जालौन। एसडीएम ने पूर्ति विभाग के साथ सार्वजनिक वितरण प्रणाली की हकीकत परखी। इस दौरान उन्होंने नगर में राशन की दुकानों का निरीक्षण कर उनकी माप तौल व्यवस्था देखकर साफ सफाई रखने के भी निर्देश दिए हैं। शासन द्वारा खाद्यान्न की मुफ्त वितरण व्यवस्था लागू होने के बाद इसकी निगहबानी तेज कर रखी है। वितरण में गड़बड़ी न हो इसको लेकर विभाग द्वारा कई इंतजाम किए गए हैं और इसी के चलते सोमवार शाम उप जिलाधिकारी सुशील कुमार सिंह ने पूर्ति निरीक्षक सुशील कुमार तथा पूर्ति लिपिक शुभेन्द्र तिवारी के साथ नगर स्थित सरकारी राशन की दुकानों का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने टरननगंज बाजार में मौजूद कई दुकानों को देखा जिसमें ज्यादातर बंद मिली इस पर उन्होंने नाराजगी प्रकट कर उचित दर विक्रेताओं को दुकान समय से खोलने और बन्द करने के निर्देश दिए और कहा कि जो भी कमियां है उन्हें शीघ्र ही दुरुस्त कर लिया जाए।

अचानक शराब ठेकों की चेकिंग से शराब कारोबारियों में दिखा बैचेनी का माहौल

संवाददाता। कालपी, जालौन

सावन मास, नागपंचमी, रक्षाबंधन, जन्माष्टमी, के पर्व को दृष्टिगत रखते हुए जिलाधिकारी राजेश कुमार पाण्डेय तथा पुलिस अधीक्षक डॉ. दुर्गेश कुमार के निर्देश पर आबकारी विभाग के अधिकारियों की संयुक्त टीम द्वारा कालपी नगर तथा ग्रामीण क्षेत्रों में संचालित दर्जन भर से अधिक देशी, अंग्रेजी बियर तथा मदिरा की दुकानों में छापा मारकर चौकिंग अभियान चलाया गया। इस दौरान टीम के द्वारा मदिरा की दुकानों की चेकिंग करके लाइसेंस धारकों तथा संचालकों को ओवररेटिंग में मदिरा न बेचने की की कठोर चेतावनी दी गई।

प्राप्त जानकारी के अनुसार आबकारी अधिकारी मुकेश प्रताप के नेतृत्व में आबकारी विभाग के कर्मचारियों ने यमुना नदी के तट बसे ग्राम मंगरौल में स्थित देशी शराब की दुकान, इटौरा की देशी शराब की दुकान, कालपी नगर के मोहल्ला बाईपास, सब्जी मंडी, टरनंनगंज टॉकीज रोड, खोवा मंडी के अलावा जोल्हूपुर मोड़, उसरगांव आदि स्थानों में स्थित देशी तथा अंग्रेजी शराब की दुकानों में चेकिंग अभियान चलाया। दुकानों में शराब के स्टॉक का निरीक्षण तथा गणना करके रजिस्टर तथा अभिलेखों से मिलान किया। इस दौरान बोतलों तथा पैकेटों की सील की चौकिंग तथा टेस्ट किया गया। आबकारी अधिकारी ने दुकानों तथा परिसर में स्वच्छता बनाए रखने के लिए सख्त निर्देश दिए। वहीं आबकारी अधिकारी मुकेश प्रताप सिंह ने लाइसेंस धारकों को हिदायत दी कि दुकानों में रेट लिस्ट का साइन बोर्ड में मोबाइल नम्बरो को जरूर अंकित करें। उन्होंने बताया कि लाइसेंस की शर्तो तथा विभागीय नियमों के तहत शराब की बिक्री करें। उन्होंने चेतावनी दी कि ओवर रेटिंग में बिक्री कर गड़बड़ी करने पर कठोर विभागीय कार्रवाई अमल में लाई जाएगी। जिला आबकारी अधिकारी भूपेंद्र सिंह के पर्यवेक्षण में मुकेश प्रताप सिंह आबकारी निरीक्षक कालपी क्षेत्र अंतर्गत स्टाफसहित देशी मदिरा, विदेशी मदिरा एवं बीयर दुकानों का गहनता से निरीक्षण किया

हर घर तिरंगा की तैयारियों के संबंध में 13 से 15 तक चलने वाले बैठक का आयोजन

फर्रुखाबाद। डीएम डॉ. वी.के. सिंह की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार परिसर फतेहगढ़ में 13 से 15 अगस्त तक चलने बाले हर घर तिरंगा कार्यक्रम की तैयारियों के संवंध में बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में जिलाधिकारी द्वारा निर्देशित किया गया कि सभी तैयारियां 11 अगस्त तक पूर्ण कर ले, ग्रामीण क्षेत्र में सभी खंड विकास अधिकारी ब्लॉकवार माइक्रोप्लान बनाकर डी.सी. एन आर एल एम को उपलब्ध करा दे, शहरी क्षेत्र में सभी अधिशासी अधिकारी माइक्रो प्लान बना ले, ये सुनिश्चित करे कि समय से झंडे बट जाये व सभी घरों पर झंडे लगे,अभियान चलाकर लोगो को इस कार्यक्रम के प्रति जागरूक किया जाये।

ग्रामीण क्षेत्र में 441442 झंडे डी सी एन आर एल एम द्वारा व शहरी क्षेत्र में पीओ डूडा द्वारा 35000 झंडे उपलब्ध कराये जायेगे, जिलाधिकारी द्वारा निर्देशित किया गया कि सभी कार्यालयाध्यक्ष अपने कार्यालय पर झंडा लगाना सुनिश्चित करेंगे। विकास खंड स्तर पर कमेटी बनाकर कार्यक्रम कराये जाये व जनप्रतिनिधियों को शामिल किया जाये,इसके साथ ही 09 अगस्त को काकोरी ट्रेन एक्शन की 100वी वर्षगाँठ पर शताब्दी समारोह के आयोजन के लिये भी निर्देश दिए गये। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी, ज्वाइंट मजिस्ट्रेट महेंद्र सिंह,अपर जिलाधिकारी सुभाष चंद्र प्रजापति व संबंधित विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

व्यापारी पर 6 लोगों ने गत दिन की थी फायरिंग, सभी गिरफ्तार

फर्रुखाबाद। शहर कोतवाली पुलिस ने व्यापारी पर जानलेवा फायरिंग करने वाले आधा दर्जन हमलावरों को तमंचे सहित गिरफ्तार किया है। कोतवाली के प्रभारी निरीक्षक जयप्रकाश शर्मा की टीम ने आधा दर्जन हमलावरों को आज सुबह 3.45 बजे गिरफ्तार किया। आदित्य उर्फबादल पुत्र सतीश निवासी अंगूरी बाग पुलिया कोतवाली शहर के सुभम मिश्र उर्फ पापे पुत्र सुरेशचन्द मिश्रा निवासी मोहल्ला सेनापति कोतवाली शहर, रोहित दिवाकर पुत्र शैलेश दिवाकर निवासी अधैया मोहल्ला छोटी गढी साहबगंज चौराहा, स्वागत मिश्रा पुत्र प्रेमशंकर मिश्र निवासी दिल्ली ख्याली कूचा, अफरीद आलम पुत्र विरासत अली निवासी लालगेट, कब्रिस्तान थाना कादरी गेट एवं शिवम उर्फ छुआरा पुत्र भैयालाल निवासी काशीराम कालौनी हैवतपुर गडिया थाना मऊदरवाजा शामिल हैं।

शहर कोतवाल श्री शर्मा ने आरोपियों को पुलिस लाइन के सभागार में पेश किया। सीओ सिटी प्रदीप सिंह ने पुलिस लाइन सभागार में प्रेस वार्ता के दौरान बताया कि सुभम मिश्र उर्फ पापे व रोहित दिवाकर की जामा तलाशी से 315 बोर तमंचा खोखा व कारतूस बरामद हुए। उन्होंने आरोपियों के हवाले से बताया क्या अभियुक्त रोहित दिवाकर की मोहल्ला दिल्ली ख्याली कूंचा निवासी दुकानदार आदेश वर्मा के पुत्र देवांश से पूर्व में पिटाई की गई थी। जिसका बदला लेने के लिए शुभम मिश्रा ने योजना बनाकर अपने दोस्तों को एकत्र किया था। परसों रात व्यापारी आदेश वर्मा के घर पर जाकर उनके ऊपर व उनके बेटे देवांश के ऊपर जानलेवा फायरिंग की थी। आरोपी भाग जाने के इंतजार में अभिषेक पंडित का इंतजार कर रहे थे। इसी दौरान पुलिस ने उनको गिरफ्तार कर लिया पकड़े गए लोगों में छुआरा शातिर अपराधी है। आदेश वर्मा की पक्का पुल बाजार में आर्टिफिशियल जेवरातों की दुकान है।

हिस्ट्रीशीटर गो तस्कर पिता-पुत्र को मुठभेड़ में लगी गोली

- अवैध असलहा व कारतूस बरामद, अस्पताल में कराया भर्ती

संवाददाता। फतेहपुर

जिले में अंतर्जनपदीय गो तस्कर हिस्ट्रीशीटर बाप-बेटे को पुलिस ने मुठभेड़ के दौरान गिरफ्तार किया है। पुलिस की जवाबी कार्रवाई में दोनों बदमाशों के पैरों में गोली लगी है। इनके कब्जे से पुलिस ने अवैध असलहा और कारतूस बरामद किया है। हत्थे चढें बदमाश रजिस्टर्ड गैंग के सक्रिय सदस्य बताए जा रहे हैं।

पुलिस अधीक्षक धवल जायसवाल ने बताया कि हथगाम थाना पुलिस और स्वाट की संयुक्त टीम क्षेत्र में वांछित अपराधी और संदिग्ध व्यक्तियों की धर पकड़ के लिए हथगाम-खागा रोड पर सोमवार रात बैरिकेडिंग लगाकर चेकिंग कर रही थी। इस दौरान रात करीब 9.30 बजे खागा की तरफदो संदिग्ध बाइक सवार व्यक्ति जाते दिखाई दिए। पुलिस ने उन्हें रोकने का प्रयास किया, लेकिन बाइक सवार बैरिकेटिंग को तोड़ते हुए आगे निकल गए। इस पर पुलिस ने उनका पीछा किया तो उपरोक्त बदमाशों ने पुलिस पर जान से मारने की नीयत से फायरिंग कर दी। इस दौरान सेमरहा गांव स्थित नहर पुलिया के पास पुलिस और बदमाशों की मुठभेड़ हो गई। पुलिस की जवाबी कार्रवाई में दोनों बदमाशों के पैरों में गोली लगी। इसके बाद पुलिस ने दोनों को दबोचा लिया। एसपी ने बताया कि दोनों बदमाशों को घायल अवस्था में नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। एसपी ने बदमाशों को गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम को 25 रुपये इनाम देने की घोषणा की है। रजिस्टर्ड गैंग के सदस्य नसीम पर दर्ज हैं 23 मुकदमे: एसपी ने बताया कि हत्थे चढ़े बदमाशों में नसीम निवासी रायपुर मुआरी थाना हथगाम सदर कोतवाली का वांछित अपराधी था। इसके खिलाफ जनपद के विभिन्न थानों में गोवध अधिनियम के साथ अन्य संगीन धाराओं के 23 मुकदमे दर्ज हैं। साथ ही यह बदमाश हिस्ट्रीशीटर और रजिस्टर्ड गैंग का सक्रिय सदस्य है। वहीं दूसरा आरोपी उसका बेटा एहसान है। इसके खिलाफ भी थाना स्थानीय और सदर कोतवाली में गोवध निवारण अधिनियम की धाराओं समेत तीन मुकदमे दर्ज हैं। इनके कब्जे से पुलिस को अवैध तमंचे और कारतूस के अलावा एक बाइक भी मिली है।

दस अगस्त से 02 सित. तक चलेगा फाइलेरिया दवा सेवन कार्यक्रम

फतेहपुर। मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. राजीव नयन गिरि ने फाइलेरिया आईडीए अभियान के संबंध में आयोजित मीडिया संवेदीकरण कार्यशाला में उन्होंने मीडिया बंधुओं से संचार माध्यमों के जरिये फाइलेरिया मुक्त भारत का संदेश जन जन तक पहुंचाने में सहयोग की अपेक्षा की। सीएमओ ने कहा कि 10 अगस्त से दो सितंबर तक ट्रिपल ड्रग थेरेपी आईडीए अभियान जनपद के सभी ब्लॉक सहित शहरी क्षेत्र में चलने जा रहा है। इसमें स्वास्थ्य कार्यकर्ता घर-घर जाकर लोगों को अपने सामने फाइलेरिया रोधी दवा खिलाएंगे। बताया कि इस अभियान में आइवर्मेक्टिन डीईसी एल्बेण्डाजोल तीन दवाओं की आयु के अनुसार निर्धारित खुराक खिलाई जाएगी। यह दवा दो वर्ष से कम उम्र के बच्चों, गर्भवती महिलाओं और अति गंभीर रूप से बीमार व्यक्तियों को नहीं खिलाना है। शेष सभी लोगों को यह दवा खिलाई जाएगी। दवा खाली पेट नहीं खानी है और दवा की सही खुराक सभी सेवन कर लें इसलिए इसे स्वास्थ्यकर्मी के सामने ही खाना आवश्यक है। जिला मलेरिया अधिकारी कीर्ति रंजन ने जनसमुदाय से अपील किया कि जब भी आशा कार्यकर्ता व उनकी सहयोगी दवा खिलाने जाएं तो उनका सहयोग करें। प्रत्येक टीम एक दिन में 25 घर जाकर दवा खिलाएगी। उन्होंने बताया कि जनपद की 29 लाख 20 हज़ार लक्षित आबादी को आच्छादित करने के लिए 2525 टीम बनाई गई हैं।

हर घर तिरंगा कार्यक्रम में जनप्रतिनिधियों को करें आमंत्रितः जिलाधिकारी

फतेहपुर। स्वतंत्रता दिवस पर 13 से 15 अगस्त तक हर घर तिरंगा अभियान एवं नौ अगस्त को काकोरी ट्रेन एक्शन शताब्दी महोत्सव के सफल क्रियान्वयन हेतु तैयारियों के संबंध में कलेक्ट्रेट सभागार में जिलाधिकारी सी. इन्दुमती की अध्यक्षत में सम्पन्न हुई। उन्होने जिला पंचायत राज अधिकारी को निर्देशित किया कि सभी विभाग हर घर तिरंगा कार्यक्रम में जनप्रतिनिधियों को आमंत्रित करें, तथा सभी विभागों में जहां पर तिरंगा फहराया जाना है, चिन्हित कर नोडल अधिकारी नामित कराये एवं यह भी सुनिश्चित करे कि तिरंगा झण्डा फहराते समय की फोटोग्राफ्स सुस्पष्ट हो ताकि निर्धारित वेबसाईट पर अपलोड की जा सकें। खण्ड विकास अधिकारी, अधिशाषी अधिकारी, एआरटीओ, पुलिस विभाग एवं अन्य विभागों के अधिकारियों को निर्देशित किया कि जिन विभागों को जो लक्ष्य मिला है, जिला पंचायत राज अधिकारी को अवगत कराये तथा झण्डा फहराते समय सेल्फी, फोटोग्राफ्स, रील अवश्य बनायें। कार्यक्रम के अन्तर्गत सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, चित्रकला/पेटिंग, सुलेख एवं निबन्ध, भाषण एवं वाद विवाद, प्रतियोगिता का आयोजन किया जायेगा। स्वच्छता अभियान, पौधरोपण, सेवा समपर्ण, राष्ट्र धुन एवं ब्रास बैण्ड का वादन आदि कार्यक्रम आयोजित होगे। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी पवन कुमार मीना, अपर जिलाधिकारी (वित्त/राजस्व), अपर जिलाधिकारी न्यायिक, समस्त एसडीएम, पुलिस क्षेत्राधिकारी, वनाधिकारी, जिला विकास अधिकारी, जिला पंचायत राज अधिकारी, परियोजना निदेशक डीआरडीए, उपायुक्त स्वता: रोजगार, डीसी मनरेगा, एआरटीओ, समस्त खंड विकास अधिकारी, ईओ सहित संबंधित उपस्थित रहे।

पास्को कोर्ट ने सुनाई सजा

कानपुर देहात। अपराधियों के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में अभियुक्तों को सजा दिलाने हेतु प्रभावी पैरवी के लिये सम्बन्धित थाना प्रभारी व पैरोकारों को अपराधियों को अधिक से अधिक सजा दिलाने हेतु निर्देशित किया गया था। कानपुर देहात पुलिस/मॉनिटरिंग सेल एवं अभियोजन पक्ष तथा कोर्ट पैरोकार/कोर्ट मोहर्रिर के द्वारा अथक प्रयास एवं प्रभावी पैरवी कराते हुए 1 अभियोग में माननीय न्यायालय द्वारा सजा सुनाई गयी थाना मंगलपुर' पर पंजीकृत 'मुअसं 04/2016, धारा 376डी, 354, 323, 504, 506 भादवि व 6 पॉक्सो एक्ट' बनाम अभियुक्तगण प्रदीप पुत्र फूल सिंह, अशोक पुत्र श्रीकृष्ण निवासीगण उइछा थाना मंगलपुर कानपुर देहात को न्यायालय पॉक्सो एक्ट कानपुर देहात द्वारा दोष सिद्ध करते हुए धारा 354 भादवि में प्रत्येक अभियुक्त को 04 वर्ष कठोर कारावास व 20-20 हजार रुपये' के अर्थदण्ड से दण्डित किया गया। अर्थदण्ड अदा न करने की दशा में '01-01 माह के अतिरिक्त कारवास' की सजा भुगतनी होगी।

क्विक न्यूज

पुलिस नें वांछित को गिरफ्तार कर भेजा जेल

कन्नौज। उच्चाधिकारियों के निर्देशन एवं प्रभारी निरीक्षक जयप्रकाश शर्मा के नेतृत्व मे कोतवाली कन्नौज पुलिस द्वारा एक मुकदमें में बांछित चल रहे अभियुक्त को गिरफ्तार कर न्यायालय भेजा गया। प्रभारी निरीक्षक जेपी शर्मा नें बताया कि विगत सोमवार को अनुपम राय प्रभारी जिला दिव्यांगजन सशक्तीकरण अधिकारी की लिखित तहरीर बाबत बेहरिन निवासी राजू व अन्य अज्ञात व्यक्तियों के द्वारा 02 वर्ष पहले 2022 में दिव्यांगजनों को एलिम्को कानपुर के द्वारा निःशुल्क प्रदान की जाने वाली मोटराइज ट्राईसाइकिल के जबरन पैसे वसूल कर, योजना का लाभ न प्राप्त होने पर पैसे मांगने पर दिव्यांगजनों को डराने धमकाने एवं पैसा वापस न करने व गाली गलौज करने के सम्बन्ध मे थाना स्थानीय पर सुसंगत धाराओं में मुकदमा पंजीकृत हुआ। दौराने विवेचना मंगलवार को मुखबिर की सूचना पर प्रभारी निरीक्षक जेपी शर्मा नें उपनिरीक्षक संजीव कुमार, कांस्टेवल सुनील कुमार के साथ अभियुक्त राजू पुत्र रामदास निवासी बेहरिन थाना तिर्वा को सीडीओ कार्यालय के पास से गिरफ्तार किया गया।

सर्पदंश से महिला की मृत्यु

राठ(हमीरपुर)। मझगवां थाने के जराखर गांव में खेत में चारा काटने गई महिला को जहरीले सर्प ने काट लिया। स्वजन महिला को झाड़.फूंक के लिए पनवाड़ी ले गए। जहां महिला की मौत हो गई। स्वजनों ने शव का पोस्टमार्टम कराया है। जराखर गांव निवासी चंद्रपाल ने बताया कि सोमवार की शाम करीब पांच उसकी पत्नी 45 वर्षीय शिववती खेत में चारा काटने गई थी। तभी चारा काटने समय महिला को सर्प ने काट लिया। स्वजन महिला को झाड़.फूंक के लिए पनवाड़ी ले गए। जहां महिला की मौत हो गई। मृतका के पति ने बताया कि पत्नी के नाम सवा बीघा और उसके नाम सात बीघा जमीन है। खेती कर परिवार का भरण.पोषण करते थे। मृतका अपने पीछे एक पुत्र अमित और पुत्री मनीषा को छोड़ गई है। महिला की मौत पर स्वजनों में कोहराम मचा हुआ है।

करंट की चपेट में आकर बंदर की मौत

फतेहपुर। असोथर विकास खंड के कौंडर गांव में सोमवार की शाम विचरण करने वाले एक बंदर की बिजली की चपेट में आने से मौत हो गई। यह बंदर गांव में ही घूमता था इसलिए लोगों के मन में उसके लिए श्रद्धा का भाव पनपने लगा और धीरे-धीरे उपस्थित लोगों ने फैसला किया कि उक्त बंदर को पूर्ण श्रद्धा भाव से गांव में स्थित बलभद्र बाबा कुटी में समाधि दी जाएगी। सुबह-सुबह ग्रामीणों ने सीतारामी से ढककर व फूलों गुब्बारों के साथ ही गाजे बाजे से शव यात्रा निकाली। कुटी के एक किनारे मंत्रोच्चारण के बीच समाधि दी। इस दौरान प्रधान प्रतिनिधि प्रदुम्न गुप्ता, धीरेन्द्र सिंह, अनूप कुमार, लालमन यादव, रामलाल, रामदूत, बच्छराज सिंह भी मौजूद रहे।

सड़क हादसे में घायल पीडब्ल्यूडी बेलदार की मौत

फतेहपुर। थरियांव थाना क्षेत्र के मोहम्मदपुर कला गांव निवासी स्व. बचानी पासवान का पुत्र रामदीन पीडब्ल्यूडी में बेलदार के पद पर तैनात था। 19 जुलाई को काम के सिलसिले में हुसैनगंज रोड जमालपुर गया था। तभी स्कूटी ने टक्कर मार दिया था। बुरी तरह घायल हो गया था। अस्पताल लाने पर चिकित्सक ने उसे कानपुर के लिए रेफर कर दिया था लेकिन पेसे के अभाव में कानपुर न ले जाकर घर पर ही इलाज करवा रहे थे। अचानक तबियत बिगड़ने पर आज उसकी मौत हो गई। पुलिस ने शव को विच्छेदन गृह भेज दिया।

ट्रक की टक्कर से बाइक सवार युवक की मृत्यु

राठ। जरिया क्षेत्र में मौरंग से लोड ट्रक ने बाइक सवार युवक को टक्कर मार दी जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गयी। इंदरपुरा गांव निवासी हरनारायण ने बताया कि रविवार की शाम करीब छह बजे उसका 39 वर्षीय पुत्र रोहित कुमार अपनी ससुराल चंडौत से बाइक द्वारा घर लौट रहा था। जैसे ही उसका पुत्र चंडौत स्टैंड गुलाब की दुकान के सामने पहुंचा तो तभी धगवां गांव की ओर से आ रहे मौरंग से भरे ओवरलोड ट्रक ने बाइक में टक्कर मार दी। जिससे उसके पुत्र की मौके पर ही मौत हो गई। बताया कि बाइक क्षतिग्रस्त हो गई है। जरिया थानाध्यक्ष भरत कुमार ने बताया कि पिता की तहरीर पर ट्रक चालक आशीष कुमार पुत्र कमलेश यादव निवासी नगला सवी पूर्वी थान चौविया जनपद इटावा के विरुद्ध लापरवाही से ट्रक चलाने का मुकदमा दर्ज किया है।

चुनाव हारे नहीं षड्यंत्र का शिकार हुए कार्यकर्ताः टेनी

रमियाबेहड़। चुनाव हारे नहीं बल्कि षड्यंत्र का शिकार हुए हमारे भाजपा कार्यकर्ता। मतदाता मायूस ना होकर पूरे उत्साह के साथ आगामी विधानसभा और लोकसभा चुनावों को लेकर अभी से रणनीत के तहत क्षेत्र में कार्य करना शुरू कर दें। यह संदेश सोमवार को रमियाबेहड़ के ब्लॉक समागार में आयोजित मतदाता अभिनंदन समारोह के दौरान पूर्व केंद्रीय गृह राज्य मंत्री अजय मिश्र टेनी ने दिया। इस दौरान पार्टी कार्यकर्ताओं ने पूर्व मंत्री मिश्रा का जोरदार स्वागत किया।

पूर्व सैनिक की कावड़ियों की ईको वैन से कुचलकर हुई मौत

फर्रुखाबाद। कावड़ियों से भरी ईको वैन ने पूर्व सैनिक को टक्कर मार दी जिससे उसकी इलाज के दौरान मौत हो गयी। थाना कादरी गेट के इटावा बरेली राष्ट्रीय राज मार्ग पर ग्राम नगला कलार के निकट अपने टाइल्स की दुकान के बाहर खड़े पूर्व सैनिक 60 वर्षीय बृजेश दीक्षित निवासी कन्नौज के थाना छिबरामऊ के ग्राम हरिहरपुर ने कुछ दिन पूर्व ही नगला कलार में अपना मकान बनवाया था। मकान के बाहरी हिस्से में दीक्षित टाइल्स नाम से टाइल्स की दुकान कर रखी थी। वह दुकान के बाहर आज सड़क किनारे खड़े हुए थे। बेवर की ओर से आ रही कांवड़ियों की ईको वैन ने टक्कर मार दी। जिससे पूर्व सैनिक बृजेश दीक्षित गंभीर रूप से घायल हो गए। पूर्व सैनिक को लोहिया में भर्ती किया गया जहाँ उपचार के बाद परिजन निजी अस्पताल में उपचार के लिए ले गये। उनकी हालत खराब होनें पर परिजन फिर लोहिया लेकर आये तो ईएमओ डा. अभिषेक चतुर्वेदी नें बृजेश को मृत घोषित किया।

मां की गला दबाकर हत्या के आरोप में प्रेमी के साथ गिरफ्तार

बांदा। उत्तर प्रदेश के बांदा में थाना अतर्रा क्षेत्र के बल्लान में 30.07.2024 को तालाब में बरामद हुए महिला के शव की घटना का थाना अतर्रा व एसओजी की संयुक्त पुलिस टीम द्वारा किया गया सफल अनावरण मृतका के पुत्री ने ही प्रेम.प्रसंग का पता चलने पर अपने प्रेमी के साथ मिलकर 29/30.07.2024 की रात्रि को घर के बाड़े में सोते समय महिला की गला दबाकर की थी हत्या तथा पुलिस को भ्रमित करने के उदेश्य से शव को गांव से बाहर तालाब में दिया था फेंक। जनपद में अपराध एवं अपराधियों पर नियंत्रण लगाये जाने तथा विभिन्न अभियोगों में वांछित चल रहे अभियुक्तों की गिरफ्तारी हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम में अपर पुलिस अधीक्षक बांदा लक्ष्मी निवास मिश्र व क्षेत्राधिकारी अतर्राध्नगर गवेन्द्र पाल गौतम के निकट पर्यवेक्षण में थाना अतर्रा क्षेत्र में 30.07.2024 को तालाब में बरामद महिला के शव की घटना का थाना अतर्रा व एसओजी की संयुक्त पुलिस टीम द्वारा सफल अनावरण करते हुए महिला की गला दबाकर हत्या करने वाली उसकी पुत्री व उसके प्रेमी को गिरफ्तार कर लिया गया जबकि घटना में शामिल एक अन्य अभियुक्त फरार है गिरफ्तारी के प्रयास किये जा रहे है। 30.07.2024 को थाना अतर्रा क्षेत्र के ग्राम चक्की पुरवा अंश बल्लान में एक महिला का शव तालाब में बरामद हुआ था जिसकी पहचान ग्राम बल्लान की रजुलिया उर्फ रजनिया पत्नी फूलचन्द्र के रुप में हुई थी। मृतका के पति फूलचन्द्र की तहरीर पर थाना अतर्रा पर अज्ञात के विरुद्ध सुसंगत धाराओं में अभियोग पंजीकृत करते हुए अभियुक्तों की पहचान व गिरफ्तारी के प्रयास किये जा रहे थे। संदिग्धों व अन्य से पूछताछ के क्रम में पता चला कि मृतिका रजुलिया को अपनी पुत्री नीतू वर्मा के गांव के ही एक युवक अतुल आरख के साथ प्रेम.प्रसंग का पता चल गया था जिस पर रजुलिया द्वारा अपनी पुत्री नीतू को डांटा फटकारा व गाली गलौज की गयी जिस पर क्रुद्ध हो गयी और अपने प्रेमी अतुल व एक अन्य साथी ददुआ के साथ मिलकर अपनी मां की हत्या की योजना बनायी।

डीएम ने की निराश्रित गौवंश संरक्षण अभियान एवं गौ आश्रय स्थल संचालन की समीक्षा, दिए निर्देश

- अभियान चलाकर निराश्रित गोवंशों को गौशालाओं में करें संरक्षितः डीएम

कानपुर देहात। डीएम आलोक सिंह की अध्यक्षता में निराश्रित गौवंश संरक्षण अभियान एवं गौ आश्रय स्थल संचालन के संबंध में समीक्षा बैठक मॉ मुक्तेश्वरी देवी सभागार कक्ष कलेक्ट्रेट में की गयी। बैठक में डीएम ने निर्देशित किया कि जो भी पशु डाक्टर या अधिकारी गौशालाओं के निरीक्षण में जायें वे संबंधित गौशालाओं में संरक्षित गौवंशों की संख्या की जांच जरूर करें। उन्होंने सभी पशु चिकित्सकों को निर्देशित किया कि गौशालाओं में संरक्षित गौवंशों का शत प्रतिशत ईयर टैगिंग की जायें, बीमार गौवंशों पर विशेष ध्यान दिया जाये, उन्हें अलग स्थान पर रखकर इलाज की उचित व्यवस्था सुनिश्चित की जायें। ब्लाक स्तर, तहसील स्तर पर गौशाला के सम्बन्ध में नियमित बैठक आयोजित की जायें। डीएम ने सड़कों अथवा खेतों में घूम रहे निराश्रित गौवंशों को सघन अभियान चलाकर गौशालाओं में संरक्षित करायें जाने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि हाईवे पर रात्रि के समय अभियान चलाकर गौवंशों को संरक्षित कराया जाये, हाईवे पर एक भी निराश्रित गोवंश न पाया जाए। इस कार्य में यातायात प्रबंधन के लिए पुलिस का भी सहयोग किया जाये। डीएम ने निर्माणाधीन गौशालाओं के निर्माण कार्य को शीघ्र पूर्ण करायें जाने के निर्देश दिये। भरण पोषण संबंधी मांग ससमय उच्च स्तर पर प्रेषित की जाये। पशुओं के भरण पोषण के लिए गौशालाओं में भूसा, चूनी, चोकर, पशु आहार आदि की पर्याप्त व्यवस्था सुनिश्चित की जाये, जिन गौशालाओं में वर्षा के दृष्टिगत कीचड़ आदि की समस्या देखी जा रही है वहां मिट्टी, बालू आदि डालकर पशुओं के रहने के लिए उचित व्यवस्था की जाये। जिन गौशालाओं में जलभराव होने की संभावना है वहां जल निकासी की व्यवस्था की जाये तथा जिन गौ आश्रय स्थलों तक पहुंच के मार्ग खराब है उन्हें शीघ्र दुरस्त करा लिया जाये।

संचारी रोग अभियान में सबसे ज्यादा क्षय रोगी व कुपोषित बच्चे किये गये चिंहित

- गांवों में गंदगी के चलते महामारी फैलने की आशंका, अनटाइड फंड का हुआ बंदरबाट, कार्यक्रम की हुई खानापूरी

संवाददाता। हमीरपुर

जिले में शासन स्तर पर चलाये जा रहे एक माह के संचारी रोग अभियान में सबसे ज्यादा गांवों की साफ सफाई में ध्वस्त पायी गयी है। वही तीन सौ तीन बच्चे कुपोषित व 136 लोग क्षय रोग से ग्रसित पाये गये है। वही आशा व आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों ने महज खानापूरी कर अभियान की इतिश्री कर दी है। जानकारी के मुताबिक संचारी रोग अभियानएक जुलाई से 31 जुलाई तक तक चलाया गया था। जिसमे एक दर्जन विभागों को लगाया गया था। स्वास्थ्य विभाग ने 11 से 31 जुलाई तक दस्तक अभियान संचालित किया गया था जिसमे कई विंदु शामिल है।

कार्यक्रम के नोडल अधिकारी आरके यादव ने बताया कि मुख्य विंदुओं में क्षय रोग थाजिसमे 136 लोग क्षय रोग सेग्रसित पाये गये वही केवल हमीरपुर शहर में 35 क्षय् रोगी पाये गये है सभी चिंहित किये गये क्षय रोगियों को इलाज कराने को कहा गया है।वही जांच में 303 मासूम बच्चे अतिकुपोषित पाये गये है जो चिंता का विषय बना हुआ है,जिला कार्यक्रम अधिकारी शैलेंद्र सिंह का कहना है कि जिले में अतिकुपोषित बच्चों की संख्या केवल नौ सौ है जब कि एक माह के अंतराल में तीन सौ बच्चे अतिकुपोषित पाये गये हैइससे साफ सावित होता है कि डीपीओ के सर्वे में कोई न कोई कमी अवश्य है। वही इतनी तादाद में क्षय रोगियों के मिलने से वर्ष 1925 टीबी उन्मूलन कार्यक्रम का समापन होना है। कैसे हो पायेगा। इसको लेकर तरह तरह की अटकले लगायी जा रही है। वही यूनीसेफके फील्ड मानीटरों का कहना है कि आशा बहुओ व आगनवाड़ी कार्यकत्रियो ने टीकाकरण व अन्य विंदुओ से ठीक से नही चेक किया है जिससे कार्यक्रम की स्थिति का ठीक से आकलन नही हो पा रहा है। ज्यादातरगांवों में साफ सफाई पूरी ध्वस्त पायी गयी है। जिससे संक्रामक रोगो को बढ़ावा मिला है। मुस्करा ब्लाक व राठ ब्लाक में दवा छिड़काव के लिये जो प्रधान व आंगनवाड़ी कार्यकत्री के ज्वाइंट खाते में जो अनटाइड फंड आता है उसका बंदरवाट कर लिया गया है वैसे जिले में इस फंड का सबसे ज्याादा दुरुपयोग बताया जाता है। जल जीवन मिशन कार्यक्रम में गाव्रों में जगह जगह लीकेज देखने को मिल रहे है। इसकी शिकायत जल संस्थान से की गयी है। कार्यक्रम मे योजनाओं की पोल पूरी तरह खुल कर सामने आ गयी है।

गंगा नदी में कूदे युवक को पुलिस ने गोताखोरों की मदद से बचाया

कन्नौज। गंगा नदी में कदकर आत्महत्या का प्रयास कर रहे युवक को मेंहदीघाट चौकी पुलिस द्वारा स्थानीय गोताखोर युवकों की मदद से बचा लिया गया। पुलिस अधीक्षक नें गोतताखोर युवकों को पुरूस्कृत कर उत्साहबर्धन किया। मंगलवार को 05:48 बजे पुलिस चौकी मेहंदी घाट प्रभारी चन्द्रभान सिंह द्वारा थाना कन्नौज पर सूचना दी गई कि एक व्यक्ति गंगा नदी में कूद गया है। तत्काल गंगा घाट पर कर्तव्यरत पुलिस टीम मुख्य आरक्षी सूर्य वली सिंह, शिवप्रसाद यादव, कांस्टेवल विपुल सिंह, विशाल, करन यादव, अमित कुमार, कृष्णवीर, मनोज नें मौके पर जाकर स्थानीय गोताखोरो मनोज, रवि, मोनू उर्फ फूलसिंह की सहायता से युवक को सकुशल बचा लिया गया। व्यक्ति द्वारा अपना नाम निजामुद्दीन पुत्र शफीर खान उम्र करीब 45 वर्ष निवासी ग्राम जलालपुर सरवन कोतवाली कन्नौज बताया व कर्ज हो जाने की वजह से गंगा में कूद गया। व्यक्ति के परिजनों की जानकारी कर उन्हें व्यक्ति को सकुशल सुपुर्द कर दिया गया है। व्यक्ति के परिजनों द्वारा थाना कन्नौज पुलिस टीम का आभार व्यक्त करते हुए कन्नौज पुलिस की प्रशंसा की गयी। वहीं पुलिस अधीक्षक अमित कुमार आनन्द द्वारा स्थानीय गोताखोर के सराहनीय कार्य के लिए व उनका उत्साहवर्धन हेतु प्रत्येक को दो-दो रुपये से पुरस्कृत किया गया।

गोताखोर युवको को पुरूस्कृत करते एसपी अमित कुमार आनन्द।

रिसोर्स रिकवरी सेंटर से स्वच्छता को मिलेगी रफ्तार, सीडीओ ने किया शुभारंभ

- समूह चलाएंगी आरआरसी सेंटर, कूड़ा कचरा का प्रबंधन कर बढ़ाएंगी आय

लखीमपुर खीरी। स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) फेज.2 के तहत ब्लॉक लखीमपुर की ग्राम पंचायत सलेमपुर में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन केन्द्र, रिसोर्स रिकवरी सेन्टर (आरआरसी) का फीता काटकर उद्घाटन किया। साथ ही घर.घर कूड़ा कलेक्शन वाहन (ई.रिक्शा) गाड़ी को हरीझंडी दिखाकर रवाना किया। इसके बनने से नपा की तर्ज पर गांव के लोगों का कूड़ा ठेला, ई.रिक्शा के माध्यम से आरआरसी सेंटर ले जाया जाएगा। सीडीओ अभिषेक कुमार ने उपस्थित प्रधान, सचिव को निर्देशित किया कि ग्राम पंचायतों में दुकानों, मैरिज लॉनों, हास्पिटल आदि अन्य प्रतिष्ठानों के स्वामियों के साथ बैठक कर डोर.टू.डोर कूड़ा संग्रहण कराने व शुल्क प्राप्त किया जाये तथा आरआरसी सेन्टर में निर्मित वर्मी कम्पोस्ट खाद की बिक्री के लिए उद्यान एवं वन विभाग आदि से समन्वय स्थापित कर ज़रूरी कार्यवाही करना सुनिश्चित करें। स्वयं सहायता समूहों को संबंधित पंचायतों से जोड़कर कूड़ा.कचरा का प्रबंधन कर उनकी आमदनी का साधन बनाया जायेगा। गांव के हर घर से कचरा कलेक्शन के लिए एक ठेला, ई.रिक्शा भी दिया जाएगा, प्रत्येक गांव के घर.घर से गीला व सूखा कचरे का अलग अलग इकट्ठा किया जायेगा।

सीडीओ ने कहा कि स्वच्छ भारत अभियान (ग्रा) का उद्देश्य ग्रामीणों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाना है। गांव को सुंदर और स्वच्छ बनाने के लिए लोगों के बीच जागरूकता भी फैलाई जाएगी। डीपीआरओ को गांवों को पूरी तरह से खुले में शौच मुक्त, पॉलीथिन मुक्त सामुदायिक प्रसाधन भवनों का निर्माण, ठोस व गीला कचरा निस्तारण प्रबंधन कर मॉडल गांव बनाने के लिए निर्देशित किया। स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण फेज.2) के तहत गांवों को कूड़ा कचड़ा मुक्त बनाने के उद्देश्य से लखीमपुर खीरी के चयनित गांवों में रिसोर्स रिकवरी सेन्टर (आरआरसी) का निर्माण कराया जा रहा है।

नवीकरणीय ऊर्जा सरकार की शीर्ष प्राथमिकता: प्रह्लाद जोशी

नई दिल्ली। केंद्रीय मंत्री प्रह्लाद जोशी ने मंगलवार को राज्यसभा में कहा कि 2030 तक 500 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता के देश के लक्ष्य को 30 लाख करोड़ रुपए तक के निवेश से पूरा होने की उम्मीद है। उन्होंने कहा कि नवीकरणीय ऊर्जा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अगुवाई वाली सरकार की शीर्ष प्राथमिकताओं में से एक है और यह इस तथ्य से साबित होता है कि इस साल बजट में परिव्यय को दोगुना कर 20,000 करोड़ रुपए से अधिक कर दिया गया है। नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री ने अपने मंत्रालय के कामकाज पर उच्च सदन में चर्चा का जवाब देते हुए कहा, भारत ने नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं के निवेश की गतिशीलता में एक महत्वपूर्ण बदलाव देखा है। पिछले 10 वर्षों में लगभग 7 लाख करोड़ रुपए पहले ही निवेश किए जा चुके हैं। उन्होंने कहा कि गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित 5,00,000 मेगावाट क्षमता स्थापित करने के लिए 30 लाख करोड़ रुपए का निवेश आने की उम्मीद है। उनके एक घंटे से अधिक लंबे जवाब के दौरान विपक्ष ने चीन के साथ संबंधों को लेकर कांग्रेस पार्टी पर उनकी टिप्पणी पर आपत्ति जताते हुए सदन से बहिर्गमन किया।

कांग्रेस पार्टी पर निशाना साधते हुए मंत्री ने कहा कि 2004 से 2014 के बीच 10 साल में तीन लाख करोड़ रुपए का निवेश भी नहीं आया। उन्होंने कहा, 2004 और 2014 के बीच, जब पूरी दुनिया नवीकरणीय ऊर्जा पर चर्चा कर रही थी और विकसित कर रही थी, कुल व्यय केवल 6,091 करोड़ रुपए था। उन्होंने कहा, इस वर्ष (उनके मंत्रालय के लिए) का बजट 21,000 करोड़ रुपए से अधिक है।

जोशी ने कहा, पिछले 10 वर्षों में कुल खर्च 36,952 करोड़ रुपए है। उन्होंने कहा कि इसके अलावा, पीएम सूर्य घर, पीएम कुसुम, नेशनल ग्रीन हाइड्रोजन मिशन, व्यवहार्यता गैप फंडिंग (वीजीएफ), और सौर मॉड्यूल के लिए पीएलआई जैसी योजनाएं भी शुरु की गई हैं। उन्होंने कहा, यह सब मिलाकर 1.60 लाख करोड़ रुपए के करीब होगा। कांग्रेस पर तंज कसते हुए उन्होंने कहा कि कांग्रेस शासन काल के दौरान तो 1.60 लाख करोड़ रुपए तक के घोटाले हो जाते थे। सरकार पंचमृत प्रतिबद्धताओं पर काम कर रही है, जिसमें उसने 2030 तक 500 गीगावॉट गैर-जीवाश्म ऊर्जा क्षमता प्राप्त करने और 2070 तक शुद्ध-शून्य कार्बन उत्सर्जन लक्ष्य तक पहुंचने का लक्ष्य रखा है।

चर्चा के दौरान विपक्षी सदस्यों ने संदेह जताया और पूछा कि सरकार 2030 तक 500 गीगावाट अक्षय ऊर्जा के लक्ष्य को कैसे हासिल कर पाएगी जबकि वर्तमान क्षमता केवल 200 गीगावाट की है। इसका जवाब देते हुए जोशी ने सदस्यों से सरकार पर भरोसा रखने को कहा। उन्होंने कहा, हम इसे 200 गीगावॉट तक ले गए हैं और 500 गीगावॉट के लक्ष्य को भी हासिल करेंगे।

उन्होंने कहा कि पिछले 10 वर्षों में भारत में उत्पादित कुल नवीकरणीय ऊर्जा 193.5 अरब यूनिट से बढ़कर 359.89 अरब यूनिट हो गई है। जोशी ने कहा, अब भारत स्थापित क्षमता के मामले में वैश्विक स्तर पर चौथे स्थान पर है। उन्होंने कहा कि भारत पवन ऊर्जा क्षमता में चौथे स्थान पर और सौर पीवी क्षमता में पांचवें स्थान पर है। मंत्री ने कहा कि आज की तारीख में सौर ऊर्जा की कुल स्थापित क्षमता 85.4 गीगावॉट है और 74.34 गीगावॉट और 104 गीगावॉट क्षमता की नवीनतम निविदा कार्यान्वयन के अधीन है।

कांग्रेस सदस्य रंजीत रंजन की टिप्पणी मोदी चीनी भाई भाई के जवाब में जोशी ने कहा कि यह टिप्पणी एक राजनीतिक दल के सदस्य की ओर से आई है जिसने अपनी पार्टी को चलाने के लिए चीन से चंदा लिया है। उन्होंने कहा, ...जमीन हमने 1962 में खो दी। उन्होंने कहा मोदी चीनी भाई भाई। वे लोग हैं। जिस पार्टी ने अपनी पार्टी चलाने के लिए चीन से चंदा लिया है, वह हमें उपदेश देती है। जब वे विपक्ष में थे, तो वे गुप्त रूप से किससे मिले? चीनी राजदूत।

रंजन ने कहा था कि अक्षय ऊर्जा क्षेत्र चीन से आयात पर निर्भर है। जोशी ने कहा कि (विपक्षी) सदस्यों ने वैश्विक स्तर पर सौर ऊर्जा में चौथे और नवीकरणीय ऊर्जा में पांचवें स्थान पर देश के प्रदर्शन को स्वीकार नहीं किया। विपक्ष ने जोशी की टिप्पणी पर आपत्ति जताई और उपसभापति हरिवंश से आग्रह किया कि वह मंत्री को उनकी टिप्पणी को प्रमाणित करने के लिए कहें। इसके बाद विपक्षी सदस्य सदन से बहिर्गमन कर गए लेकिन जोशी ने उन पर हमला जारी रखा। उन्होंने कहा कि विपक्षी सदस्य तथ्यों के बिना आरोप लगाते हैं और उनमें जवाब सुनने का धैर्य नहीं है।

जल्द सुनवाई के बार-बार के आग्रह से नाराज हुए सीजेआई वकील से एक दिन के लिए पीठ में बैठने को कहा

नई दिल्ली। शिवसेना के विधायकों को अयोग्य करार देने से संबंधित मामले की जल्द सुनवाई के लिए एक वकील के बार-बार आग्रह करने से नाराज प्रधान न्यायाधीश (सीजेआई) डी वाई चंद्रचूड़ ने उनसे कहा, एक दिन के लिए यहां बैठिए। मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं कि आप अपनी जान छुड़ाकर भागेंगे। प्रधान न्यायाधीश चंद्रचूड़ और न्यायमूर्ति जे.बी. पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ महाराष्ट्र के राजनीतिक विवादों से संबंधित दो अलग-अलग याचिकाओं पर सुनवाई की तारीखें तय कर रही थी। उद्धव ठाकरे गुट ने महाराष्ट्र विधानसभा अध्यक्ष राहुल नार्वेकर के उस आदेश को चुनौती दी है, जिसमें जून 2022 में शिवसेना में विभाजन के बाद मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाले गुट को असली राजनीतिक दल घोषित किया गया है।

दूसरी याचिका राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के शरद पवार गुट द्वारा दायर की गई है, जिसमें नार्वेकर के उस फैसले को चुनौती दी गई है, जिसमें उपमुख्यमंत्री अजित पवार के नेतृत्व वाले गुट को असली राकांपा घोषित किया गया था। हाल में, शीर्ष अदालत ने शरद पवार गुट की याचिका पर अजित पवार और उनके 40 विधायकों को नोटिस जारी किया था। शुरुआत में, प्रधान न्यायाधीश ने कहा कि शिवसेना के मामले में दलीलें पूरी हो चुकी हैं। राकांपा से जुड़े विवाद मामले को सूचीबद्ध करते समय पीठ ने अजित पवार गुट की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता एन. के. कौल की इस दलील पर गौर किया कि शरद पवार समूह की याचिका पर जवाब दाखिल करने के लिए तीन हफ्ते का समय दिया जाना चाहिए।

शीर्ष अदालत ने अंततः अजित पवार गुट और उसके 40 विधायकों को जवाब दाखिल करने के लिए 10 दिन का समय दिया तथा कहा कि इसके बाद याचिका पर सुनवाई की जाएगी। इस बीच, उद्धव ठाकरे गुट की ओर से पेश हुए एक वकील ने नजदीक की तारीख देने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव करीब हैं और मामले को जल्द सूचीबद्ध किया जाना चाहिए। वकील ने कहा कि दस्तावेजों का संकलन दो-तीन दिनों में तैयार किया जा सकता है। सीजेआई ने कहा, कृपया न्यायालय को आदेश न दें। उन्होंने कहा, आप एक दिन के लिए यहां आकर क्यों नहीं बैठते और कोर्ट मास्टर को बता देते कि आपको कौन सी तारीख चाहिए। आप देख सकते हैं कि न्यायालय पर काम का कितना बोझ है...कृपया एक दिन के लिए यहां आकर बैठिए। मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं कि आप अपनी जान छुड़ाकर भागेंगे।

दिग्विजय, सुरजेवाला ने कृषि मंत्री के खिलाफ विशेषाधिकार हनन का नोटिस दिया

भाषा। नई दिल्ली

कांग्रेस सांसदों दिग्विजय सिंह और रणदीप सुरजेवाला ने मंगलवार को कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान के खिलाफ विशेषाधिकार हनन का नोटिस दिया और उन पर राज्यसभा को गुमराह करने का आरोप लगाया। राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ को सौंपे नोटिस में कांग्रेस के दोनों वरिष्ठ नेताओं ने चौहान द्वारा सदन में दिए गए कुछ बयानों का उल्लेख किया और कहा कि कृषि मंत्री ने तथ्यात्मक रूप से गलत बात की। सुरजेवाला ने एक्स पर नोटिस साझा करते हुए कहा, मैंने और दिग्विजय सिंह जी ने केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान के खिलाफ विशेषाधिकार हनन का नोटिस दिया। जो किसानों की आजीविका को छेड़ेगा, उसकी जबाबदेही तो होगी। नोटिस में दोनों नेताओं ने सभापति से आग्रह किया कि नियम 187 के तहत कृषि मंत्री के खिलाफ विशेषाधिकार हनन प्रस्ताव की अनुमति दी जाए, नियम 190 के तहत मामले को सदन में उठाने की अनुमति प्रदान की जाए तथा नियम 191 के तहत इस मामले को विशेषाधिकार समिति के पास भेजा जाए। चौहान ने सोमवार को कांग्रेस को किसान विरोधी करार देते हुए राज्यसभा में राजनीतिक दलों से अपील की थी कि वे किसानों को वोट बैंक मानना बंद करें तथा उनके साथ इंसान की तरह व्यवहार करें। उच्च सदन में कृषि मंत्रालय के कामकाज पर हुई चर्चा का जवाब देते हुए कृषि मंत्री ने कहा था कि प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि से न केवल छोटे एवं सीमांत किसान सशक्त हुए, बल्कि उनका सम्मान भी बढ़ा है।

पश्चिम बंगाल में स्वास्थ्य केंद्रों के रंग निर्धारण मानकों को लेकर जेपी नड्डा और डेरेक ओ ब्रायन में नोकझोंक

भाषा। नई दिल्ली

स्वास्थ्य और कल्याण केंद्रों के लिए रंग निर्धारण संबंधी दिशानिर्देशों और पश्चिम बंगाल को राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम) के तहत धन जारी करने के मुद्दे पर मंगलवार को राज्यसभा में केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री जे पी नड्डा तथा तृणमूल कांग्रेस के सदस्य डेरेक ओ ब्रायन के बीच नोकझोंक हो गई।

नड्डा तृणमूल कांग्रेसके सदस्य साकेत गोखले द्वारा राज्यसभा में प्रश्नकाल के दौरान पूछे गए एक पूरक प्रश्न का उत्तर दे रहे थे। गोखले ने पूछा कि क्या यह सच है कि केंद्र सरकार ने रंग निर्धारण संबंधी निर्देश का पालन नहीं करने के मामूली से कारण को लेकर एनएचएम के तहत पश्चिम बंगाल को दी जाने वाली 828 करोड़ रुपए की धनराशि रोक दी गई है? उन्होंने मंत्री से हां या ना में यह बताने का अनुरोध किया। उन्होंने यह भी जानना चाहा कि बकाया राशि कब जारी की जाएगी ?

इस पर केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री नड्डा ने कहा, यदि आप दिशानिर्देशों का पालन करते हैं, तो हां। यदि आप दिशानिर्देशों का पालन नहीं करते हैं, तो नहीं। नड्डा के जवाब के बाद तृणमूल सदस्य डेरेक ओ ब्रायन ने कहा मैं यहाँ किसी तर्क-वितर्क में शामिल होने नहीं आया हूँ। मेरे सहयोगी (गोखले) ने जो सरल बात कही थी, वह यह थी कि हाँ, हम हमेशा इसका अनुपालन करेंगे। लेकिन हमारा कहना यह था कि जब लोग स्वास्थ्य लाभ नहीं उठा पा रहे हैं, तो रंग निर्धारण वाली किसी भी योजना का अनुपालन करना थोड़ा अतिशयोक्तिपूर्ण है। किसी रंग के लिए नहीं बल्कि हम इसे इस भावना के साथ लेंगे कि यह किसी और चीज़ के लिए हो। सिर्फ़ इसलिए कि यह आपका पसंदीदा रंग नहीं है, लोगों को स्वास्थ्य लाभ नहीं मिल पा रहा है।

इस पर नड्डा ने कहा, पहला सवाल काले और सफेद रंग में था, इसलिए जवाब भी काले और सफेद रंग में ही था। अब सवाल मेरे प्रिय मित्र डेरेक ओ ब्रायन की ओर से आया है और उनके बाल सफेद हैं। इसलिए जवाब भी सफेद रंग में ही होगा, जिसमें कुछ सकारात्मकता भी है। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने पिछले साल नवंबर में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को पत्र लिखकर उनसे स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्रों के लिए रंग निर्धारण की शर्तों को हटाने और बंगाल को एनएचएम कोष जारी करने के लिए हस्तक्षेप करने का आग्रह किया था।

प्रधानमंत्री को लिखे अपने दो पन्नों के पत्र में उन्होंने कहा था कि केंद्र द्वारा कोष रोके जाने से गरीब लोग अपने स्वास्थ्य लाभ से वंचित हो जाएंगे। उन्होंने लिखा, यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है ... हाल ही में मुझे सूचित किया गया है कि केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्रों के लिए रंग निर्धारण दिशा-निर्देशों का पालन न करने के कारण पश्चिम बंगाल को राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम) के तहत कोष जारी करने से रोक दिया है, जबकि अन्य शर्तें पूरी की गई थीं। बनर्जी ने कहा कि वर्तमान में राज्य में लगभग 11,000 स्वास्थ्य और कल्याण केंद्र हैं जो प्रतिदिन तीन लाख से अधिक लोगों की सेवा करते हैं। उन्होंने कहा कि इमारतों का निर्माण 2011 में जब टीएमसी के सत्ता में आने के बाद से राज्य में रंग निर्धारण के अनुसार किया गया है। बंगाल में सरकारी इमारतों को ज्यादातर नीले और सफेद रंग से रंगा जाता है।

व्हाट्सऐप पर जिलाधिकारी की तस्वीर लगाकर सदर तहसीलदार से 50,000 रुपए की ठगी

बदायूं। उत्तर प्रदेश के बदायूं में साइबर अपराधियों ने व्हाट्सऐप में डिस्प्ले पिक्चर पर जिलाधिकारी की तस्वीर लगाकर तहसीलदार से कथित रूप से 50 हजार रुपए ठग लिए। त्वरित संदेश भेजने की सुविधा प्रदान करने वाली ऐप्लीकेशन व्हाट्सऐप पर उपयोगकर्ता द्वारा लगाई जाने वाली तस्वीर को डिस्प्ले पिक्चर कहा जाता है। तहसीलदार (सदर) सुरेंद्र सिंह ने मंगलवार को बताया कि वह रविवार शाम कांवड़ यात्रा की ड्यूटी में तैनात थे तभी उनके पास एक व्हाट्सऐप नंबर से संदेश आया, जिसमें उनसे एक खाते में तत्काल 50 हजार रुपए हस्तांतरित करने को कहा गया था। सिंह ने बताया कि इस व्हाट्सऐप नंबर पर बदायूं की जिलाधिकारी निधि श्रीवास्तव की तस्वीर लगी थी और उस पर उनका नाम भी दिख रहा था। उन्होंने बताया कि उन्होंने करीब आधे घंटे बाद वह संदेश देखा और तब तक मोबाइल पर एक और संदेश आया कि अभी तक रुपए क्यों नहीं भेजे गए। सिंह ने कहा कि इससे वह हड़बड़ा गए और उन्होंने व्हाट्सऐप नंबर की पुष्टि किए बगैर ही बताए गए खाते में 50 हजार रुपए डाल दिए। उन्होंने बताया कि इसके कुछ देर बाद उनके नंबर पर एक और संदेश आया, जिसमें 50,000 रुपए की फिर से मांग की गई। सिंह ने बताया कि उन्होंने शक होने पर निधि श्रीवास्तव को फोन किया और जिलाधिकारी ने बताया कि उन्होंने इस तरह का कोई भी संदेश नहीं भेजा था। अपर पुलिस अधीक्षक (नगर क्षेत्र) अमित किशोर श्रीवास्तव ने बताया कि इस मामले में अज्ञात लोगों के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच की जा रही है। जांच के दौरान पता चला है कि जिस व्हाट्सऐप नंबर से तहसीलदार सदर के पास संदेश आया था वह नंबर तो भारत का है मगर उसे श्रीलंका से इस्तेमाल किया जा रहा है जबकि जिस बैंक खाते में धनराशि भेजने के लिए कहा गया था वह बेंगलुरू का है।

जरांगे ने मराठा समुदाय से आगामी महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के लिए तैयारी करने को कहा

जालना (महाराष्ट्र)। मराठा आरक्षण कार्यकर्ता मनोज जरांगे ने मंगलवार को मराठा समुदाय से आगामी महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के लिए तैयार रहने को कहा। जरांगे ने कहा कि अगर उन्हें (मराठा) आरक्षण चाहिए तो उनके पास राजनीति में आने और सत्ता हासिल करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। जालना जिले के अंतरवाली सराती गांव में पत्रकारों से बातचीत के दौरान जरांगे ने विश्वास जताया कि महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के बाद मराठा राज्य की सत्ता में आएंगे। महाराष्ट्र में इस साल अक्टूबर में विधानसभा चुनाव होने की संभावना है। वह राजनीति में प्रवेश नहीं करना चाहते, लेकिन मराठा समुदाय के लिए आरक्षण सुनिश्चित करने की आवश्यकता उन्हें ऐसा करने के लिए मजबूर कर सकती है। उन्होंने विश्वास जताया कि मराठा, मुस्लिम और दलित आगामी चुनाव में महत्वपूर्ण बदलाव लाएंगे, जो हाल के लोकसभा चुनाव में देखी गई लहर के समान होगा। जरांगे ने कहा, यदि हम मराठा समुदाय के लिए आरक्षण चाहते हैं तो हमारे पास राजनीति में प्रवेश करने और सत्ता में आने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। उन्होंने इच्छुक उम्मीदवारों से चुनाव की तैयारी करने का आग्रह किया तथा संकेत दिया कि उनके राजनीतिक प्रवेश के संबंध में निर्णय 29 अगस्त को होने वाली बैठक में किया जाएगा। उन्होंने दावा किया, जहां नेता अपने-अपने दलों से जुड़े हुए हैं, वहीं आम लोग हमारे साथ हैं। जरांगे ने उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस पर मराठा नेताओं को उनके खिलाफ भड़काने का आरोप लगाया। फडणवीस ने मराठा आरक्षण के खिलाफ एक अभियान की योजना बनाई थी और दावा किया कि उपमुख्यमंत्री के इशारे पर समुदाय के कुछ नेता आरक्षण की मांग के प्रयासों को कमजोर करने की कोशिश कर रहे हैं। हम राज्य में अशांति पैदा करने के फडणवीस के सपने को नाकाम कर देंगे। महाराष्ट्र एक शांतिपूर्ण राज्य है जहां सभी धर्मों और जातियों के लोग सौहार्दपूर्वक रहते हैं।

हरित ऊर्जा देश के लिए आवश्यक, परियोजनाओं को मिले अधिक सब्सिडी : विपक्ष

नई दिल्ली। भारत को ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के लिए हरित ऊर्जा पर बल दिए जाने की आवश्यकता को स्वीकार करते हुए विपक्षी दलों के सदस्यों ने मंगलवार को सुझाव दिया कि सौर एवं पवन ऊर्जा की परियोजनाओं को प्रोत्साहन देने के लिए अधिक सब्सिडी दी जानी चाहिए। नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय के कामकाज पर राज्यसभा में हुई चर्चा में भाग लेते हुए विभिन्न विपक्षी दलों के सदस्यों ने यह भी मांग की कि सौर पैनल और पंप लगाने को प्रोत्साहन देने के लिए बैंकों को निर्देश दिया जाए कि वे किसानों को सुगमता से ऋण प्रदान करें।

चर्चा में भाग लेते हुए राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) की फौजिया खान ने कहा कि भारत ने 2070 तक शून्य कार्बन उत्सर्जन की प्रतिबद्धता जताई है। उन्होंने कहा कि कार्बन उत्सर्जन पर लगाम कसने के मामले में भारत अभी पीछे चल रहा है। उन्होंने कहा कि कार्बन उत्सर्जन पर रोक के लिए नवीन ऊर्जा को अपनाना अति आवश्यक हो गया है। उन्होंने महाराष्ट्र राज्य का उदाहरण देते हुए कहा कि यह नवीन ऊर्जा के उत्पादन में मामले में काफी प्रगति कर सकता है किंतु यह अभी लक्ष्य से पीछे चल रहा है।

खान ने कहा कि सौर ऊर्जा के मामले में हमें योजनाओं के क्रियान्वयन पर ध्यान देना होगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री सौर घर योजना निश्चित रूप से लाभकारी है विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों के लिए, क्योंकि वहां बिजली की आपूर्ति काफी अनियमित होती है। उन्होंने कहा कि किसानों को सौर पैनल एवं सौर पंप लगाने के लिए बैंक से ऋण लेना बहुत ही मुश्किल है। उन्होंने सरकार से विनती की कि किसानों को आसानी से ऋण देने के लिए वह बैंकों को निर्देश दे अन्यथा यह महत्वपूर्ण योजना कागजों तक ही सिमट जाएगी। अन्नाद्रमुक सदस्य एम थंबीदुरै ने चर्चा में भाग लेते हुए कहा कि केंद्रीय बजट 2024-25 में नवीन एवं नवीनीकरण ऊर्जा मंत्रालय के लिए 19,100 करोड रूपए आवंटित किए गए हैं।

उन्होंने कहा कि उनके प्रदेश तमिलनाडु में पवन ऊर्जा एवं सौर ऊर्जा के उत्पादन की विपुल संभावनाएं हैं। उन्होंने केंद्र सरकार से मांग की कि दक्षिण के इस राज्य को इन दोनों ऊर्जा की परियोजनाओं को स्थापित करने में प्रोत्साहन देने के लिए अधिक सब्सिडी और प्रोत्साहन राशि दी जानी चाहिए। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के संदोष कुमार पी ने कहा कि हमें अपनी अगली पीढ़ी को स्वच्छ पर्यावरण सौंपना है इसलिए देश को अपने पर्यावरण के लिए बहुत सतर्क रहना पड़ेगा। उन्होंने सरकार के रुख में विरोधाभास होने का दावा करते हुए कहा कि एक तरफ तो वह नवीन एवं नवीनकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा दे रही है वहीं वह परंपरागत ऊर्जा को भी प्रोत्साहन दे रही है। उन्होंने कहा कि देश में कोयला अधारित नए बिजली संयंत्र शुरू किए जा रहे हैं, ऐसे में वैकल्पिक ऊर्जा को प्रोत्साहन कैसे मिलेगा?

संदोष ने मिसाल देते हुए कहा कि बिजली उत्पादन में कोयला आधारित संयंत्रों का योगदान पहले ही 50 प्रतिशत है तथा कोयला आधारित संयंत्रों की क्षमता बढ़ाई जा रही है। उन्होंने कहा, हाल में 13.9 जीडब्ल्यू की क्षमता वाला बिजली संयंत्र स्थापित किया गया है...इसका मतलब है कि एक तरफ तो हम कोयले को प्रोत्साहन दे रहे हैं... मुझे संदेह है कि क्या अडाणी समूह हमारी सरकार की बिजली नीति को दिशानिर्देश दे रहा है। हाल में अडाणी (समूह) के एक शीर्ष अधिकारी ने कहा था कि भारत आने वाले वर्षों में भी कोयले का आयात जारी रखेगा। वो ऐसा कैसे कह सकते हैं? मैं यही कहना चाहता हूं कि हम कोयला आयात को कैसे बढ़ावा देना जारी रख सकते हैं।

उन्होंने छत पर सोलर पैनल लगाए जाने को प्रोत्साहन देने और उनके लिए सब्सिडी मुहैया कराने का सुझाव दिया। उन्होंने केरल के हाउस बोट को सोलर पैनल प्रणाली में तब्दील करने की मांग की जिससे राज्य के पर्यटन को प्रोत्साहन मिल सके। उन्होंने कहा कि राज्य में अभी तक ऐसे हाउस बोट डीजल पंप सेट से चल रहे हैं। असम गण परिषद के वीरेंद्र प्रसाद वैश्य ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में वर्तमान सरकार ने नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा पर पिछले दस वर्ष से जो जोर दिया है, उसके परिणाम अर्थव्यवस्था में स्पष्ट परिलक्षित हो रहे हैं। ताप बिजली परियोजनाएं पर्यावरण के लिहाज से ठीक नहीं हैं वहीं पर्वतीय क्षेत्र में स्थित पनबिजली परियोजनाएं भी भूकंप आदि की दृष्टि से सुरक्षित नहीं हैं। छोटी पनबिजली परियोजनाओं को अवश्य प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि जर्मनी जैसे कुछ देश परमाणु बिजली परियोजनाओं से हाथ खींच रहे हैं। उन्होंने कहा कि इन बातों को देखते हुए नवीकरणीय ऊर्जा पर सबसे अधिक ध्यान देने की जरूरत है।

वैश्य ने सुझाव दिया कि लद्दाख और अरुणाचल प्रदेश में सौर ऊर्जा परियोजनाओं को प्रोत्साहन देना चाहिए। शवसेना की प्रियंका चतुर्वेदी ने चर्चा में भाग लेते हुए कहा कि महाराष्ट्र में एक नया ऊर्जा मॉडल निकला है, जो सत्ता को मजबूत करने का काम करता है। उन्होंने कहा कि यह मॉडल है, खोखे लो, धोखे दो मॉडल।

उन्होंने राज्यसभा में दिए गए एक प्रश्न के लिखित जवाब के हवाले से कहा कि महाराष्ट्र में अनुमानित पवन ऊर्जा की क्षमता 98,213 मेगावाट है किंतु राज्य में इसका मात्र पांच प्रतिशत उत्पादन हो रहा है। इसी प्रकार राज्य में लघु पनबिजली परियोजनाओं में अनुमानित क्षमता का मात्र 48 प्रतिशत उत्पादन तथा सौर ऊर्जा की अनुमानित क्षमता का मात्र 60 प्रतिशत उत्पादन हो रहा है। चतुर्वेदी ने कहा कि महाराष्ट्र में पीएम कुसुम योजना के तहत विभिन्न मदों में स्वीकृति के बावजूद जमीन पर कोई काम नहीं हुआ। इसे महाराष्ट्र के साथ अन्याय करार दिया। सरकार एक ओर आत्मनिर्भरता की बात करती है वहीं देश में 50 प्रतिशत से अधिक सोलर पैनल का चीन से आयात किया जा रहा है। झारखंड मुक्ति मोर्चा की महुआ माझी ने कहा कि सोलर पैनल को प्रोत्साहन देने के साथ ही इस बात पर भी विचार करना चाहिए कि इससे पर्यावरण को नुकसान पहुंच सकता है। पनबिजली के लिए बनाए जाने वाले बड़े-बड़े बांधों से लोगों का विस्थापन होता है, पवन बिजली परियोजनाओं से पक्षियों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। उन्होंने सरकार को हरित ऊर्जा को प्रोत्साहन देने के मामले में सतर्कता के साथ आगे बढ़ने का सुझाव दिया।

पुरोहित ने अध्यक्ष का कार्यभार संभाला

नई दिल्ली। पंजाब के पूर्व राज्यपाल बनवारी लाल पुरोहित ने भारतीय विद्या भवन के दिल्ली केंद्र के अध्यक्ष का कार्यभार संभाल लिया है। संस्थान ने मंगलवार को जारी एक बायन में बताया कि पुरोहित ने कार्यकारी सदस्यों की अपनी नई टीम के साथ सोमवार को कार्यभार संभाला। पुरोहित संपूर्ण भारतीय विद्या भवन संस्थानों के उपाध्यक्ष भी हैं। पुरोहित (84) ने अगस्त 2021 से जुलाई 2024 तक पंजाब के 29वें राज्यपाल के तौर पर सेवाएं दी हैं।

पेज 1 का शेष

हिंसा ग्रस्त...

सूत्रों ने बताया कि सर्वदलीय बैठक में जयशंकर ने उन्हें बताया कि भारत ने सोमवार शाम यहां पहुंची बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना को मदद का आश्वासन दिया है और उन्हें भविष्य की कार्रवाई तय करने के लिए समय दिया है। सूत्रों ने बताया कि संसद भवन में राजनीतिक दलों के नेताओं को जानकारी देते हुए जयशंकर ने कहा कि भारत ने बांग्लादेश के सेना प्रमुख से उस देश में 10,000 से अधिक भारतीय छात्रों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए बात की है। विपक्ष के नेता राहुल गांधी सहित विभिन्न नेताओं के सवालों का जवाब देते हुए मंत्री ने देश में अशांति में विदेशी सरकारों की भूमिका से इनकार नहीं किया, लेकिन इस बात पर जोर दिया कि स्थिति बहुत अस्थिर है और सरकार बदलती स्थिति पर नजर रख रही है। बैठक में राहुल गांधी ने पूछा कि क्या विदेशी सरकारें वहां संकट को बढ़ावा देने में शामिल हो सकती हैं। जयशंकर ने कहा कि पड़ोसी देश में प्रदर्शनकारियों ने अल्पसंख्यकों के घरों और संपत्तियों को निशाना बनाया। हसीना को भारत आए हुए 24 घंटे भी नहीं हुए हैं। वह सदमे की स्थिति में हैं और सरकार भविष्य की योजनाओं सहित विभिन्न मुद्दों पर उनसे बात करने से पहले उन्हें ठीक होने का समय दे रही है। राहुल गांधी सहित विभिन्न नेताओं ने इस मुद्दे पर सरकार को अपना पूरा सहयोग देने की बात कही। वाईएसआर कांग्रेस के नेता वी विजयसाई रेड्डी ने कहा कि उनकी पार्टी देश के हित में सरकार का समर्थन करती है। बैठक के बाद सोशल मीडिया पर जयशंकर ने कहा, बांग्लादेश में चल रहे घटनाक्रम के बारे में आज संसद में राजनीतिक दलों के नेताओं के साथ सर्वदलीय बैठक में बांग्लादेश की मौजूदा स्थिति के बारे में जानकारी देते हुए जयशंकर ने कहा कि भारत पड़ोसी देश में मौजूद 10 हजार से अधिक भारतीय छात्रों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए बांग्लादेशी सेना के संपर्क में है। भाजपा के राज्यसभा सदस्य लहर सिंह सिरोया ने कहा कि सरकार और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पूरे मामले पर नजर बनाए हुए हैं। उन्होंने कहा, वे जरूरी कदम उठा रहे होंगे। हमारा देश इस मुद्दे से निपटने में सक्षम है। सर्वसम्मति से मिले समर्थन और समझ की सराहना करते हैं। सर्वदलीय बैठक में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, गृह मंत्री अमित शाह, स्वास्थ्य मंत्री जे पी नड्डा, जेडी(यू) नेता और केंद्रीय मंत्री राजीव रंजन सिंह ललन, जेडी (एस) नेता और केंद्रीय मंत्री एचडी कुमारस्वामी, लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी, डीएमके नेता टीआर बालू, एसपी नेता राम गोपाल यादव, तृणमूल नेता सुदीप बंद्योपाध्याय, एनसीपी नेता सुप्रिया सुले समेत अन्य लोग शामिल हुए। इस बीच आम आदमी पार्टी ने दावा किया कि संसद में उसके लोकसभा में 3 और राज्यसभा में 10 सदस्य होने के बावजूद उसे सर्वदलीय बैठक में हिस्सा लेने के लिए आमंत्रित नहीं किया गया। राष्ट्रीय सुरक्षा का मसला इस बात पर निर्भर नहीं करता है कि प्रधानमंत्री किस पार्टी से खुश हैं या किस पार्टी से नाराज हैं। जब भी राष्ट्रीय सुरक्षा की बात आती है तो प्रधानमंत्री को सबको साथ लेकर चलना होता है।

अभी लंदन...

के कारण अटक गई है और अगले कुछ दिनों तक उनके भारत से बाहर जाने की संभावना नहीं है। ब्रिटेन के विदेश मंत्री डेविड लैमी ने सोमवार को लंदन में एक बयान में कहा कि बांग्लादेश ने पिछले कुछ हफ्तों में अभूतपूर्व स्तर की हिंसा और जान-माल की दुखद हानि देखी है और देश के लोग घटनाओं की संयुक्त राष्ट्र के नेतृत्व में पूर्ण और स्वतंत्र जांच के हकदार हैं। मामले की जानकारी रखने वाले सूत्रों ने बताया कि हसीना ने भारत को अपने संभावित भावी कदमों के बारे में जानकारी दे दी है। यह भी पता चला है कि हसीना के परिवार के सदस्य फिनलैंड में भी हैं और इसीलिए उन्होंने उत्तरी यूरोपीय देश जाने पर भी विचार किया है। सूत्रों ने कहा कि हसीना की यात्रा योजनाओं में कुछ अड़चन आ गई हैं और वह अगले कुछ दिनों तक भारत में ही रह सकती हैं। उन्होंने स्थिति को गतिशील भी बताया और कहा कि इस मामले में कोई निश्चित रास्ता या स्पष्टता नहीं है। सूत्रों ने बताया कि प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा देने के कुछ घंटों बाद सोमवार को सी-130जे सैन्य परिवहन विमान से हिंडन एयरबेस पर उतरने वाली हसीना को कड़ी सुरक्षा के बीच एक अज्ञात स्थान पर ले जाया गया है। बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री अपनी बहन शेख रेहाना के साथ अस्थायी शरण लेने के लिए भारत से लंदन जाने की योजना बना रही थीं, लेकिन अभी इस विकल्प पर विचार नहीं किया जा रहा है। हसीना ने लंदन जाने का फैसला इसलिए किया क्योंकि रेहाना की बेटी ट्यूलिप सिद्दीक ब्रिटिश संसद की सदस्य हैं। ट्यूलिप ट्रेजरी की आर्थिक सचिव और हैम्पस्टेड और हाईगेट से लेबर सांसद हैं। सूत्रों ने बताया कि हसीना ने नई दिल्ली को अपने संभावित भविष्य के कदमों के बारे में अवगत करा दिया है। यह भी पता चला है कि हसीना के परिवार के सदस्य फिनलैंड में भी हैं और इसीलिए उन्होंने उत्तरी यूरोपीय देश जाने पर भी विचार किया।

नीरज...

के स्वर्ण पदक विजेता पाकिस्तान के अरशद नदीम (86.59 मीटर), ब्राजील के लुईस मॉरीसियो डा सिल्वा (85.91 मीटर) और मालदोवा के एंड्रियन मारडेयर (84.13 मीटर) ने भी भाले को 84 मीटर से अधिक दूर फेंककर सीधे फाइनल में जगह बनाई। भारत के किशोर जेना हालांकि ग्रुप ए क्वालीफिकेशन में 80.73 मीटर के प्रयास से नौवें और कुल 18वें स्थान पर रहे और शीर्ष 12 खिलाड़ियों में जगह बनाकर फाइनल में प्रवेश करने के नाकाम रहे। ग्रुप ए और बी क्वालीफिकेशन के बाद 84 मीटर या इससे अधिक का थ्रो करने वाले सभी खिलाड़ी या दोनों ग्रुप से शीर्ष 12 खिलाड़ियों ने फाइनल के लिए क्वालीफाई किया। जेना ने अपने पहले प्रयास में भाले को 80.73 मीटर की दूरी तक फेंका लेकिन अपने दूसरे प्रयास में फाउल कर गए। उन्होंने अपने तीसरे और अंतिम प्रयास में भाले को 80.21 मीटर की दूरी तक फेंका। जर्मनी के जूलियन वेबर अपने पहले ही प्रयास में 87.76 मीटर के प्रयास से ग्रुप ए में शीर्ष पर और कुल तीसरे स्थान पर रहे और फाइनल के लिए क्वालीफाई कर गए। ग्रुप ए से कीनिया के पूर्व विश्व चैंपियन जूलियस एगो (85.97 मीटर), तोक्यो ओलंपिक के रजत पदक विजेता चेक गणराज्य के याकुब वालडेच (85.63 मीटर) और फिनलैंड के टोनी केरानेन (85.27 मीटर) ने भी सीधे फाइनल में जगह बनाई। नीरज अब फाइनल में ओलंपिक के इतिहास में खिताब बरकरार रखने वाले पांचवां पुरुष भाला फेंक खिलाड़ी बनने के इरादे से उतरेंगे। अगर वह खिताब जीतते हैं तो ओलंपिक व्यक्तिगत वर्ग में दो स्वर्ण पदक जीतने वाले पहले भारतीय भी बनेंगे। ओलंपिक की पुरुष भाला फेंक स्पर्धा में अभी तक एरिक लेमिंग (स्वीडन, 1908 और 1912), जोन्नी माइरा (फिनलैंड, 1920 और 1924), चोपड़ा के आदर्श जान जेलेंजी (चेक गणराज्य, 1992 और 1996) और आंद्रियास टी (नॉर्वे, 2004 और 2008) की ओलंपिक में भाला फेंक स्पर्धा में अपने खिताब का बचाव कर पाए हैं। हालांकि अगर नीरज कोई भी पदक अपने नाम करते हैं तो भी वह स्वतंत्रता के बाद दो व्यक्तिगत ओलंपिक पदक जीतने वाले सिर्फ चौथे भारतीय खिलाड़ी होंगे। स्वतंत्रता के बाद बैडमिंटन खिलाड़ी पीवी सिंधू (एक रजत और एक कांस्य), पहलवान सुशील कुमार (एक रजत और एक कांस्य) और निशानेबाज मनु भाकर (दो कांस्य) ही भारत के लिए दो ओलंपिक पदक जीत पाए हैं। दूसरी तरफ महिला 400 मीटर रेपेचेज में भारत की किरण पहल हीट नंबर एक में 52.59 सेकेंड के लचर प्रदर्शन के साथ छह खिलाड़ियों में छठे स्थान पर रहते हुए सेमीफाइनल में जगह बनाने में नाकाम रहीं। वह रेपेचेज में चुनौती पेश करने वाली 26 धावकों में 23वें स्थान पर रहीं। हीट एक में नाईजीरिया की एला ओनओजुववेमो 50.59 सेकेंड के समय के साथ शीर्ष पर रहीं। प्रत्एक हीट से शीर्ष पर रहने वाली धावक और दो अन्य सबसे तेज धावकों ने सेमीफाइनल में जगह बनाई।

ओलंपिक...

यूक्रेन की ओक्साना लिवाच को हराकर सेमीफाइनल में जगह बनाई थी। इसी लय को कायम रखते हुए उन्होंने लोपेज को 5-0 के अंतर से शिकस्त देकर फाइनल का टिकट कटाया। इस स्पर्धा का फाइनल बुधवार को खेला जाएगा और विनेश के सामने अमेरिका की सारा ऐन हिल्डेब्रांड की चुनौती होगी। विनेश भारत की पहली महिला पहलवान है जो ओलंपिक के किसी वर्ग के फाइनल में पहुंची है। पुरुष वर्ग में सुशील कुमार और रवि दाहिया को ओलंपिक फाइनल खेलना का अनुभव है लेकिन ए दोनों रजत पदक ही जीत पाए थे, ऐसे में विनेश के पास कुश्ती में देश का पहला स्वर्ण पदक विजेता बनने का मौका होगा।

जनधन व बुनियादी बचत खातों में न्यूनतम राशि बनाए रखने की जरूरत नहीं: वित्त मंत्री

भाषा। नई दिल्ली

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने मंगलवार को कहा कि जन धन और बुनियादी बचत खातों में न्यूनतम राशि बनाए रखने की कोई जरूरत नहीं है। बैंक केवल उन मामलों में जुर्माना लगाते हैं, जहां ग्राहक अपने अन्य खातों में आवश्यक राशि बनाए रखने में विफल रहते हैं। वित्त मंत्री राज्यसभा में प्रश्नकाल के दौरान सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों द्वारा पांच साल में खातों में न्यूनतम राशि नहीं रखने पर ग्राहकों से लगभग 8,500 करोड़ रुपए का जुर्माना वसूलने से संबंधित पूरक प्रश्न का उत्तर दे रही थीं। सीतारमण ने कहा, ...बैंक खाते में न्यूनतम राशि रखने का प्रावधान प्रधानमंत्री जन धन खातों और गरीब लोगों के बुनियादी खातों पर लागू नहीं होता है। यह केवल उन लोगों के लिए है जिनकी न्यूनतम राशि एक निश्चित स्तर पर होने की उम्मीद है। लोकसभा में एक प्रश्न के लिखित उत्तर में यह सामने आया कि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों ने वित्त वर्ष 2019-20 से पांच साल में इस मद में लगभग 8,500 करोड़ रुपए वसूले। वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने भी पिछले महीने लोकसभा को बताया था कि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों ने वित्त वर्ष 2023-24 में खातों औसत मासिक न्यूनतम राशि नहीं रखने पर जुर्माने के तौर पर जमाकर्ताओं से 2,331 करोड़ रुपए वसूले।

बीसीसीआई ने 2,038 करोड़ रुपए का जीएसटी भुगतान किया

नई दिल्ली। सरकार ने मंगलवार को राज्यसभा को बताया कि भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने वित्त वर्ष 2022-23 और 2023-24 के दौरान कुल 2,038.55 करोड़ रुपए बतौर वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) का भुगतान किया। वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने एक सवाल के लिखित जवाब में उच्च सदन को यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि बीसीसीआई भारत में क्रिकेट को बढ़ावा देने के लिए सर्वोच्च निकाय है और यह तमिलनाडु सोसायटी पंजीकरण अधिनियम, 1975 के तहत पंजीकृत स्वायत्त निकाय है। चौधरी ने कहा कि इंडियन प्रीमियर लीग जैसे खेल आयोजनों में दी जाने वाली सेवाओं पर 28 प्रतिशत की दर से जीएसटी लगता है। उन्होंने कहा कि वित्त वर्ष 2022-23 और 2023-24 के दौरान, बीसीसीआई से सकल जीएसटी राजस्व संग्रह 2,038.55 करोड़ रुपए था। उन्होंने कहा कि आयकर विभाग ने आयकर कानून की धारा 11 के तहत बीसीसीआई को कर छूट देने से इनकार कर दिया है और अब यह मामला न्यायालय में विचाराधीन है। चौधरी ने कहा, "बीसीसीआई को कर छूट का मुद्दा वर्तमान में न्यायालय में विचाराधीन है। इसके अलावा, इस संबंध में वर्तमान में कोई प्रत्यक्ष कर प्रस्ताव लंबित नही है। उन्होंने कहा कि बीसीसीआई को खेल मंत्रालय की किसी भी योजना से कोई अनुदान नही मिलता है। चौधरी ने एक अन्य सवाल के जवाब में कहा कि जुलाई 2017 से जून 2024 के बीच गुजरात में केंद्रीय कर संरचनाओं ने जीएसटी चोरी के 13,494 मामले दर्ज किए। इन मामलों में जीएसटी चोरी की राशि लगभग 52,394 करोड़ रुपए थी और इस सिलसिले में 214 लोगों को गिरफ्तारी किया गया।

ऑल इंडिया सूफी सज्जादानशीन काउंसिल ने वक्फ बोर्ड कानून में संशोधन के प्रस्ताव का स्वागत किया

भाषा। नई दिल्ली

ऑल इंडिया सज्जादानशीन काउंसिल ने वक्फ बोर्ड के संचालन से जुड़े कानून में संशोधन के सरकार के फैसले का मंगलवार को स्वागत करते हुए कहा कि यह काफी समय से लंबित है। सूत्रों ने बताया कि सरकार वक्फ बोर्ड के संचालन से जुड़े 1995 के कानून में संशोधन करने के लिए संसद में एक विधेयक लाने वाली है ताकि इनके कामकाज में अधिक जवाबदेही और पारदर्शिता सुनिश्चित हो सके तथा इन संस्थाओं में महिलाओं की अनिवार्य भागीदारी हो सके। अखिल भारतीय सूफी सज्जादानशीन काउंसिल के अध्यक्ष हजरत सैयद नसरुद्दीन चिश्ती ने संशोधनों के तहत एक अलग दरगाह बोर्ड बनाने की मांग की।उन्होंने संवाददाता सम्मेलन में कहा, मौजूदा वक्फ अधिनियम में दरगाहों का कोई जिक्र नहीं है। वक्फ बोर्ड दरगाह की परंपराओं को मान्यता नहीं देते हैं, क्योंकि हमारी कई परंपराएं शरीयत (इस्लामी कानून) में नहीं हैं, इसलिए हम एक अलग दरगाह बोर्ड की मांग कर रहे हैं। चिश्ती ने आरोप लगाया कि वक्फ बोर्ड अपने मौजूदा स्वरूप में तानाशाह तरीके से काम करते हैं और उनमें कोई पारदर्शिता नहीं है। उन्होंने कहा, हमें उम्मीद है कि वक्फ संशोधन विधेयक का मसौदा व्यापक होगा और सभी हितधारकों के हितों की पूर्ति करेगा। मसौदे की गहन जांच के बाद, हम अपनी सिफारिशें और प्रस्ताव सौंपने का इरादा रखते हैं। एआईएसएससी के अध्यक्ष सहित अन्य प्रतिनिधियों ने सोमवार को राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) अजीत डोभाल और केंद्रीय अल्पसंख्यक कार्य मंत्री किरेन रिजीजू से मुलाकात की और अपनी चिंताएं उनके समक्ष रखीं। चिश्ती ने कहा, एनएसए और अल्पसंख्यक कार्य मंत्री ने हमें आश्वासन दिया कि सभी हितधारकों से सलाह-मशविरा किया जाएगा और सभी हितधारकों मुसलमानों के हित में होंगे। उन्होंने कहा कि जो लोग सरकार के कदम का विरोध कर रहे हैं और झूठा प्रचार करके भ्रम के आधार पर समाज को बांटने की कोशिश कर रहे हैं, वे देश के खिलाफ काम कर रहे हैं। उन्होंने ऐसे लोगों से विरोध करने के बजाय सुझाव देने का आग्रह किया। चिश्ती ने कहा, वक्फ अधिनियम की जटिल न्यायिक प्रक्रिया को भी सरल बनाने की जरूरत है ताकि लोगों को फौरन न्याय मिल सके।

केंद्रीय मंत्री बिट्टू का गुरुद्वारों, मंदिरों की सुरक्षा सुनिश्चित करने का आग्रह

नई दिल्ली। केंद्रीय रेल एवं खाद्य प्रसंस्करण राज्य मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू ने बांग्लादेश में स्थित सिख धर्मस्थलों और हिंदू मंदिरों पर हमलों को लेकर मंगलवार को गंभीर चिंता जताई और विदेश मंत्री एस जयशंकर से इस मुद्दे को सैन्य अधिकारियों या बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के समक्ष उठाने का आग्रह किया।जयशंकर को लिखे एक पत्र में बिट्टू ने कहा, चूंकि बांग्लादेश में सिखों की आबादी बहुत कम है और कुछ भारत विरोधी तत्व धार्मिक स्थलों पर उपद्रव मचा रहे है, इसलिए सिख समुदाय बांग्लादेश में स्थित गुरुद्वारों की सुरक्षा को लेकर चिंतित है। बिट्टू ने कहा, इसलिए मै आपसे आग्रह करता हूं कि ढाका स्थित ऐतिहासिक सिख मंदिरों जैसे गुरुद्वारा नानकशाही और गुरुद्वारा संगत टोला के साथ-साथ हिंदू मंदिरों की रक्षा के लिए सेना या बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के साथ इस मुद्दे को उठाएं।

अमृतांजन को सर्वश्रेष्ठ हेल्थकेयर का सम्मान

कोलकाता। अमृतांजन हेल्थकेयर को 7वें ईटी नाउ बेस्ट हेल्थकेयर ब्रांड्स समारोह में यह सम्मान प्रदान किया गया है। पूरे भारत में 1000 से अधिक हेल्थकेयर ब्रांडों की विस्तृत जांच करके एक कठोर चयन प्रक्रिया के माध्यम से यह चुनाव किया गया है। बहुत कम ब्रांड चयन प्रक्रिया के मानदंडों को पूरा कर पाए थेए जिससे अमृतांजन हेल्थकेयर को मिला यह सम्मान और भी अधिक महत्वपूर्ण और प्रतिष्ठित हो गया है। अमृतांजन हेल्थकेयर के पोर्टफोलियो में स्वास्थ्य देखभाल से संबंधित विभिन्न क्षेत्रों में कई अलग.अलग उत्पाद शामिल हैं। अमृतांजन हेल्थकेयर लिमिटेड के चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर एस शंभू प्रसाद ने कहा कि ईटी नाउ बेस्ट हेल्थकेयर ब्रांड्स अवार्ड्स में सम्मानित होना हमारेलिए बहुत गर्व की बात है। उत्कृष्टता और अद्वितीय स्वास्थ्य सेवा प्राप्त करने के लिए हमारे समर्पित प्रयास और ग्राहकों के जीवन में सुधार ला सकें ऐसे अतुलनीय स्वास्थ्य देखभाल उत्पाद लाने के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को इस पुरस्कार ने रेखांकित किया है।

फिटजी टैलेंट परीक्षा जल्द

नई दिल्ली। फिटजी-जे ई ई और अन्य प्रतिस्पर्धी और शैक्षणिक परीक्षाओं की तैयारी के लिए भारत का प्रमुख संस्थान फिटजी टैलेंट रिवॉर्ड परीक्षा आयोजित कर रहा है, जो वर्ष की सबसे बड़ी और सबसे प्रतीक्षित परीक्षा है, जो वर्तमान में कक्षा 5, 6, 7, 8, 9, 10 और 11 में सभी छात्रों के लिए अपार शैक्षणिक लाभ प्रदान करती है। फिटजी टैलेंट रिवॉर्ड परीक्षा छात्रों की शैक्षणिक यात्रा को एकमात्र और सबसे व्यापक 360-डिग्री शैक्षणिक निदान उपकरण के साथ सशक्त बनाता है और उन्हें अपार छात्रवृत्तियों के साथ पुरस्कृत होने का अवसर देता है। परीक्षा ऑफलाइन, कंप्यूटर आधारित और प्रॉक्टर्ड ऑनलाइन मोड में कई तिथियों पर आयोजित की जाएगी। छात्र अपने लिए सबसे उपयुक्त परीक्षा तिथि और मोड चुन सकते हैं।फिटजी समूह के निदेशक आर एल त्रिखा ने कहा फिटजी टैलेंट रिवॉर्ड परीक्षा न केवल एक प्रवेश और छात्रवृत्ति परीक्षा है, बल्कि छात्र की शैक्षणिक क्षमता को सटीक रूप से मापने के लिए एक उपकरण भी है। परीक्षा 15 सितंबर और 6 अक्टूबर 2024 को ऑफलाइन या कंप्यूटर आधारित या ऑनलाइन प्रॉक्टर्ड मोड में आयोजित की जाएगी और 22, 23, 27, 28 सितंबर, और 4 और 5 अक्टूबर 2024 को केवल ऑनलाइन प्रॉक्टर्ड मोड में आयोजित की जाएगी।

जबलपुर जिले में स्वाइन फ्लू के 11 मामले सामने आए

जबलपुर। मध्य प्रदेश के जबलपुर जिले मे स्वाइन फ्लू के 11 मामले सामने आए है। स्वास्थ्य विभाग के एक अधिकारी ने मंगलवार को यह जानकारी दी।स्वास्थ्य विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. संजय मिश्रा ने बताया कि ए मामले 11 जुलाई से छह अगस्त केबीच सामने आए है। मिश्रा ने बताया कि 11 में से छह मरीजों को ठीक होने के बाद निजी अस्पताल से छुट्टी दे दी गई है जबकि बाकी मरीज उपाचाराधीन है।

इस्लामी गणराज्यों में ऐसी चीजें हमेशा होती रहती हैं : कंगना

शिमला। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की सांसद कंगना रनौत ने मंगलवार को दावा किया कि बांग्लादेश में हो रहे घटनाक्रम सभी इस्लामी गणराज्यों की विशेषता है, जहां हमेशा अन्य धर्मों को खत्म करने का प्रयास किया जाता है। अदाकारा से नेता बनी कंगना ने यह टिप्पणी उस समय की जब संवाददाताओं ने उनसे पड़ोसी देश की स्थिति पर टिप्पणी करने के लिए कहा। नौकरी में आरक्षण को लेकर व्यापक विरोध प्रदर्शन के बाद बांग्लादेश अनिश्चितता के भंवर में फंस गया है, जिसके कारण एक दिन पहले प्रधानमंत्री शेख हसीना को इस्तीफा देकर देश छोड़ना पड़ा। कंगना ने कहा कि सभी इस्लामी गणराज्यों में कभी न कभी ऐसे हालात बनते रहते हैं। उन्होंने ब्रिटेन में प्रवासियों के खिलाफ विरोध प्रदर्शनों का हवाला देते हुए दावा किया कि वहां सड़कों पर ईसाइयों पर हमले हो रहे हैं। मंडी से भाजपा सांसद ने कहा कि सबक मिला है कि सनातन का दीपक प्रज्वलित होना चाहिए और उसका झंडा ऊंचा होना चाहिए। उन्होंने अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की हत्या के हालिया प्रयास को लोकतंत्र की हत्या भी करार दिया। कंगना शिमला जिले के समेज में मीडिया को संबोधित कर रही थीं, जहां वह हाल में आई बाढ़ के पीड़ितों से मिलने गई थीं। उन्होंने दावा किया कि अंतरराष्ट्रीय ताकतों ने अब भारत को घेर लिया है क्योंकि बांग्लादेश अब दोस्त नहीं रहा और सरकार को स्थिति को सावधानी से संभालना चाहिए। हमें उन लोगों से सतर्क रहना चाहिए जो देश को गुमराह कर रहे हैं और देश को अंतरराष्ट्रीय ताकतों के हाथों बेचना चाहते हैं, और उन लोगों से भी जो उनके लिए वोट कर रहे हैं।

शीर्ष अदालत का आईएमए अध्यक्ष अशोकन से सवाल

भाषा। नई दिल्ली

पूछा, क्या माफीनामा उन अखबारों में प्रकाशित हुआ जहां आपका साक्षात्कार छपा था

उच्चतम न्यायालय ने मंगलवार को इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (आईएमए) के अध्यक्ष आर वी अशोकन से पूछा कि पीटीआई-भाषा को दिए साक्षात्कार में नुकसान पहुंचाने वाले अपने बयान को लेकर शीर्ष अदालत से बिना शर्त उनका माफीनामा क्या उन सभी अखबारों में प्रकाशित हुआ है जिन्होंने उनका साक्षात्कार छापा था। पीटीआई-भाषा को 29 अप्रैल को दिए साक्षात्कार में अशोकन ने कहा था कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि उच्चतम न्यायालय ने एसोसिएशन तथा निजी चिकित्सकों के कुछ प्रैक्टिस (तौर-तरीके) की भी आलोचना की। साक्षात्कार में वह पतंजलि आयुर्वेद लिमिटेड के भ्रामक विज्ञापन के बारे में पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दे रहे थे। शीर्ष अदालत ने यह भी कहा कि माफीनामा अशोकन द्वारा व्यक्तिगत रूप से समाचार पत्रों में प्रकाशित किया जाना चाहिए, न कि आईएमए के कोष से। उच्चतम न्यायालय आईएमए द्वारा 2022 में दायर की गई याचिका पर सुनवाई कर रहा था जिसमें पंतजलि पर कोविड टीकाकरण अभियान तथा आधुनिक चिकित्सा पद्धति को बदनाम करने की मुहिम चलाने का आरोप लगाया गया है।

आईआईटी इंदौर ने फौजियों के लिए बनाए खास जूते, हर कदम से बनेगी बिजली

इंदौर (मप्र)। इंदौर के भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) ने फौजियों के लिए नवाचारी तकनीक से खास जूते तैयार किए हैं। इन जूतों को पहनकर चलने से न केवल बिजली बन सकती है, बल्कि वास्तविक समय में सैन्य कर्मियों की लोकेशन का भी पता लगाया जा सकता है। आईआईटी के अधिकारियों ने मंगलवार को यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि आईआईटी इंदौर ने रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) को ऐसे जूतों के 10 जोड़ों की पहली खेप मुहैया भी करा दी है। उन्होंने बताया कि इन जूतों को आईआईटी इंदौर के प्रोफेसर आईए पलानी के मार्गदर्शन में विकसित किया गया है। अधिकारियों ने बताया ए जूते ट्राइबो-इलेक्ट्रिक नैनोजेनरेटर (टेंग) तकनीक से बनाए गए हैं जिसके कारण इन्हें पहन कर चले गए हर कदम से बिजली बनेगी। उन्होंने बताया कि यह बिजली जूतों के तलों में लगाए गए एक यंत्र में जमा होगी जिससे छोटे उपकरण चलाए जा सकते हैं। अधिकारियों ने बताया कि ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम (जीपीएस) और रेडियो फ्रीक्वेंसी आइडेंटिफिकेशन (आरएफआईडी) की तकनीकों से लैस जूतों की मदद से वास्तविक समय में सैन्य कर्मियों की लोकेशन भी पता लगाई जा सकती है।

दुनिया को हिंदुओं की ताकत दिखाने के लिए एकजुट रहना होगा

बाबा रामदेव ने बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे लक्षित हमलों की निंदा की

देहरादून। योग गुरू बाबा रामदेव ने मंगलवार को बांग्लादेश में हिंदुओं के मंदिरों, घरों तथा वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों पर किए जा रहे हमलों की निंदा की और केंद्र सरकार से पड़ोसी देश में हिंदु अल्पसंख्यकों को सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए हर संभव राजनीतिक और कूटनीतिक प्रयास करने को कहा। दुनिया को हिंदुओं की ताकत दिखाने के लिए भारत में हमें एकजुट रहना होगा।उन्होंने केंद्र सरकार से भारत में अशांति और अस्थिरता फैलाने की नीयत से सोशल मीडिया मंचों पर वीडियो प्रसारित करने वालों से भी सख्ती से निपटने को भी कहा।स्वामी रामदेव का यह बयान बांग्लादेश में विवादास्पद आरक्षण प्रणाली को लेकर शुरू हुए विरोध के बीच शेख हसीना के प्रधानमंत्री पद और देश छोड़ने के एक दिन बाद आया है। हसीना के पद छोड़ने के बाद भी पड़ोसी देश में हिंसा जारी है। रामदेव ने कहा, मैं बांग्लादेश में पिछले दो दिनों से हिंदुओं के मंदिरों, घरों और वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों को लक्ष्य बनाकर किए जा रहे हमलों की निंदा करता हूं।

बीएसएफ ने लोगों से बांग्लादेश सीमा के पास आवाजाही से बचने को कहा

भाषा। नई दिल्ली

सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) ने 4,096 किलोमीटर लंबी भारत-बांग्लादेश अंतरराष्ट्रीय सीमा के आसपास रहने वाले लोगों से कहा है कि वे ढाका में बदलते हालात के मद्देनजर सीमावर्ती इलाकों में विशेष रूप से रात के समय अनावश्यक आवाजाही न करें। बीएसएफ ने अपनी सभी इकाइयों से पश्चिम बंगाल (2,217 किलोमीटर), त्रिपुरा (856 किलोमीटर), मेघालय (443 किलोमीटर), असम (262 किलोमीटर) और मिजोरम (318 किलोमीटर) तक फैली समूची सीमा पर चौकसी बनाए रखने को कहा है। बीएसएफ महानिदेशक (कार्यवाहक) दलजीत सिंह चौधरी ने दूसरे दिन भी सीमावर्ती क्षेत्रों का दौरा जारी रखा। उन्होंने पेट्रापोल लैंड पोर्ट स्टेशन का दौरा किया, जो दक्षिण एशिया में अपनी तरह का सबसे बड़ा केंद्र है और कोलकाता से लगभग 80 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। चौधरी के साथ बीएसएफ के कोलकाता मुख्यालय स्थित दक्षिण बंगाल फ्रंटियर के वरिष्ठ अधिकारी भी थे। एक वरिष्ठ अधिकारी ने पीटीआई-भाषा को बताया महानिदेशक को सीमा चौकियों पर उपलब्ध सैन्य क्षमता तथा संचालित की जा रही अन्य प्रक्रियाओं के बारे में जानकारी दी गई, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि बांग्लादेश में वर्तमान घटनाक्रम के मद्देनजर कोई भी अवैध व्यक्ति सीमा को पार न कर सके। उन्होंने बताया, सभी फील्ड कमांडर को निर्देश दिया गया कि मोर्चे पर चौकसी बनाए रखी जाए और घुसपैठ, सीमा पार अपराध और तस्करी की घटनाओं से सख्ती से निपटा जाए। उन्होंने कहा कि भारत-बांग्लादेश सीमा पर स्थिति सामान्य है और पांचों राज्यों के सीमावर्ती क्षेत्रों के ग्रामीणों और स्थानीय लोगों से कहा गया है कि वे खासकर रात के समय अनावश्यक रूप से आवाजाही न करें। बीएसएफ की पूर्वी कमान के एक अन्य अधिकारी ने बताया कि ए प्रतिबंध पहले से ही लागू हैं, लेकिन अब इन्हें और भी सख्त किया जा रहा है, क्योंकि जवान अवैध रूप से सीमा पार करने सहित किसी भी संदिग्ध या आपराधिक गतिविधि के प्रति अतिरिक्त सतर्कता बरत रहे हैं। बीएसएफ के दक्षिण बंगाल फ्रंटियर ने एक बयान में कहा कि नदिया जिले के उत्तरपाड़ा और मुस्तफापुर की सीमा चौकियों पर स्थानीय ग्रामीणों के साथ समन्वय बैठकें आयोजित की गईं। फ्रंटियर ने सोमवार को कहा था कि बांग्लादेश में हुए घटनाक्रम के मद्देनजर सीमा पर तैनात जवानों की संख्या बढ़ा दी गई है। बीएसएफ ने अपने छह फ्रंटियर के तहत पूरे सीमा क्षेत्र की सुरक्षा के लिए करीब 87 बटालियन को तैनात किया है।

भारत के कपड़ा, परिधान उद्योग के लिए चिंता का विषय : सिटी

नई दिल्ली। बांग्लादेश का राजनीतिक संकट भारत के कपड़ा और परिधान क्षेत्र के लिए, विशेष रूप से पड़ोसी देश में कारखाने चलाने वाली कंपनियों के लिए, महत्वपूर्ण चिंता उत्पन्न कर रहा है। भारतीय कपड़ा उद्योग परिसंघ (सिटी) ने मंगलवार को यह जानकारी दी। घरेलू कपड़ा उद्योग निकाय का मानना है कि बांग्लादेश में किसी भी आपूर्ति व्यवधान का आपूर्ति श्रृंखला पर तत्काल प्रभाव पड़ेगा, जिससे संभावित रूप से भारतीय कंपनियों का उत्पादन कार्यक्रम और आपूर्ति समयसीमा प्रभावित होगी। भारतीय कपड़ा उद्योग परिसंघ (सीआईटीआई या सिटी) की महासचिव चंद्रिमा चटर्जी ने कहा, बांग्लादेश में स्थिति वास्तव में चिंताजनक है, और हम घटनाक्रम पर बारीकी से नज़र रख रहे है। कपड़ा क्षेत्र मे बांग्लादेश का विकास प्रेरणादायक रहा है और इसने पूरे उपमहाद्वीप में व्यापार प्रवाह को मज़बूती दी है। उन्होने कहा, हम आपूर्ति श्रृंखला पर होने वाले प्रभाव और इसके कारण होने वाली संभावित देरी और व्यवधानों के बारे में चिंतित है, लेकिन हमे उम्मीद है कि स्थिति जल्द ही सुधर जाएगी। सिटी के अनुसार, देश मे विनिर्माण संचालन वाली भारतीय कंपनियो को अपने उत्पादन प्रवाह को बनाए रखने मे चुनौतियो का सामना करना पड़ सकता है, जिससे बाज़ार में देरी और संभावित कमी हो सकती है। यह व्यवधान उत्पादो की उपलब्धता को प्रभावित कर सकता है और कंपनियो को प्रभाव को कम करने के लिए वैकल्पिक विनिर्माण समाधान तलाशने केलिए मजबूर कर सकता है। सिटी ने कहा, बांग्लादेश में अनिश्चितताओ के बीच वैकल्पिक विनिर्माण केंद्रो की ओर पहले से ही एक उल्लेखनीय बदलाव देखने को मिल रहा है। बांग्लादेश इस समय वर्ष 1971 मे स्वतंत्रता के बाद से अपने सबसे खराब राजनीतिक संकट का सामना कर रहा है, जिसमे प्रधानमंत्री शेख हसीना ने बड़े पैमाने पर सरकार विरोधी प्रदर्शनो के बीच इस्तीफा दे दिया है। बांग्लादेश के सेना प्रमुख जनरल वकार-उज-जमान ने सोमवार को घोषणा की कि देश मे एक अंतरिम सरकार जिम्मेदारी संभालेगी। सिटी ने कहा, कई प्रमुख वैश्विक ब्रांड जो अपनी सोर्सिंग जरूरतो के लिए बांग्लादेश पर निर्भर है, वे भी इन व्यवधानो से प्रभावित होगे। बांग्लादेश भारतीय वस्त्रो केलिए एक महत्वपूर्ण बाजार है, जो एक विनिर्माण केंद्र और एक महत्वपूर्ण निर्यात गंतव्य दोनो के रूप मे कार्य करता है।

हिंदुओं व अन्य अल्पसंख्यकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने का विहिप का सरकार से आग्रह

नई दिल्ली। विश्व हिंदू परिषद (विहिप) ने बांग्लादेश में हिंदुओं, सिखों और अन्य अल्पसंख्यकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए हर संभव कदम उठाने का सरकार से मंगलवार को आग्रह किया और दावा किया कि पड़ोसी देश के कई जिलों में कट्टरपंथी उन्हें निशाना बना रहे हैं। भारत-बांग्लादेश सीमा पर सुरक्षा व्यवस्था कड़ी करने की मांग की और कहा कि पड़ोसी देश में मौजूदा स्थिति का फायदा उठाकर भारतीय क्षेत्र में घुसपैठ की कोशिश की जा सकती है। उन्होंने विश्व समुदाय से भी बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों की सुरक्षा और मानवाधिकारों के संरक्षण के लिए प्रभावी कार्वाई करने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि उन्होंने कहा कि बांग्लादेश में अल्पसंख्यक एक अजीब अनिश्चितता, हिंसा और अराजकता में फंस गए हैं। कुमार ने कहा, हाल के दिनों में बांग्लादेश में हिंदुओं, सिखों और अन्य अल्पसंख्यकों के धार्मिक स्थलों, व्यापारिक प्रतिष्ठानों और घरों में तोड़फोड़ की गई है। कल रात तक सिर्फ पंचगढ़ जिले में कट्टरपंथियों ने 22 मकानों को, झेनैदाह में 20 मकानों को और जशोर में 22 दुकानों को निशाना बनाया और कई जिलों में श्मशान घाटों में भी तोड़फोड़ की गई। उन्होंने कहा कि बांग्लादेश में शायद ही कोई ऐसा जिला बचा हो जो उनकी हिंसा और आतंक का निशाना न बना हो। कुमार ने कहा, बांग्लादेश में हिंदुओं के मकान, दुकानें, दफ्तर, व्यापारिक प्रतिष्ठान, महिलाएं, बच्चे और यहां तक कि उनकी आस्था, विश्वास और उपासना स्थल जैसे मंदिर और गुरुद्वारे भी सुरक्षित नहीं हैं। वहां उत्पीड़ित अल्पसंख्यकों की हालत बद से बदतर होती जा रही है। उन्होंने दावा किया कि पड़ोसी देश में इस्कॉन मंदिर को काफी नुकसान पहुंचाया गया है। विश्व हिंदू परिषद भारत सरकार से बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों की सुरक्षा के लिए हर संभव कदम उठाने का आग्रह करती है। यह बताना उचित होगा कि बांग्लादेश में कभी हिंदुओं की आबादी 32 प्रतिशत थी, लेकिन यह अब आठ प्रतिशत से भी कम रह गई है और वे भी निरंतर जिहादी उत्पीड़न के शिकार हैं। संकट की इस घड़ी में भारत मित्र के रूप में बांग्लादेश के सम्पूर्ण समाज के साथ मजबूती से खड़ा है।

क्विक न्यूज

ईडी ने 132 मौजूदा, पूर्व सांसदों-विधायकों, राजनेताओं के खिलाफ मामले दर्ज किए: सरकार

नई दिल्ली। सरकार ने मंगलवार को बताया कि पिछले छह वर्षों मे राजनीतिक नेताओ के अलावा मौजूदा और पूर्व सांसदों और विधायकों के खिलाफ धन शोधन के कुल 132 मामले दर्ज किए गए है। वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने राज्यसभा को एक लिखित जवाब के तहत प्रवर्तन निदेशालय द्वारा प्रवर्तन मामला सूचना रिपोर्ट (ईसीआईआर), विचाराधीन मामलो और दोषसिद्धि से संबंधित आंकड़े साझा किए। उन्होने एक जनवरी, 2019 से इस साल 31 जुलाई के बीच मौजूदा और पूर्व सांसदों, विधायकों, विधान पार्षदों और राजनीतिक नेताओ या किसी भी राजनीतिक दल से जुड़े किसी भी व्यक्ति के खिलाफ धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत दर्ज ईसीआईआर का ब्योरा दिया। जवाब के अनुसार, ईडी ने 2019 में 15 प्रवर्तन मामला सूचना रिपोर्ट (ईसीआईआर) या धन शोधन के मामले दर्ज किए। इसके बाद 2020 में 28 मामले, 2021 में 26 मामले, 2022 में 34 मामले, 2023 में 26 मामले और 2024 में 31 जुलाई तक तीन मामले दर्ज किए।

नौकरी के बदले जमीन घोटाला : ईडी ने लालू प्रसाद, तेजस्वी यादव के खिलाफ पूरक आरोपपत्र दाखिल किया

नई दिल्ली। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने नौकरी के बदले जमीन घोटाला मामले में पूर्व रेल मंत्री लालू प्रसाद, उनके बेटे तेजस्वी यादव और आठ अन्य आरोपियो के खिलाफ मंगलवार को एक पूरक आरोपपत्र दाखिल किया।पूरक आरोपपत्र विशेष न्यायाधीश विशाल गोगने के समक्ष दाखिल किया गया, जिन्होंने मामले पर अगली सुनवाई के लिए 13 अगस्त की तारीख तय की। ईडी का मामला केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) की एक प्राथमिकी से उपजा है। जांच एजेंसी के अनुसार, यह मामला 200से 2009 तक रेल मंत्री के रूप में लालू के कार्यकाल के दौरान मध्य प्रदेश के जबलपुर में रेलवे के पश्चिम-मध्य जोन में ग्रुप-डी में हुई भर्तियों से जुड़ा है। आरोप है कि रेलवे में भर्ती होने वाले लोगों ने नौकरी के बदले राष्ट्रीय जनता दल (राजद) सुप्रीमो के परिवार के सदस्यों और सहयोगियों को उपहार स्वरूप जमीन दी थी।

दस विदेशी एयरलाइंस से 10,000 करोड़ रुपए की जीएसटी मांग, आईएटीए ने जताई नाखुशी

नई दिल्ली। वैश्विक एयरलाइंस संगठन ने 10 विदेशी एयरलाइन कंपनियो को 10,000 करोड़ रुपए का जीएसटी नोटिस भेजे जाने का मुद्दा सुलझाने का सरकार से आग्रह करते हुए मंगलवार को कहा कि यह मामला भारत की मजबूत विमानन क्षमता को कमजोर करने के साथ जोखिम में भी डाल सकता है। अंतरराष्ट्रीय हवाई परिवहन संघ (आईएटीए) भारत समेत दुनियाभर की 330 से अधिक एयरलाइंस का प्रतिनिधित्व करता है। इसके सदस्यो की वैश्विक हवाई यातायात में 80 प्रतिशत से अधिक हिस्सेदारी है। सूत्रों के मुताबिक, भारत में परिचालन करने वाली 10 विदेशी एयरलाइंस को माल एवं सेवा कर (जीएसटी) विभाग से 10,000 करोड़ रुपए से अधिक की मांग के लिए कारण बताओ नोटिस जारी किए गए है। आईएटीए ने सरकार से इस मामले को सुलझाने का आग्रह करते हुए कहा कि विमानन उद्योग के कई प्रतिवेदनो के बावजूद भारत में परिचालन कर रही कुछ विदेशी एयरलाइंस को जीएसटी आसूचना महानिदेशालय (डीजीजीआई) का कारण बताओ नोटिस जारी करना निराशाजनक है।

ऊबर व एयरपोर्ट ऑथोरिटी साथ की साझेदारी

अयोध्या। भारत के प्रमुख राईड ऐप ऊबर ने महर्षि वाल्मिकी इंटरनेशनल एयरपोर्ट, अयोध्या धाम के लिए एयरपोर्ट ऑथोरिटी ऑफइंडिया के साथ साझेदारी की घोषणा की है। इस साझेदारी के साथ, ऊबर वाइब्रेन्ट सिटी अयोध्या में आने वाले यात्रियों को परिवहन के भरोसेमंद एवं सहज विकल्प उपलब्ध कराने के लिए तत्पर है। इसी साल ऊबर ने शहर के निवासियों एवं आगंतुकों की परिवहन संबंधी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए लोकप्रिय कैटेगरीज़ जैसे ऊबर ऑटो और ऊबर गो के साथ अयोध्या में अपनी सेवाओं का लॉन्च किया था। इस अवसर पर शिवा शैलेन्द्रन डायरेक्टर ऑफसप्लाई ऑपरेशन्स, ऊबर इंडिया एण्ड साउथ एशिया ने कहा कि एयरपोर्ट्स ऑथोरिटी ऑफइंडिया के साथ साझेदारी एयरपोर्ट यात्रियों के लिए परिवहन सुविधाओं में सुधार लाने की हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाती है इसके द्वारा हम अयोध्या एयरपोर्ट से आने-जाने वाले यात्रियों को परिवहन का भरोसेमंद एवं तनाव रहित अनुभव प्रदान करना चाहते हैं।

गोरेगांव दुर्गा पूजा का उद्घाटन

मुंबई। मुंबई शहर में एक भव्य शुरुआत हुई, जब अभिनेता पूजा बनर्जी और कुणाल वर्मा के नेतृत्व में गोरेगांव दुर्गा पूजा समिति ने उत्साह और दिव्य आशीर्वाद के साथ अपने पहले कार्यक्रम का उद्घाटन किया। मुंबई में कोलकाता शैली की दुर्गा पूजा की शुरुआत भूमि पूजन समारोह से हुई जिसमें कई मशहूर हस्तियों और परिवार के सदस्यों ने भाग लिया। संस्थापक पूजा बनर्जी, कुणाल वर्मा और पीयूष कोठारी ने कोलकाता के जीवंत सांस्कृतिक उत्सव मुंबई वासियों के लिए पेश किया है, जिसमें दुर्गा माँ के अनूठे अवतार के साथ पैलेस थीम वाला एक शानदार पंडाल दिखाया गया। जब पुजारियों ने देवी दुर्गा का उद्घोष किया तो माहौल आध्यात्मिकता और भक्ति से भर गया। उल्लेखनीय उपस्थित लोगों में अभिनेता मनीष पॉल, अंकित तिवारी, रश्मि देसाई, निवेदिता बसु और विधायक असलम शेख शामिल थेए जिन्होंने इस कार्यक्रम में ग्लैमर का तड़का लगाया। पूजा बनर्जी और कुणाल वर्मा ने कहा कि हम इस प्रतिष्ठित त्योहार को मुंबई में लाकर रोमांचित हैं, जो बंगाल की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करता है। हम सभी मुंबईवासियों को इस उत्सव में शामिल होने और मुंबई में पहली बार कोलकाता शैली की दुर्गा पूजा के जादू का अनुभव करने के लिए आमंत्रित करते हैं।

टाटा का स्वास्थ्य बीमा में पारदर्शिता पा जोर

लखनऊ। भारत की अग्रणी सामान्य बीमा कंपनियों में से एक टाटा एआईजी जनरल इंश्योरेंस कंपनी ने उपभेक्ताओं के लिए पूरी पारदर्शिता का ध्यान रखा है। इसके लिए वही नई एआई तकनीकी का भी उपयोग कर रही है। ये बाते प्रतीक गुप्ता सीनियर कार्यकारी उपाध्यक्ष हेड एजेंसी ने कही। उन्होंने बताया कि 2022 से उत्तर प्रदेश-यूपी में अपने स्वास्थ्य बीमा कारोबार में उल्लेखनीय वृद्धि की है। पिछले दो वर्षों में समग्र स्वास्थ्य बीमा कारोबार 39 करोड़ रुपये से बढ़कर 188 करोड़ रुपये हो गया हैए जो क्षेत्र में बीमा पहुंच बढ़ाने के लिए कंपनी की मजबूत उपस्थिति और प्रतिबद्धता को दर्शाता है। 1.5 प्रतिशत की कम निजी स्वास्थ्य बीमा प्रवेश दर के साथए यूपी में पर्याप्त विकास के अवसर हैं। टाटा एआईजी ने राज्य के 75 जिलों में अपनी उपस्थिति मजबूत की है, बीमा पहुंच और जागरूकता बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया है। कंपनी ने खुदरा स्वास्थ्य व्यवसाय में 2 गुना से अधिक की वृद्धि हासिल की हैए 1100 से अधिक अस्पतालों सहित मजबूत नेटवर्क के साथ एक बड़ा एजेंट आधार है, जो उत्तर प्रदेश में अपनी महत्वपूर्ण पहुंच सुनिश्चित करता है। टाटा एआईजी के इनोवेशन और ग्राहक,केंद्रित सेवाओं के प्रति समर्पण ने कैशलेस क्लेम उपयोग में उल्लेखनीय वृद्धि की है, जो वित्त वर्ष 22.23 में 68 प्रतिशत से बढ़कर वित्त वर्ष 24.25 में 78 प्रतिशत हो गई है।

पीएमएलए के तहत दोषसिद्धी की दर 93 प्रतिशत : सरकार

नई दिल्ली। सरकार ने मंगलवार को संसद को बताया कि प्रवर्तन निदेशालय द्वारा धन शोधन के मामलो में दोषसिद्धि की दर 93 प्रतिशत है। वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने राज्यसभा में एक प्रश्न के लिखित उत्तर में बताया कि 31 जुलाई तक एजेंसी द्वारा कुल 7,083 ईसीआईआर या प्रवर्तन मामला सूचना रिपोर्ट दाखिल की गई है। उन्होंने कहा, धन शोधन रोकथाम अधिनियम (पीएमएलए) के तहत दोषसिद्धि की दर लगभग 93 प्रतिशत है।

डेमोक्रेटिक पार्टी की राष्ट्रपति पद की उम्मीदवार होंगी हैरिस

● टिम वाल्ज होंगे उपराष्ट्रपति प्रत्याशी

भाषा। वाशिंगटन

अमेरिका की उपराष्ट्रपति कमला हैरिस ने मंगलवार को डेमोक्रेटिक पार्टी की ओर से राष्ट्रपति पद के लिए आधिकारिक उम्मीदवारी हासिल कर ली। इसी के साथ वह देश की एक बड़ी राजनीतिक पार्टी की ओर से राष्ट्रपति चुनाव का टिकट पाने वाली पहली भारतीय-अमेरिकी महिला बन गई हैं। हैरिस ने टिम वाल्ज को पार्टी की तरफ से उपराष्ट्रपति पद का प्रत्याशी चुना है। हैरिस (59) का नवंबर में होने वाले चुनाव में पूर्व राष्ट्रपति तथा रिपब्लिकन पार्टी के प्रत्याशी डोनाल्ड ट्रंप से मुकाबला होगा। हैरिस ने फिलाडेल्फिया की रैली से पहले मंगलवार सुबह मिनेसोटा के गवर्नर टिम वाल्ज (60) को उपराष्ट्रपति पद का प्रत्याशी चुना। वाल्ज 2018 में मिनेसोटा का गवर्नर बनने से पहले 12 साल तक सांसद रह चुके हैं। पिछले महीने राष्ट्रपति जो बाइडन ने आगामी चुनाव में राष्ट्रपति पद की दौड़ से बाहर होने की घोषणा की थी, जिसके बाद भारतीय मूल की उपराष्ट्रपति हैरिस को सत्तारूढ़ डेमोक्रेटिक पार्टी का 2024 का राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार घोषित किया गया था। डेमोक्रेटिक नेशनल कन्वेंशन के डेलीगेट के पांच दिवसीय ऑनलाइन मतदान के बाद हैरिस की उम्मीदवारी की आधिकारिक घोषणा की गई। पार्टी ने एक बयान में कहा कि 99 फीसदी डेलीगेट ने हैरिस के पक्ष में मतदान किया। देशभर के 4,567 डेलीगेट ने हैरिस के लिए वोट डाला। हैरिस अब अपना नामांकन आधिकारिक रूप से स्वीकार करेंगी। नामांकन प्रक्रिया के अगले चरण में डेमोक्रेटिक नेशनल कन्वेंशन (डीएनसी) के सचिव जेसन रे द्वारा रोल कॉल का प्रमाणन तथा हैरिस और उपराष्ट्रपति पद के लिए उनके द्वारा चुने गए उम्मीदवार द्वारा नामांकन की स्वीकृति शामिल है। इसे डीएनसी अध्यक्ष (डीएनसीसी) मिनियन मूर द्वारा प्रमाणित किया जाना है। यह सम्मेलन 19 से 22 अगस्त तक शिकागो में आयोजित किया जाएगा। गत शुक्रवार को हैरिस को सत्तारूढ़ डेमोक्रेटिक पार्टी ने आगामी राष्ट्रपति चुनाव के लिए अपना उम्मीदवार घोषित किया था।

अलास्काः एक ही परिवार के चार सदस्य लापता

एंकरेज। दक्षिण-मध्य अलास्का में होमर के पास एक नाव पलटने के बाद शुरू किया गया खोज अभियान स्थगित कर दिया गया है। अमेरिकी तटरक्षक के एक प्रवक्ता ने यह जानकारी दी। हालांकि वो इस सप्ताह एक ही परिवार के चार सदस्य लापता हो गए थे। एंकरेज डेली न्यूज ने सोमवार को बताया कि लापता लोगों के नाम एक रिश्तेदार क्रिस्टी वेल्स द्वारा बताए गए हैं। उन्होंने बताया कि टेक्सास के रहने वाले मैरी और डेविड मेनार्ड और उनके बेटे कोल्टन (11) और ब्रेटली (7) लापता हैं मैरी और मेनार्ड के माता-पिता के एक बयान के आधार पर क्रिस्टी वेल्स ने बताया कि मेनार्ड को अपने दोस्तों और रिश्तेदारों के साथ समय बिताना और यात्रा करना पसंद था। वेल्स ने कहा कि 37 वर्षीय मैरी मेनार्ड एक नर्स थी और 42 वर्षीय डेविड मेनार्ड बच्चों के साथ घर पर रहते थे और उनका उद्यान की देखभाल का व्यवसाय था।

बांग्लादेश की ताजा स्थिति पर करीबी नजर रख रहा चीन

भाषा। बीजिंग, ढाका

चीन ने बांग्लादेश के घटनाक्रम पर मंगलवार को बेहद सधी हुई प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि वह हिंसा प्रभावित देश की स्थिति पर करीब से नजर रख रहा है। चीनी विदेश मंत्रालय ने मीडिया के सवालों के जवाब में कहा, चीन बांग्लादेश के घटनाक्रम पर करीबी नजर रख रहा है। मंत्रालय ने कहा, बांग्लादेश के एक मित्रवत पड़ोसी और व्यापक रणनीतिक साझेदार के रूप में चीन को पूरी उम्मीद है कि देश में जल्द ही सामाजिक स्थिरता बहाल हो जाएगी। नौकरी में आरक्षण को लेकर व्यापक विरोध प्रदर्शन के बाद बांग्लादेश अनिश्चितता के भंवर में फंस गया है, जिसके कारण प्रधानमंत्री शेख हसीना को इस्तीफा देकर देश छोड़ना पड़ा। हसीना ने एक महीने पहले ही बीजिंग की यात्रा की थी। उनकी यात्रा के दौरान बांग्लादेश और चीन ने अपने द्विपक्षीय संबंधों को व्यापक रणनीतिक सहकारी साझेदारी तक बढ़ाया था। हसीना ने आठ से 10 जुलाई तक चीन की यात्रा की थी। इस यात्रा के दौरान चीनी राष्ट्रपति शी चिनफिंग और प्रधानमंत्री ली क्विंग ने उनसे बातचीत की थी तथा दोनों देशों ने 21 समझौतों पर हस्ताक्षर किए थे। अपनी बैठक के दौरान शी ने कहा था कि दोनों देशों ने अपने संबंधों को व्यापक रणनीतिक साझेदारी के स्तर तक बढ़ा दिया है।

बांग्लादेशी सेना ने शीर्ष पदों पर बड़ा फेरबदल किया

ढाका। बांग्लादेश ने मंगलवार को सेना में शीर्ष पदों पर बड़ा फेरबदल किया, जिसके तहत राष्ट्रीय दूरसंचार निगरानी केंद्र (एनटीएमसी) के महानिदेशक मेजर जनरल जियाउल अहसन को सेवा से मुक्त कर दिया गया है। मीडिया में आई खबर से यह जानकारी मिली। यह फेरबदल आरक्षण प्रणाली को लेकर सरकार विरोधी प्रदर्शनों के चलते शेख हसीना के प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा देकर देश छोड़ने के एक दिन बाद किया गया है। ढाका ट्रिब्यून अखबार ने सेना की मीडिया शाखा इंटर-सर्विसेज पब्लिक रिलेशंस डिपार्टमेंट (आईएसपीआर) द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति का हवाला देते हुए अपनी खबर में कहा कि मेजर जनरल जियाउल अहसन को सेवा से मुक्त कर दिया गया।

मस्क ने ओपनएआई के खिलाफ मुकदमा किया

लॉस एंजिलिस। मशहूर उद्यमी एलन मस्क ने सोमवार को ओपनएआई और इसके दो संस्थापकों-सैम ऑल्टमैन तथा ग्रेग ब्रॉकमैन के खिलाफ मुकदमा दायर किया। उन्होंने आरोप लगाया कि चैटजीपीटी निर्माता ने मुनाफा कमाने के बजाय जनता की भलाई के लिए काम करने के अपने मूल उद्देश्यों से विश्वासघात किया है। नॉर्दर्न कैलिफोर्निया की संघीय अदालत में दायर मुकदमे में मस्क के मामले को परोपकारिता बनाम लालच बताया गया है। शिकायत के अनुसार, मुकदमे में नामित ऑल्टमैन और अन्य लोगों ने जानबूझकर मस्क को धोखा दिया और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) से उत्पन्न अस्तित्वगत खतरों के बारे में मस्क की मानवीय चिंताओं को दरकिनार किया।

अमेज़न ग्रेट फ्रीडम फेस्टिवल मनाएगा

ग्लोबल। अमेज़न डाट इन के बहुप्रतीक्षित ग्रेट फ्रीडम फेस्टिवल आज छह अगस्त से आजादी का जश्न मनाने के लिए शुरू हो गया। 11 अगस्त तक चलने वाले इस फेस्टिवल में उपभोक्ता कलाकारों एवं बुनकरों, महिला उद्यमियों, स्टार्टअप्स, ब्राण्ड्स एवं स्थानीय स्टोर्स सहित विभिन्न विक्रेताओं की ओर विभिन्न कैटेगरीज़ जैसे स्मार्टफोन, कन्ज़्यूमर इलेक्ट्रोनिक्सए, ग्रॉसरी, फैशन, ब्यूटी असेन्शियल्सए होम एण्ड किचन, बड़े अप्लायन्सेज़, टेलीविज़न आदि में लाखों प्रोडक्ट्स पर आकर्षक ऑफर्स का लाभ उठा सकते हैं। उपभोक्ता जानेमाने ब्राण्ड्स पर बेहतरीन ऑफर्स का फायदा पा सकते हैं। इसकेअलावा एसबीआई क्रेडिट कार्ड एवं ईएमआई लेनदेन के साथ तुरंत 10 फीसदी अतिरिक्त छूट का लाभ भी उठा सकते हैं। ग्रेट फ्रीडम फेस्टिवल के दौरान उपभोक्ता अमेज़न लाइव के साथ जुड़ सकते हैं, जहां विशेषज्ञ इन्फ्लुएंसर्स एवं क्रिएटर्स के द्वारा इंटरैक्टिव सत्र आयोजित किए जाएंगे।

एमजी इनोवेशन पर देगा जोर

ट्रांबे। जेएसडब्ल्यू एमजी मोटर इंडिया ने ड्राइव भारत में इलेक्ट्रिक वाहनों ईवी के लिए इनोवेशन की एक श्रृंखला को पेश किया। इस कार्यक्रम का आयोजन कंपनी की ओर से भारत मंडपम नई दिल्ली में विविधतापूर्ण ऑटोमोटिव और ईवी ईकोसिस्टम के अग्रणी इंडस्ट्री खिलाड़ियों के साथ मिलकर किया गया था। इस कार्यक्रम में एमजी ईहब को लॉन्च किया गयाए जो एक ओईएम की ओर से इंडस्ट्री का पहला और सबसे बड़ा चार्जिंग प्लेटफॉर्म हैए प्रोजेक्ट रिवाइव, कारों के अलावा ईवी बैटरी को पुनरू उपयोग करने पर केंद्रित है, ईवीपीडिया इलेक्ट्रिक कार यूजर्स के लिए भारत का पहला समर्पित शैक्षणिक और जानकारी भरा प्लेटफॉर्म एमजी.जियो इनोवेटिव कनेक्टिविटी प्लेटफॉर्म जो आने वाले सभी एमजी वाहनों के लिए एक स्टैंडर्ड तौर पर मौजूद होगा। गौरत गुप्ता चीफ ग्रोथ ऑफिसर जेएसडब्ल्यू एमजी मोटर इंडिया ने कहा कि ड्राइवभारत ईवी टेक्नोलॉजी को आगे बढ़ाने और ईवी को अपनाने में तेजी लाने के लिए यूजर अनुभव को बेहतर बनाने की हमारी प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करता है।

माली ने यूक्रेन के साथ राजनयिक संबंध तोड़ा

बामाको। माली की सरकार ने यह आरोप लगाते हुए यूक्रेन से राजनयिक संबंध तोड़ लिया है कि उसने (यूक्रेन ने) पिछले महीने उसके यहां सशस्त्र संगठनों की हमले में मदद की जिसमें माली के सैनिक एवं भाड़े के रूसी (निजी) सैनिकों को भारी नुकसान उठाना पड़ा था। माली सरकार के प्रवक्ता कर्नल अब्दुलाए मैगा ने रविवार को एक बयान में बताया कि संबंधों को तत्काल समाप्त करने का निर्णय एक यूक्रेनी अधिकारी की उन टिप्पणियों के बाद लिया, जिनसे माली में उग्रवाद में यूक्रेन की संलिप्तता का संकेत मिला। यूक्रेन की सैन्य खुफिया शाखा एजेंसी के प्रवक्ता एंड्रीए यूसोव ने पिछले सप्ताह यूक्रेनी प्रसारक सुस्पिलने से कहा कि जुलाई में माली में सशस्त्र संगठनों को हमला करने के लिए सभी आवश्यक जानकारी कीव (यूक्रेन) से मिली थी।

बांग्लादेश में विरोध प्रदर्शनों में मरने वालों की संख्या 440 हुई

भाषा। ढाका

बांग्लादेश में सरकार विरोधी प्रदर्शन में मरने वालों की संख्या मंगलवार को बढ़कर 440 हो गई। स्थानीय मीडिया में आई खबरों के मुताबिक शेख हसीना के प्रधानमंत्री पद से सोमवार को इस्तीफा देने और देश छोड़ने के बाद हुई हिंसा की घटनाओं में 100 से ज्यादा की मौत हुई है। हिंसा प्रभावित देश में सेना स्थिति को नियंत्रित करने में जुटी हुई है। बीडीन्यूज24 डॉट कॉम समाचार पोर्टल ने कहा कि मृतकों की संख्या बढ़ने के बावजूद मंगलवार को स्थिति सामान्य होने के संकेत मिले तथा पुलिस और सेना सड़कों पर गश्त कर रही है। पोर्टल ने कहा कि सोमवार को अशांति और रातभर के तनावपूर्ण हालात के बाद ढाका में मंगलवार सुबह स्थिति मुख्य रूप से शांत रही। रिपोर्ट के अनुसार, बस और अन्य सार्वजनिक वाहन सड़कों पर नजर आए और स्थानीय दुकानदारों ने भी अपनी दुकानें खोलीं। समाचार पोर्टल ने बताया कि सरकारी वाहन कार्यालयों की ओर जाते दिखाई दिए और बैटरी चालित कई रिक्शा भी सड़कों पर नजर आए। बांग्लादेश में सोमवार को उस समय अराजकता फैल गई, जब शेख हसीना ने प्रधानमंत्री पद से अचानक इस्तीफा दे दिया और सैन्य विमान से देश छोड़कर चली गईं। हसीना के देश छोड़कर जाने की खबर फैलते ही सैकड़ों लोगों ने उनके आवास में घुसकर तोड़फोड़ और लूटपाट की। प्रदर्शनकारियों ने राजधानी में स्थित हसीना के आवास सुधा सदन और अन्य प्रतिष्ठानों पर हमला कर तोड़फोड़ और आगजनी की। हसीना की अवामी लीग सरकार के मंत्रियों, पार्टी सांसदों और नेताओं के ढाका और ढाका के बाहर स्थित आवासों एवं व्यावसायिक प्रतिष्ठानों को भी निशाना बनाया गया। बांग्ला भाषा के दैनिक समाचार पत्र प्रथम आलो ने मंगलवार को बताया कि सोमवार को ढाका सहित देश के विभिन्न हिस्सों में हुई झड़पों में कम से कम 109 लोग मारे गए। इससे पहले, समाचार पत्र ने रविवार दोपहर 12 बजे तक 98 लोगों की मौत होने की सूचना दी थी और रविवार आधी रात को 16 और लोगों की जान जाने की सूचना मिली। उसने बताया कि रविवार को कुल 114 लोगों की मौत हुई। समाचार पत्र ने कहा, इसके साथ ही 16 जुलाई से कल तक 21 दिन में हिंसा में जान गंवाने वालों की कुल संख्या 440 हो गई है। उने कहा कि सोमवार को सुबह 11 बजे से रात आठ बजे के बीच 37 शव ढाका मेडिकल कॉलेज अस्पताल लाए गए। समाचार पत्र ने अस्पताल सूत्रों का हवाला देते हुए बताया कि 500 घायलों को अस्पताल लाया गया, जिनमें से कई को गोलियां लगी थीं। ढाका ट्रिब्यून समाचार पत्र ने कहा कि सोमवार को पुलिस और उपद्रवियों के बीच झड़प के बाद राजधानी के बाहरी इलाके धामराई और सावर में कम से कम 18 लोग मारे गए। उसने बताया कि सोमवार को राजधानी के उत्तरा में सादे कपड़ों में आए कुछ लोगों द्वारा प्रदर्शनकारियों पर कथित तौर पर गोलीबारी किए जाने से 10 लोगों की मौत हो गई।

अवामी लीग के नेता के होटल में 24 लोगों को जिंदा जलाया गया

ढाका। बांग्लादेश में एक इंडोनेशियाई नागरिक सहित कम से कम 24 लोगों को भीड़ ने अवामी लीग पार्टी के एक नेता के स्वामित्व वाले एक होटल में जिंदा जला दिया। यह घटना उस समय हुई जब पार्टी की नेता शेख हसीना प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा देने के बाद देश छोड़कर चली गईं है। स्थानीय पत्रकारों और अस्पताल सूत्रों ने मंगलवार को यह जानकारी दी। सोमवार देर रात भीड़ ने जोशोर जिले में जिला अवामी लीग के महासचिव शाहीन चक्कलदर के स्वामित्व वाले जाबिर इंटरनेशनल होटल में आग लगा दी, जिसमें 24 लोगों की जिंदा जलकर मौत हो गई। इस घटना में मरने वाले ज्यादातर होटल में ठहरे लोग थे। ढाका के एक स्थानीय पत्रकार ने पीटीआई भाषा को फोन पर बताया, मृतकों में एक इंडोनेशियाई नागरिक भी शामिल है। उन्होंने कहा कि जोशोर जनरल अस्पताल के चिकित्सकों ने पुष्टि की है कि उन्होने 24 शव की गिनती की है, जबकि जीवित बचे होटल कर्मचारियों को डर है कि मलबे में और भी शव हो सकते हैं। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, अवामी लीग सरकार का विरोध करने वाली उग्र भीड़ ने होटल के भूतल पर आग लगा दी और यह शीघ्र ही ऊपरी मंजिलों तक फैल गई। पूरे बांग्लादेश से लगभग एक जैसी खबरें आईं है और वहां गुस्साई भीड़ ने अवामी लीग के कई नेताओं और कार्यकर्ताओं के आवासों और व्यापारिक प्रतिष्ठानों में एकसाथ तोड़फोड़ की।

मंदिरों, हिंदुओं के घरों में तोड़फोड़

ढाका। बांग्लादेश में शेख हसीना के प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा देकर देश छोड़ने के बाद हुई हिंसा में कई हिंदू मंदिरों, घरों और व्यापारिक प्रतिष्ठानों में तोड़फोड़ की गई, महिलाओं पर हमला किया गया तथा अवामी लीग पार्टी से जुड़े कम से कम दो हिंदू नेताओं की हत्या कर दी गई। समुदाय के नेताओं ने मंगलवार को यह जानकारी दी। बांग्लादेश हिंदू बौद्ध ईसाई एकता परिषद नेता काजोल देबनाथ ने यहां समूह की एक बैठकसे इतर पीटीआई-भाषा को बताया, हमने देश के विभिन्न हिस्सों में हुई बर्बरता की कुछ घटनाओं को संकलित किया है, जिससे हिंदू और अन्य अल्पसंख्यक समुदाय चिंतित है। देबनाथ ने बताया कि उपलब्ध जानकारी के अनुसार, दो हिंदू नेताओं की उत्तर-पश्चिमी सिराजगंज और रंगपुर में हत्या कर दी गई, जो हसीना की अवामी लीग पार्टी के नेता थे। उन्होंने कहा कि परिषद अभी और जानकारी एकत्र कर रही है। देबनाथ ने कहा कि हमलावरों ने दुकानों, मंदिरों और घरों में लूटपाट की और हिंदू महिलाओं पर हमला किया। परिषद के नेताओं के अनुसार, जिन जिलों में धार्मिक अल्पसंख्यकों और उनके घरों या व्यवसायों पर हमला किया गया, उनमें पंचगढ़, दिनाजपुर, रंगपुर, बोगुरा, सिराजगंज, शेरपुर, किशोरगंज, पश्चिम जशोर, मगुरा, नरैल, दक्षिणपश्चिम खुलना, पटुआखली, सतखीरा, मध्य नरसिंगडी, तंगैल, उत्तर पश्चिम लक्खीपुर, फेनी, चटगांव और हबीगंज शामिल हैं। परिषद के महासचिव राणा दासगुप्ता ने एक बयान में कहा, स्थिति गंभीर है और पूरे बांग्लादेश में हिंदुओं पर लगातार हमले हो रहे हैं।

ढाका सचिवालय में अधिकारियों, कर्मचारियों में भय और अनिश्चितता का माहौल

ढाका। बांग्लादेश में शेख हसीना की सरकार के सत्ता से हटने के बाद भय एवं चिंता के बीच ढाका में विभिन्न सरकारी कार्यालयों में अधिकारियों और कर्मचारियों की मंगलवार को उपस्थिति बेहद कम रही। स्थानीय मीडिया ने यह जानकारी दी। शेख हसीना के बांग्लादेश के प्रधानमंत्री पद से सोमवार को इस्तीफा देने और देश छोड़कर चले जाने के बाद वहां पैदा हुई अराजकता के बीच सेना देश की बागडोर संभालने के लिए आगे आई है। समाचारपत्र ढाका ट्रिब्यून की खबर के मुताबिक हसीना सरकार गिरने के बाद पहले दिन मंगलवार को सचिवालय में माहौल तनावपूर्ण रहा। समाचारपत्र के मुताबिक देश के विभिन्न मंत्रालयों के कार्यालयों में उपस्थिति काफी कम थी तथा मंत्री एवं संसद सदस्य भी अनुपस्थित थे। जो लोग काम पर आए थे, वे भय और चिंता में थे। ऐसा बताया गया कि पिछली रात बंगबंधु एवेन्यू स्थित आवामी लीग के केंद्रीय कार्यालय में आग लगा दी गई, तथा लूटपाट और तोड़फोड़ की गई। सुबह-सुबह पार्टी कार्यालय से आग की गंध सचिवालय तक पहुंची, जिससे अधिकारियों व कर्मचारियों में भय बढ़ गया।

क्विक न्यूज

बांग्लादेश की घटनाओं की यूएन के नेतृत्व में जांच हो: ब्रिटेन

लंदन। ब्रिटेन सरकार ने पिछले कुछ हफ्तों में बांग्लादेश में हुई हिंसक घटनाओं की संयुक्त राष्ट्र के नेतृत्व में जांच कराए जाने की मांग की है। हिंसक विरोध-प्रदर्शनों के बीच, सोमवार को प्रधानमंत्री शेख हसीना ने पद से इस्तीफा दे दिया और उन्हें ब्रिटेन में कथित तौर पर शरण मांगने से पहले फिलहाल देश छोड़कर भारत जाना पड़ा। विदेश मंत्री डेविड लैमी ने सोमवार को एक बयान जारी कर बांग्लादेश में बीते दो हफ्तों में हुई अभूतपूर्व हिंसा और जनहानि की निंदा की तथा कहा कि ब्रिटेन देश (बांग्लादेश) के लोकतांत्रिक भविष्य के लिए कदम उठाए जाते देखना चाहता है। ब्रिटेन सरकार ने हसीना द्वारा ब्रिटेन में राजनीतिक शरण मांगने की खबरों पर कोई आधिकारिक टिप्पणी नहीं की है। गृह कार्यालय के सूत्रों ने केवल यह संकेत दिया है कि देश के आव्रजन नियम विशेष रूप से शरण लेने के लिए व्यक्तियों को ब्रिटेन आने की अनुमति नहीं देते हैं। लैमी ने बयान में कहा, बांग्लादेश में पिछले दो हफ्तों में अभूतपूर्व हिंसा और जनहानि हुई है। थल सेनाध्यक्ष ने सत्ता हस्तांतरण के लिए एक अवधि की घोषणा की है। विदेश मंत्री ने कहा, सभी पक्षों को अब हिंसा को समाप्त करने, शांति बहाल करने, तनाव घटाने और जनहानि को रोकने के लिए साथ मिलकर काम करने की आवश्यकता है।

ब्रिटेन में हिंसक झड़पों के मद्देनजर भारतीय उच्चायोग ने नागरिकों के लिए सुरक्षा परामर्श जारी किया

लंदन। ब्रिटेन के कुछ हिस्सों में प्रवासियों और शरण चाहने वालों को निशाना बनाते हुए पिछले सप्ताह से जारी हिंसक झड़पों के बीच लंदन स्थित भारतीय उच्चायोग ने मंगलवार को भारतीय नागरिकों को सतर्क रहने और सावधानी बरतने का एक परामर्श जारी किया। उच्चायोग ने यह परामर्श विभिन्न सोशल मीडिया मंचों पर पोस्ट किया है। इसमें जरूरतमंद व्यक्तियों के वास्ते तत्काल सहायता के लिए आपात संपर्क नंबर भी दिया गया है। यह परामर्श ऐसे समय जारी किया गया है जब एक सप्ताह पहले दक्षिण-पश्चिम ब्रिटेन के साउथपोर्ट में तीन लड़कियों की चाकू घोंपकर हत्या कर दी गई थी तथा इस मामले के संदिग्ध को लेकर सोशल मीडिया पर गलत दावा किया गया था। ब्रिटेन की यात्रा करने वाले भारतीय नागरिकों के लिए परामर्श शीर्षक वाले इस संदेश में कहा गया है, भारतीय यात्रियों को ब्रिटेन के कुछ हिस्सों में हाल में फैली अशांति के बारे में पता होगा। लंदन स्थित भारतीय उच्चायोग स्थिति पर बारीकी से नजर रखे हुए है।

अमेरिका ने अपने नागरिकों को बांग्लादेश की यात्रा न करने की सलाह दी

वाशिंगटन। अमेरिका ने मंगलवार को अपने नागरिकों को बांग्लादेश की यात्रा न करने की सलाह दी। उसने कुछ हफ्तों से जारी विरोध-प्रदर्शनों के बीच, सोमवार को प्रधानमंत्री पद से शेख हसीना के अचानक इस्तीफा देने और देश छोड़कर जाने से पैदा हुए हालात के मद्देनजर यह कदम उठाया। अमेरिकी विदेश विभाग ने उच्चतम स्तर (स्तर 4 : यात्रा न करें) का यात्रा परामर्श जारी करते हुए बांग्लादेश में नियुक्त अमेरिका के गैर-आपातकालीन सरकारी कर्मचारियों और उनके परिजनों को तुरंत देश छोड़ने की सलाह भी दी है। बांग्लादेश में आरक्षण विरोधी हिंसक प्रदर्शनों में अब तक 100 से अधिक लोग मारे जा चुके हैं। हसीना सोमवार रात बांग्लादेशी वायुसेना के एक सी-130 जे सैन्य विमान से भारत में गाजियाबाद के हिंडन एयरबेस पर उतरीं, जहां से उन्हें अज्ञात स्थान पर ले जाया गया। बताया जा रहा है कि हसीना की लंदन जाने की योजना है, लेकिन इसमें अब अड़चन आ गई है।

दुबई ने 2024 के पहले छह महीनों में रिकॉर्ड 9.31 मिलियन विजिटर्स का स्वागत किया

दुबई। संयुक्त अरब अमीरात .रू दुबई के अर्थव्यवस्था और पर्यटन विभाग डीईटी द्वारा प्रकाशित आंकड़ों के अनुसार जनवरी से जून 2024 तक दुबई ने 9.31 मिलियन इंटरनेशनल ओवरनाइट विजिटर्स का स्वागत कियाए जो कि 2023 की पहली छमाही में 8.55 मिलियन पर्यटकों के आगमन की तुलना में 9 प्रतिशत अधिक है। 2023 में एक ऐतिहासिक उपलब्धि के बाद जब शहर ने 17.15 मिलियन इंटरनेशनल ओवरनाइट विजिटर्स की मेजबानी की। दुबई ने इस वर्ष की पहली छमाही में अपनी मजबूत पर्यटन गति बनाए रखी, जिससे शहर 2024 में रिकॉर्ड प्रदर्शन की राह पर चल पड़ा। डीईटी के प्रयासों से प्रेरित, साझेदारों और हितधारकों के सहयोग सेए इंटरनेशनल विजिटर्स में वृद्धि का उद्देश्य दुबई को सर्वश्रेष्ठ शहर बनाने की व्यापक योजना के साथ मेल खाता है, जहां लोग यात्रा, निवास और कार्य करना चाहते हैं। पहली छमाही के दौरान इंटरनेशनल विजिटर्स में वृद्धि पूरे शहर में प्रमुख पर्यटन स्तंभों पर स्थापित रणनीतियों का परिणाम हैए जिन्हें सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों के हितधारकों के साथ साझेदारी में बनाया और लागू किया गया है। 2024 की शुरुआत एक हाई नोट पर हुईए जब दुबई को जनवरी में ट्रिपएडवाइजर ट्रैवलर्स चॉइस अवार्ड्स में लगातार तीसरे वर्ष के लिए दुनिया का नंबर 1 गंतव्य नामित किया गयाए जिससे यह अनूठी प्रशंसा प्राप्त करने वाला पहला शहर बन गया। जनवरी से जून 2024 तकए दक्षिण एशिया 1.62 मिलियन आगंतुकों 17 प्रतिशत के साथ एक और प्रमुख स्रोत बाजार था। उत्तरपूर्व और दक्षिणपूर्व एशिया में वर्ष की शुरुआत में 8प्रतिशत की हिस्सेदारी से बढ़कर 2024 पहली छमाही के अंत तक कुल आगंतुकों में 10प्रतिशत हिस्सेदारी 896,000 हो गई।

संरा ने इजराइल पर हमले में संभावित संलिप्तता को लेकर अपने कर्मचारियों को बर्खास्त किया

यरूशलम। संयुक्त राष्ट्र (संरा) ने सोमवार को कहा कि उसने सात अक्टूबर को इजराइल पर हुए हमास के हमले में यूएनआरडब्ल्यूए के कर्मचारियों की संलिप्तता की बात एक आंतरिक जांच में सामने आने के बाद अपनी इस एजेंसी के कुछ कर्मचारियों को नौकरी से बर्खास्त कर दिया है। संयुक्त राष्ट्र महासचिव के कार्यालय ने पत्रकारों को दिए एक संक्षिप्त बयान में इस फैसले की घोषणा की। महासचिव के उप प्रवक्ता फरहान हक ने हमले में फलस्तीनी शरणार्थियों के लिए संयुक्त राष्ट्र राहत और कार्य एजेंसी (यूएनआरडब्ल्यूए) के कर्मचारियों की संभावित भूमिका या उन साक्ष्यों के बारे में विस्तार से नहीं बताया, जिनके कारण यह फैसला किया गया है।यूएनआरडब्ल्यूए की संचार निदेशक जूलियट तौमा ने बताया कि एजेंसी ने इन आरोपों के कारण पहले भी अपने 12 कर्मचारियों को नौकरी से निकाल दिया था और सात कर्मचारियों को बिना वेतन के प्रशासनिक अवकाश पर भेज दिया था। संयुक्त राष्ट्र ने यह स्पष्ट नहीं किया कि एजेंसी ने कुल कितने कर्मचारियों को नौकरी से निकाला है। इजराइल ने जनवरी में यूएनआरडब्ल्यूए के 12 कर्मचारियों पर सात अक्टूबर को इजराइल पर हुए हमले में शामिल होने का आरोप लगाया था।

इमरान खान के समर्थकों ने उनकी गिरफ्तारी का एक वर्ष पूरा होने पर विशाल रैली निकाली

पेशावर (पाकिस्तान)। पाकिस्तान में जेल में बंद पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान के हजारों समर्थकों ने सोमवार को उनकी गिरफ्तारी का एक वर्ष पूरा होने पर खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में एक विशाल रैली निकाली और महीने के अंत तक राजधानी इस्लामाबाद में भी ऐसी ही रैली कर उनकी रिहाई के लिए समन्वित प्रयास करने का संकल्प लिया। पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) ने पंजाब की सीमा से लगते पार्टी शासित प्रांत के स्वाबी जिले में सोमवार को रैली की। इस रैली को पार्टी के अध्यक्ष गोहर अली खान तथा महासचिव उमर अयूब के अलावा खैबर पख्तूनख्वा के मुख्यमंत्री अली अमीन गांदापुर ने संबोधित किया। खान (71) को पिछले साल पांच अगस्त को गिरफ्तार किया गया था और उन्हें अटक जेल ले जाया गया था। हालांकि, सितंबर में उन्हें रावलपिंडी की अडियाला जेल ले जाया गया। अगस्त 2018 से अप्रैल 2022 तक पाकिस्तान के प्रधानमंत्री रहे खान पर 200 से अधिक मुकदमे दर्ज हैं।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को फिजी के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया

भाषा। सुवा

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को मंगलवार को फिजी के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार कम्पैनियन ऑफ द ऑर्डर ऑफ फिजी से सम्मानित किया गया। मुर्मू ने दोनों देशों के संबंधों की प्रशंसा की और कहा कि भारत एक मजबूत, लचीला और अधिक समृद्ध राष्ट्र बनाने के लिए फिजी के साथ साझेदारी करने को तैयार है। राष्ट्रपति कार्यालय ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में कहा, फिजी के राष्ट्रपति रातू विलियम मैवालिली कटोनिवेरे ने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को कम्पैनियन ऑफ द ऑर्डर ऑफ फिजी पुरस्कार प्रदान किया। यह फिजी का सर्वोच्च नागरिक सम्मान है। फिजी की दो दिवसीय यात्रा पर आईं मुर्मू ने इस सम्मान को भारत और फिजी के बीच दोस्ती के गहरे संबंधों का प्रतिबिंब बताया। यह किसी भारतीय राष्ट्राध्यक्ष की इस द्वीपसमूह राष्ट्र की पहली यात्रा है। राष्ट्रपति मुर्मू ने फिजी की संसद को भी संबोधित किया। उन्होंने कहा, जैसे-जैसे भारत वैश्विक मंच पर मजबूती से उभर रहा है, हम एक मजबूत, लचीला और अधिक समृद्ध राष्ट्र बनाने के लिए आपकी प्राथमिकताओं के अनुसार फिजी के साथ साझेदारी करने के लिए तैयार हैं। आइए, हम अपने दोनों प्रिय देशों के लोगों के पारस्परिक लाभ के लिए अपनी साझेदारी की पूरी क्षमता का उपयोग करने के लिए एक साथ आएं। उन्होंने कहा कि आकार में बहुत अंतर होने के बावजूद भारत और फिजी में जीवंत लोकतंत्र समेत काफी कुछ एक समान है। उन्होंने याद किया कि करीब 10 वर्ष पहले इसी हॉल में बोलते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कुछ मूल मूल्यों का जिक्र किया था जो भारत और फिजी को जोड़ते हैं।

मोहम्मद यूनुस : गरीबी उन्मूलन के लिए नोबल पुरस्कार पाने से हसीना सरकार से तल्ख रिश्ते तक का सफर

ढाका। बांग्लादेश में शेख हसीना के प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा देकर देश छोड़ने के बाद बदलते घटनाक्रम में सबसे प्रमुख तौर से नोबेल पुरस्कार विजेता मोहम्मद यूनुस का नाम उभरा है, जिन्हें प्रदर्शनकारी देश की अंतरिम सरकार का प्रमुख बनाना चाहते हैं। हसीना के देश छोड़कर जाने की खबर फैलते ही सैकड़ों लोगों ने उनके आवास में घुसकर तोड़फोड़ और लूटपाट की। देश में सरकार विरोधी प्रदर्शनों में पिछले 15 दिन में 300 से अधिक लोगों की मौत हुई है। बांग्लादेश की सेना ने अस्थाई रूप से देश का नियंत्रण अपने हाथ में ले लिया है, लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि देश के राष्ट्रपति द्वारा मंगलवार को संसद को भंग करने के बाद अंतरिम सरकार में उसकी क्या भूमिका होगी। इस अनिश्चितता के बीच, एक नाम मोहम्मद यूनुस का सामने आया है जो नए सिरे से चुनावों की घोषणा होने तक बांग्लादेश की बागडोर संभाल सकते हैं। यूनूस नोबेल पुरस्कार विजेता हैं, जिन्हें सबसे गरीब लोगों का बैंकर भी कहा जाता है। इसे लेकर उन्हें आलोचना का सामना भी करना पड़ा था और एक बार हसीना ने यूनुस को खून चूसने वाला कहा था। यूनुस (83) हसीना के कटु आलोचक और विरोधी माने जाते हैं।

बड़ी पर्यावरणीय समस्याओं को हल कर सकता है एआई

भाषा। सिडनी

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) ने हमारे जीवन में कई तरीकों से क्रांति ला दी है, हमारे सोशल मीडिया पोस्ट को अनूठा बनाने से लेकर हमें वाहन चलाने के लिए आवश्यक निर्देश देने और हमारे स्वास्थ्य की निगरानी करने तक, जीवन के कई क्षेत्रों में अपनी जगह बना ली है। हाल के वर्षों में, इस बात की उम्मीद बढ़ी हैं कि एआई जलवायु परिवर्तन जैसी वैश्विक पर्यावरणीय समस्याओं से निपटने में मानव की मदद कर सकता है। एआई में कंप्यूटर का उपयोग कर उन्हें इंसानों की तरह सोचने के लिए तैयार करना शामिल है। यह जटिल समस्याओं को हल कर सकता है और भारी मात्रा में डेटा का उपयोग अपने अनुसार कर सकता है। ऐसे चार तरीके जिनसे एआई प्राकृतिक दुनिया की मदद कर सकता है-- ऊर्जा दक्षता : एआई प्रणालियां ऊर्जा उपयोग को नियंत्रित और अनुकूलित कर सकती हैं। उदाहरण के लिए, एआई-संचालित स्मार्ट ग्रिड उपभोक्ताओं की मांग को पूरा करने के लिए बिजली उत्पादन की निगरानी और प्रबंधन करते हैं, जिससे ऊर्जा लागत कम हो सकती है और अधिक कुशल ऊर्जा उपयोग संभव हो सकता है। एआई बड़े वाणिज्यिक और औद्योगिक प्रणालियों द्वारा उपयोग की जाने वाली ऊर्जा को सुव्यवस्थित करने में भी मदद कर सकता है। उदाहरण के लिए, प्रौद्योगिकी क्षेत्र की दिग्गज कंपनी गूगल ने अपने डेटा केंद्रों को ठंडा करने के लिए आवश्यक ऊर्जा की मात्रा को 40 प्रतिशत तक कम करने के लिए एआई का उपयोग किया। शहरी बुनियादी ढांचा : एआई द्वारा संचालित अपशिष्ट प्रबंधन प्रणालियां पुनर्चक्रण दरों को बढ़ाने में मदद कर सकती हैं। उदाहरण के लिए, ब्रिटेन में पुनर्चक्रण करने वाली कंपनी रीसाइकिलआई पुनर्चक्रण की मात्रा बढ़ाने के लिए एआई का उपयोग करती है – और इस तरह, लैंडफिल साइट पर दबाव घटाती है। एआई-संचालित स्मार्ट सिटी प्रौद्योगिकियां सार्वजनिक परिवहन प्रणालियों को अधिक सुचारू रूप से चलाने में मदद करती हैं, जिससे भीड़भाड़ कम हो सकती है और वाहन उत्सर्जन न्यूनतम हो सकता है। शहरों में वायु गुणवत्ता सुधारने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता का भी इस्तेमाल किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, आईबीएम सेंसर और उपग्रहों से मौसम और वायु प्रदूषण के आंकड़ों का विश्लेषण करने के लिए इस तकनीक का इस्तेमाल करता है।

एडब्ल्यूएस डेटा सेंटर्स के पर्यावरण प्रभाव को कम कर रहा

ग्लोबल। अमेज़न वेब सर्विसेज़ (एडब्ल्यूएस) द्वारा स्वीकृत एवं एक्सेंचर द्वारा संचालित किए गए एक नए अध्ययन में सामने आया है कि भारत एवं विश्व में संस्थानों द्वारा आईटी वर्कलोड को अपने इन्फ्रास्ट्रक्चर की बजाय एडब्लूएस क्लाउड डेटा सेंटर्स पर स्थानांतरित करके पर्यावरण पर उसके प्रभाव को असरदार तरीके से कम किया जा सकता है। एक्सेंचर का अनुमान है कि एडब्लूएस ग्लोबल इन्फ्रास्ट्रक्चर परिसर के इन्फ्रास्ट्रक्चर के मुकाबले 4.1 गुना ज्यादा प्रभावशाली होता है । भारतीय संगठन अपने एआई वर्कलोड को अपने परिसर में मौजूद डेटा सेंटर्स के मुकाबले एडब्लूएस पर स्थानांतरित करके उससे उत्पन्न होने वाले कार्बन में 99 प्रतिशत तक की कमी ला सकते हैं। अध्ययन में सामने आया है कि भारत में भारी कंप्यूटिंग या एआई वर्कलोड के लिए एडब्लूएस डेटा सेंटर्स केउपयोग से ऑन.परिसर डेटा सेंटर्स की तुलना में कार्बन उत्सर्जन 98 प्रतिशत तक कम हो जाता है। यह एडब्लूएस में ज्यादा प्रभावशाली हार्डवेयर 32 प्रतिशत के उपयोग, पॉवर एवं कूलिंग एफिशियंसी में सुधार 35 प्रतिशत और अतिरिक्त कार्बन, फ्री एनर्जी प्रोक्योरमेंट 31 प्रतिशत के कारण संभव होता है। एआई वर्कलोड में कार्बन कम करने की क्षमता 99 प्रतिशत तक बढ़ जाती है क्योंकि यह एडब्लूएस पर ऑप्टिमाईज़ हो जाता है। जेना लीनर हेड, एनवायरनमेंट सोशल गवर्नेंस-ईएसजी एवं एक्सटर्नल इंगेज़मेंट, एडब्लूएस ग्लोबल ने कहा कि संगठनों द्वारा विश्व में आईटी पर होने वाला 85 प्रतिशत खर्च उनके परिसर में होता ह, इसलिए एआईवर्कलोड को एडब्लूएस पर ट्रांसफर करके कार्बन उत्सर्जन में 99 प्रतिशत की कमी भारतीय संगठनों के लिए सस्टेनेबिलिटी का ज्यादा व्यवहारिक विकल्प है।

भारतीय हॉकी टीम का स्वर्णिम सपना टूटा

सेमीफाइनल में जर्मनी ने 3-2 से हराया

भाषा। पेरिस

विश्व चैम्पियन जर्मनी ने भारतीय हॉकी टीम का 44 साल बाद ओलंपिक स्वर्ण पदक जीतने का सपना मंगलवार को सेमीफाइनल में उसे 3-2 से हराकर तोड़ दिया। अपने अनुभवी डिफेंडर अमित रोहिदास के बिना उतरी भारतीय टीम ने आज दबाव में कई गलतियां कीं जिसका जर्मनी ने पूरा फायदा उठाया। भारत के लिए सातवें मिनट में कप्तान हरमनप्रीत सिंह ने और 36वें मिनट में सुखजीत सिंह ने गोल किया जबकि जर्मनी के लिए गोंजालो पेयाट ने 18वें, क्रिस्टोफर रूर ने 27वें और मार्को मिल्टकाउ ने 54वें मिनट में गोल दागे। भारतीय टीम अब आठ अगस्त को कांस्य पदक के मुकाबले में स्पेन से खेलेगी जबकि फाइनल नीदरलैंड और जर्मनी के बीच खेला जाएगा।

इससे पहले ब्रिटेन के खिलाफ क्वार्टर फाइनल में दस खिलाड़ियों तक सिमटने के बावजूद भारतीय टीम ने जिस साहस और कौशल का प्रदर्शन करके मुकाबला पेनल्टी शूटआउट तक खिंचा , वह काबिले तारीफ है। तोक्यो ओलंपिक कांस्य पदक मैच में जर्मनी की पेनल्टी बचाकर भारत को 41 साल बाद पदक दिलाने वाले नायक श्रीजेश एक बार फिर जीत के सूत्रधार बने। उन्होंने शूटआउट में ब्रिटेन के दो शॉट बचाए और इससे पहले निर्धारित समय के भीतर भी ब्रिटेन ने 28 बार भारतीय गोल पर हमला बोला और दस पेनल्टी कॉर्नर बनाए लेकिन महज एक सफलता मिली। छत्तीस वर्ष के श्रीजेश का यह आखिरी टूर्नामेंट है और उन्हें स्वर्ण पदक के साथ विदा करने का मिशन भारतीय टीम के लिए अतिरिक्त प्रेरणा बना है। भारत ने आठ ओलंपिक स्वर्ण में से आखिरी 1980 में मॉस्को में जीता था और अब पेरिस में उसके पास 44 साल बाद इतिहास रचने का मौका है।

चूक गया जेना का भाला, ओलंपिक से बाहर

पेरिस। गत चैंपियन भारत के नीरज चोपड़ा ने मंगलवार को यहां ग्रुप बी क्वालीफिकेशन में अपने पहले ही प्रयास में 89.34 मीटर के थ्रो के साथ पेरिस ओलंपिक खेलों की पुरुष भाला फेंक स्पर्धा के फाइनल में जगह बनाई लेकिन किशोर जेना बाहर हो गए। भारत के किशोर जेना हालांकि ग्रुप ए क्वालीफिकेशन में 80.73 मीटर के प्रयास से नौवें और कुल 18वें स्थान पर रहे और शीर्ष 12 खिलाड़ियों में जगह बनाकर फाइनल में प्रवेश करने में नाकाम रहे। ग्रुप ए और बी क्वालीफिकेशन के बाद 84 मीटर या इससे अधिक का थ्रो करने वाले सभी खिलाड़ी या दोनों ग्रुप से शीर्ष 12 खिलाड़ियों ने फाइनल के लिए क्वालीफाई किया। जेना ने अपने पहले प्रयास में भाले को 80.73 मीटर की दूरी तक फेंका लेकिन अपने दूसरे प्रयास में फाउल कर गए। उन्होंने अपने तीसरे और अंतिम प्रयास में भाले को 80.21 मीटर की दूरी तक फेंका। ग्रुप बी क्वालीफिकेशन में सबसे पहले थ्रो करने उतरे नीरज ने 89.34 मीटर से सत्र का अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए आठ अगस्त को होने वाले फाइनल के लिए क्वालीफाई कर लिया। नीरज ने तोक्यो ओलंपिक में भी अपने पहले ही प्रयास में फाइनल के लिए क्वालीफाई कर लिया था। नीरज ने ग्रुप ए और बी दोनों में शीर्ष पर रहते हुए फाइनल में प्रवेश किया और इस तरह एडक्टर की चोट से जुड़ी चिंताओं को भी पूरी तरह से खारिज कर दिया। यह नीरज के करियर का दूसरा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन भी है। इस गत ओलंपिक और विश्व चैंपियन ने 87.58 मीटर के प्रयास के साथ तोक्यो ओलंपिक का स्वर्ण पदक जीता था जबकि उनका निजी सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 89.94 मीटर है जो उन्होंने 2022 में स्टॉकहोम डाइमंड लीग में रजत पदक जीतने के दौरान किया था। यह राष्ट्रीय रिकॉर्ड भी है।

मैं अपने पहले प्रयास में ही अच्छा करना चाहता हूं: चोपड़ा

पेरिस। मौजूदा चैंपियन भारत के भाला फेंक खिलाड़ी नीरज चोपड़ा ने मंगलवार को यहां पेरिस ओलंपिक में इस सत्र के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के साथ फाइनल में क्वालीफाई करने के बाद कहा कि वह अपने पहले प्रयास में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन की कोशिश करते हैं। उन्होंने कहा, हम इस बातचीत (मीडिया से) को जितनी जल्दी खत्म करेंगे मुझे विश्राम करने का उतना अधिक समय मिलेगा। चोपड़ा ने कहा, ऐसा पहले भी हुआ है जब मेरा शुरुआती थ्रो अच्छा नहीं रहा है लेकिन मैं पहले प्रयास में बेहतर करने की कोशिश करता हूं। चोपड़ा के प्रदर्शन ने उनकी चोट को लेकर चिंताओं को भी दूर कर दिया। उन्होंने कहा कि वह गुरुवार को फाइनल के लिए अच्छी स्थिति में है। इस खिलाड़ी ने कहा, मैं अब बेहतर हूं। मैं फाइनल पर ध्यान केंद्रित करूंगा। मैं इसे ध्यान में रखने और ठीक से अभ्यास करने की कोशिश कर रहा हूं। मैं अब बेहतर महसूस कर रहा हूं। मैं फाइनल में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने की कोशिश करूंगा। चोपड़ा ने स्वीकार किया कि फाइनल में चुनौती पूरी तरह से अलग होगी। उन्होंने कहा, फाइनल में हर किसी की मानसिकता अलग होती है। हमें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि हमने अच्छी शुरुआत की है और हम फाइनल के लिए जितना बेहतर तैयार होंगे।

ओलंपिक पदक तालिका

देश	स्वर्ण	रजत	कांस्य	कुल
अमेरिका	21	30	28	79
चीन	21	18	14	53
फ्रांस	13	16	19	48
ऑस्ट्रेलिया	13	12	08	33
ग्रेट ब्रिटेन	12	13	17	42
कोरिया	11	08	07	26
जापान	10	05	11	26
इटली	09	10	06	25
जर्मनी	08	05	04	17
नीदरलैंड	07	05	06	18
भारत	00	00	03	03

खेल गांव में मनु के साथ पीटी ऊषा

ओलंपिक मैराथन तैराकी अभ्यास रद्द

पेरिस। सीन नदी के पानी की गुणवत्ता को लेकर व्यक्त की जा रही चिंताओं के बीच मंगलवार को इस नदी पर होने वाली ओलंपिक मैराथन तैराकी परीक्षण प्रतियोगिता को रद्द कर दिया गया।पेरिस ओलंपिक 2024 की प्रवक्ता ऐनी डेस्कैम्प्स ने पुष्टि की कि वर्ल्ड एक्वेटिक्स ने अभ्यास रद्द करने का निर्णय लिया है।फैसला ट्रायथलॉन मिश्रित रिले प्रतियोगिता के सीन नदी पर सफल आयोजन के एक दिन बाद आया है। ीन नदी के पानी की गुणवत्ता पर ओलंपिक खेल शुरू होने से पहले से ही चिंता व्यक्त की जा रही है। इस कारण पहले भी कुछ अभ्यास कार्यक्रम रद्द कर दिए गए थे।

सर्फिंग सेमीफाइनल के दौरान दिखी व्हेल

ताहिती। ताहिती में पेरिस ओलंपिक खेलों की सर्फिंग प्रतियोगिता के अंतिम दिन सोमवार दोपहर जब सभी की निगाहें समुद्र में अपना कौशल दिखा रहे खिलाड़ियों पर टिकी थी तभी वहां एक नया दर्शक पहुंच गया जो थी एक व्हेल। ब्राज़ील की तातियाना वेस्टन वेब और कोस्टा रिका की ब्रिसा हेनेसी जब सेमीफाइनल मैच में प्रतिस्पर्धा कर रहे थे तभी वहां व्हेल पहुंच गई। वह हालांकि खिलाड़ियो से सुरक्षित दूरी पर थी और इसलिए प्रतियोगिता जारी रही। लेकिन दर्शकों और फोटोग्राफरों की निगाहें खिलाड़ियो से हटकर व्हेल पर टिक गई और उन्होंने इस अद्भुत दृश्य को अपने कैमरों में कैद किया।

डुप्लांटिस ने नौवीं बार पोल वॉल्ट में विश्व रिकॉर्ड बनाया

सेंट डेनिस (फ्रांस)। स्वीडन के आर्मंड डुप्लांटिस ने अपना करिश्माई प्रदर्शन जारी रखते हुए पोल वॉल्ट में नौवी बार रिकॉर्ड बनाकर पेरिस ओलंपिक खेलो मे स्वर्ण पदक जीता।एथलेटिक्स में जब दिन की प्रतियोगिताएं समाप्त होने के कगार पर थी तब डुप्लांटिस ने स्टेड डी फ्रांस मे 80,000 दर्शकों के सामने 6.025 मीटर की कूद लगाकर अपना ही विश्व रिकॉर्ड तोड़ा। ओलंपिक खेलो मे उन्होने पहली बार यह कारनामा किया।लुइसियाना मे जन्मे 24 वर्षीय डुप्लांटिस अपनी मां के मूल देश स्वीडन के लिए प्रतिस्पर्धा करते है। स्वीडन के राजा और रानी भी डुप्लांटिस की इस उपलब्धि के गवाह बने। लगातार दूसरा स्वर्ण पदक जीतकर और एक सेंटीमीटर के अंतर से नौवी बार रिकॉर्ड तोड़कर डुप्लांटिस अब इस स्पर्धा के सबसे महान खिलाड़ी सर्गेई बुबका के करीब पहुंच गए है।

नौकायन में नेत्रा क्वालीफाई करने में असफल रहीं

पेरिस। भारत की महिला नौकायन खिलाड़ी नेत्रा कुमानन सोमवार को यहां पेरिस ओलंपिक मे व्यक्तिगत डिंगी स्पर्धा मे नौवी क्वालीफाइंग रेस के बाद 21वें स्थान पर रहने के बाद पदक दौर से बाहर हो गई। क्वालीफाइंग चरण मे 10 रेस होती है जिसके बाद पदकरेस की सूची तय की जाती है लेकिन 10वी रेस खराब मौसम के कारण रद्द कर दी गई।सभी क्वालीफाइंग रेस के बाद समय के मामले मे केवल शीर्ष 10 ही पदक दौर मे पहुंचते है। नेत्रा आठवी क्वालीफाइंग रेस के बाद 24वे स्थान पर थी।

दिनेश कार्तिक पार्ल रॉयल्स से जुड़े

नई दिल्ली। पूर्व विकेटकीपर बल्लेबाज दिनेश कार्तिक को मंगलवार को पार्ल रॉयल्स ने एसए20 के तीसरे सत्र के लिए अनुबंधित किया जिससे वह अगले साल नौ जनवरी से शुरू होने वाली दक्षिण अफ्रीकी टी20 क्रिकेट लीग से जुड़ने वाले पहले भारतीय क्रिकेटर बन गए। कार्तिक ने इस साल जून मे क्रिकेट के सभी प्रारूपों से संन्यास ले लिया था और उन्हे आईपीएल टीम रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरू ने मेंटर (मार्गदर्शक) सह बल्लेबाजी कोच के रूप मे नियुक्त किया है।

विनेश फोगाट भारत की शेरनी है: बजरंग

भाषा। नई दिल्ली

तोक्यो ओलंपिक के कांस्य पदक विजेता पहलवान बजरंग पूनिया ने पेरिस ओलंपिक में अपने शुरुआती दो जीत के साथ सेमीफाइनल में जगह पक्की करने वाली पहलवान विनेश फोगाट को मंगलवार को भारत की शेरनी करार दिया। विनेश ने मंगलवार को महिलाओं के 50 किग्रा वर्ग के शुरुआती मुकाबले में मौजूदा चैंपियन जापान की युई सुसाकी और अपने से उंची रैंकिंग वाली यूक्रेनी ओक्साना लिवाच को हराकर सेमीफाइनल में जगह बनाई। बजरंग ने एक्स पर लिखा, विनेश फोगाट भारत की वो शेरनी जिसने आज लगातार दो मैचों में जीत दर्ज की। उन्होंने चार बार की विश्व चैम्पियन और मौजूदा ओलंपिक चैम्पियन को हराया। उसके बाद क्वार्टरफाइनल में पूर्व विश्व चैम्पियन (कांस्य पदक विजेता) को हराया। बजरंग, विनेश और पूर्व ओलंपिक पदक विजेता साक्षी मलिक भारतीय कुश्ती महासंघ के पूर्व प्रमुख बृजभूषण शरण सिंह द्वारा महिला पहलवानों के कथित यौन उत्पीड़न के खिलाफ पिछले साल की शुरुआत में दिल्ली में लंबे धरने का नेतृत्व किया था।बजरंग ने लिखा, मगर एक बात बताऊं ए लड़की अपने देश में लातों से कुचली गई थी, ए लड़की अपने देश में सड़कों पर घसीटी गई थी। ए लड़की दुनिया जीतने वाली है मगर इस देश में सिस्टम से हार गई थी। विनेश ने क्वार्टर फाइनल में पूर्व यूरोपीय चैंपियन और 2018 विश्व चैंपियनशिप की कांस्य पदक विजेता लिवाच को 7-5 से हराया बजरंग ने इसके बाद एक अन्य पोस्ट में लिखा, विनेश की जीत पर समझ नहीं पा रहा हूं कि कैसी प्रतिक्रिया दूं। पता नहीं चल पा रहा है कि हम खुश हो रहे हैं या रो रहे हैं। सारा भारत ही इस पदक की राह देख रहा है। हर किसी की आंखें नम हैं। ऐसा लग रहा है जैसे विनेश अकेली नहीं बल्कि सारे देश की सभी महिलाएं लड़ रही हों। उन्होंने लिखा, विनेश, आप सच में ही रिकॉर्ड कायम करने के लिए पैदा हुई हैं। इतनी मुश्किलें झेलने के बाद भी आप लक्ष्य पर आंख गड़ाए बैठी हो। हमारी यही दुआ है कि बस यह सोना भारत आए। विनेश अंतिम चार मुकाबले में आज रात में क्यूबा की युस्नेलिस गुजमैन लोपेज का सामना करेंगी। इस मुकाबले में जीत से उनका रजत पदक पक्का हो जाएगा। जबकि हार के बाद उन्हें कांस्य पदक का प्लेऑफ खेलना होगा।

मैने विनेश की टीम से कहा था कि दमदार बचाव और जवाबी हमलों पर फोकस रखें : महावीर

नई दिल्ली। दो बड़े उलटफेर करके पेरिस ओलंपिक सेमीफाइनल में जगह बनाने वाली विनेश फोगाट के चाचा और जाने माने कोच महावीर फोगाट ने कहा कि उन्होंने उसे रणनीति को लेकर सलाह दी थी। द्रोणाचार्य पुरस्कार प्राप्त फोगाट ने पीटीआई वीडियो से कहा , जापान की लड़की (युइ सुसाकी) बहुत अच्छी पहलवान है जो मैट पर किसी से नही हारी। मैने कहा था कि यह मुकाबला जीतने वाला स्वर्ण का दावेदार होगा और विनेश ने अपनी दृढता और जज्बे से इसे जीत लिया। उन्होंने कहा , विनेश ने अच्छा बचाव और आक्रमण किया। उसे डेंजर जोन में लाकर चित किया। मैने उसके साथ वहां गए हरविंदर से कहा था कि जापानी प्रतिद्वंद्वी की पैर पर हमला करने की रणनीति पर ध्यान देना ताकि बचाव अच्छा हो सके। उसने यही किया। उन्होंने कहा , पिछले ओलंपिक में भी उसे पदक की उम्मीद थी और इस बार वह निराश नही करेगी।

किरण पहल का ओलंपिक महिला 400 मीटर दौड़ में सफर खत्म

पेरिस। पेरिस, पांच अगस्त (भाषा) भारत की किरण पहल मंगलवार को पेरिस ओलंपिक में महिलाओं की 400 मीटर दौड़ के रेपेचेज चरण में अपनी हीट में छठे स्थान पर रहने के बाद फाइनल से बाहर हो गई।सोमवार को अपना 24वां जन्मदिन बनाने वाली किरण ने अपनी हीट में 52.59 सेकेंड के समय के साथ छह खिलाड़ियों में आखिरी पायदान पर रही। वह कुल 26 खिलाड़ियों में 23वें स्थान पर रही रेपेचेज दौर की चार हीट में प्रत्एक में शीर्ष स्थान हासिल करने वाले खिलाड़ियों के अलावा सर्वश्रेष्ठ समय निकालने वाली दो अन्य ने सेमीफाइनल के लिए क्वालीफाई किया। किरण ने जून में राष्ट्रीय अंतर-राज्य चैंपियनशिप में अपना व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ 50.92 सेकंड का समय निकालकर पेरिस ओलंपिक के लिए सीधे क्वालीफाई किया था।वह ओलंपिक मे हालांकि इस प्रदर्शन को दोहराने में विफल रही। इससे पहले सोमवार को वह 52.51 सेकेंड के समय के साथ अपनी हीट में सातवें पायदान पर थी।

भारतीय पुरुष टेबल टेनिस टीम चीन से हारकर ओलंपिक से बाहर

भाषा। पेरिस

भारतीय टीम मंगलवार को यहां पेरिस ओलंपिक खेलों की पुरुष टेबल टेनिस टीम स्पर्धा के प्री क्वार्टर फाइनल में शीर्ष वरीय चीन के खिलाफ एकतरफा मुकाबले में हार के साथ प्रतियोगिता से बाहर हो गई। भारत की 14वीं वरीय टीम के पास कई बार के ओलंपिक चैंपियन चीन का कोई जवाब नहीं था जिसने मुकाबला 3-0 से जीता। भारत की ओर से सिर्फ अनुभवी अचंता शरत कमल ही एक गेम जीतने में सफल रहे जबकि टीम ने बाकी दो मैच सीधे गेम में गंवाए। भारत के लिए मुकाबले की शुरुआत हरमीत देसाई और मानव ठक्कर की दुनिया की 42वें नंबर की जोड़ी ने की जिसे बेहद एकतरफा मुकाबले में मा लोंग और वैंग चुकिन की चीन की दुनिया की नंबर एक जोड़ी के खिलाफ सीधे गेम में 0-3 (2-11, 3-11, 7-11) से शिकस्त का सामना करना पड़ा।शरत कमल ने दुनिया के दूसरे नंबर के खिलाड़ी फेन झेनडोंग के खिलाफ पहला गेम जीता लेकिन चीन के खिलाड़ी ने अगले तीन गेम जीतकर मुकाबला 3-। (9-11, 11-7, 11-7, 11-5) से अपने नाम किया और चीन को 2-0 की बढ़त दिला दी।

यशदीप व अंशुल को लखनऊ की पुरुष व महिला नेटबॉल टीम की कमान

गाजियाबाद में होगी द्वितीय यूपी स्टेट फास्ट 5 नेटबॉल चैंपियनशिप

लखनऊ। गाजियाबाद में होने वाली द्वितीय यूपी स्टेट फास्ट 5 नेटबॉल चैंपियनशिप में लखनऊ की टीम भी प्रतिभाग करेगी। इस चैंपियनशिप के लिए चयनित लखनऊ की पुरुष टीम के कप्तान यशदीप शर्मा व महिला टीम की कप्तान अंशुल यादव बनाए गए हैं। लखनऊ की चयनित टीम को उत्तर प्रदेश ओलंपिक संघ के महासचिव डा.आनन्देश्वर पाण्डेय ने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए शुभकामनाएं दी। जिला नेटबॉल संघ, लखनऊ के सचिव मोहम्मद तौहीद ने बताया कि द्वितीय यूपी स्टेट फास्ट 5 नेटबॉल चैंपियनशिप गाजियाबाद के बाल ज्योति पब्लिक स्कूल में 9 से 11 अगस्तए 2024 तक आयोजित होगी। लखनऊ की चयनित टीम-पुरुष रू यशदीप शर्मा कप्तान, निखिल कुमार सिंह राणा, राहुल यादव,कुणाल राजपूत,अरविंद कुमार, राहुल दास, सुधांशु अस्थाना, सूरज, प्रतीक कश्यप, सचिन चौधरी, कोच-अक्षय कुमार सिंह, मैनेजर- सचिन बिकास गुप्ता। महिला अंशुल यादव कप्तान,वर्तिका पाण्डेय, अंकिता यादव, शुभी त्रिवेदी, साक्षी यादव, सृष्टि यादव, कृषिका,खुशबू सिंह,उन्नति, कोच- कशिश साजिद खान, मैनेजर अमित कुशवाहा।

अवध स्ट्राइकर ने 7 विकेट से जीता मुकाबला

लखनऊ। मैन ऑफद मैच अभय उपाध्याय 79 व फुजैल 40 की सलामी जोड़ी की दमदार पारियों से अवध स्ट्राइकर ने पांचवीं श्रीपाल सिंह स्मारक टी20 नाइट क्रिकेट टूर्नामेंट में डीएसएस क्लब को 7 विकेट से हराकर पूरे अंक जुटाए। पार्थ रिपब्लिक ग्राउंड पर डीएसएस क्लब ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित ओवर में 6 विकेट पर 160 रन का स्कोर बनाया। सलामी बल्लेबाज अब्दुल्लाह जमाली ने 35 रन की पारी खेली। सन्नी मेहरोत्रा 55 रन, 42 गेंद, 3 चौके, 2 छक्के ने अर्धशतक जड़ा। निचले क्रम में शरीफने 27 रन बनाए। अवध स्ट्राइकर से नीरज उपाध्याय को दो विकेट मिले। जवाब में अवध स्ट्राइकर ने 19.3 ओवर में 3 विकेट पर जीत के लिए जरुरी 161 रन बना लिए। अभय उपाध्याय 79 रन, ने पहले विकेट के लिए 125 रन जोड़कर टीम की जीत की नींव रखी। वहीं विनोद ने नाबाद 15 रन का योगदान किया।

भारत पर श्रीलंका से 27 साल बाद श्रृंखला गंवाने का दबाव

स्पिनरों पर हावी होना होगा टीम इंडिया को

भाषा। कोलंबो

पहले दो मैच में बल्लेबाजों के निराशाजनक प्रदर्शन से आहत भारतीय क्रिकेट टीम को अगर श्रीलंका से 27 साल बाद श्रृंखला गंवाने से बचना है तो उसको बुधवार को यहां होने वाले तीसरे और अंतिम एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच में स्पिनरों पर हावी होकर खेलना होगा।गौतम गंभीर की मुख्य कोच के रूप में यह पहली वनडे श्रृंखला है और वह निश्चित तौर पर हार के साथ शुरुआत नहीं करना चाहेंगे।भारत को श्रीलंका के खिलाफ आखरी बार वनडे श्रृंखला में हार का सामना 1997 में करना पड़ा था। अर्जुन रणतुंगा की अगुवाई वाली टीम ने तब सचिन तेंदुलकर की भारतीय टीम को तीनों मैच में हराया था।भारत और श्रीलंका के बीच तब से 11 वनडे श्रृंखलाएं हो चुकी है और इन सभी में भारतीय टीम विजई रही।भारत वर्तमान श्रृंखला को नहीं जीत पाएगा क्योंकि पहला मैच टाई छूटने के बाद दूसरे मैच में उसे 32 रन से हार का सामना करना पड़ा था। अब उसकी निगाह श्रृंखला बराबर करने पर टिकी हैं।भारत बल्लेबाजों के लचर प्रदर्शन के कारण इस स्थिति में पहुंचा है। आर प्रेमदासा स्टेडियम की पिच से स्पिनरों को काफी मदद मिल रही है और कप्तान रोहित शर्मा को छोड़कर भारत का कोई भी अन्य बल्लेबाज श्रीलंका के स्पिनरों का डटकर सामना नहीं कर पाया है। स्टार बल्लेबाज विराट कोहली अभी तक दो मैच में 38 रन ही बना पाए हैं। उन्होंने आसानी से अपना विकेट गंवाया है जो टीम के लिए चिंता का विषय है। कोहली इस मैच में उसकी भरपाई करने की पूरी कोशिश करेंगे।

क्विक न्यूज

मीराबाई चानू की नजर पेरिस में ऐतिहासिक पदक पर

पेरिस। तोक्यो ओलंपिक मे रजत पदक जीतकर कर्णम मल्लेश्वरी से आगे निकलने वाली मीराबाई चानू पिछले कुछ समय में चोटों से जूझने के बावजूद बुधवार को यहां पेरिस ओलंपिक खेलो मे पोडियम पर पहुंचकर दो ओलंपिक पदक जीतने वाली भारत की पहली भारोत्तोलक बनने का प्रयास करेंगी।मीराबाई ने पिछले ओलंपिक खेलो के पहले दिन ही पदक जीतकर भारत का खाता खोला था और काफी सुर्खियां बटोरी थी लेकिन इसके बाद वह चोटों से परेशान रही जिसके कारण पेरिस ओलंपिक के लिए अच्छी तरह से तैयारी नही कर पाई।तोक्यो ओलंपिक के बाद उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन राष्ट्रमंडल खेल 2022 में रहा जहां उन्होंने 201 किग्रा (88 किग्रा और 113 किग्रा) उठाया। उन्होंने तोक्यो में 202 किग्रा (87 किग्रा और 115 किग्रा) वजन उठाकर रजत पदक जीता था।मीराबाई अपने पसंदीदा 49 किग्रा भार वर्ग मे चुनौती पेश करेगी और अगर वह अपने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन को दोहराने में सफल रहती है तो फिर रजत या कांस्य पदक जीत सकती है।

तोक्यो में चूकने के बाद अदिति की नजरें पदक पर, दीक्षा की दावेदारी भी मजबूत

पेरिस। तोक्यो ओलंपिक में बेहद करीब पहुंचकर पदक से चूकने के बाद अदिति अशोक बुधवार से यहां शुरू हो रही पेरिस खेलों की महिला गोल्फ स्पर्धा में पदक जीतने के लिए प्रतिबद्ध होंगी जबकि दीक्षा डागर भी कार दुर्घटना से उबरकर चुनौती पेश करने के लिए तैयार है।दो बार की ओलंपियन अदिति तोक्यो में तीन साल पहले पदक जीतने के बेहद करीब पहुंची थी लेकिन अंततः चौथे स्थान पर रही और इस बार इसकी भरपाई करने के लिए प्रतिबद्ध है।दूसरी ओर दीक्षा कार दुर्घटना मे बाल-बाल बच गई। उनकी मां को हालांकि चोटिल होने के कारण अस्पताल में भर्ती होना पड़ा। झज्जर की इस 23 वर्षीय खिलाड़ी ने हालांकि सभी समस्याओं को दरकिनार कर दिया है और ओलंपिक मे सफलता के लिए तैयार है। प्रतियोगिता मे हिस्सा ले रही 60 में से 15 खिलाड़ी 2016 में गोल्फ की ओलंपिक मे वापसी के बाद से सभी खेलो का हिस्सा रही है और अदिति उनमे से एक है। दीक्षा दूसरी बार ओलंपिक मे शिरकत कर रही है।

हार्नर कॉलेज के खिलाड़ियों को किया गया सम्मानित

लखनऊ। हाल ही में हुई 20वी जिला इंटरस्कूल ताइक्वांडो चैंपियनशिप की विजेता हार्नर कॉलेज की टीम को मंगलवार को महानगर मार्ग स्थित स्कूल परिसर में सम्मानित किया गया।इस अवसर पर हार्नर कॉलेज की प्रिंसिपल डा.माला मेहरा ने पदक विजेताओं को सम्मानित करते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। इस अवसर पर हॉर्नर कॉलेज के ताइक्वांडो इंस्ट्रक्टर रजा हुसैन एवं पीटीआई आशीष चौबे भी मौजूद थे।क्हार्नर कॉलेज के पदक विजेता इस प्रकार हैं-स्वर्ण -जारिया अहसन फातिमा, उर्वशी सिंह, एलिजा अहसन फातिम, रिमझिम, इरम वारसी, यशस्वी पांडेय, खुशी चौधरी,अणर्व आनंद सिंह, ओमांश जयसवाल, प्रिंस अनमोल रजक, अविरल गुप्ता, सुभांष शर्मा, दीपक कश्यप,आशीष रोका, सक्षम गुप्ता, दिव्यांश चौधरी। रजत-अनन्या सिंह, गौरी श्रेष्ठ, उदिता सिंह,श्वेता सिंह,साक्षी वशिष्ठ, साबिन नेपाल, नैतिक चौहान, अनुरोध सिंह। कांस्य- शिवेंद्र शुक्ला।

विद्यालयी शतरंज में चमके खिलाड़ी

लखनऊ। जनपदीय माध्यमिक विद्यालयी शतरंज प्रतियोगिता 2024' का आयोजन क्वींस एएसइ कॉलेज के प्रांगण में किया गया। प्रतियोगिता के मुख्य अतिथि अमरजीत सिंह पूर्व प्रवक्ता हरिचंद इ. कॉलेज ने छात्रों को उत्तम प्रदर्शन के लिए अग्रिम शुभकामनाएं दी। यह प्रतियोगिता अंडर - 14, 17 एवं 19 आयु वर्ग में बालकध्बालिका के लिए आयोजित की गई। उक्त प्रतियोगिता में कुल 20 विद्यालयों से 80 खिलाड़ियों ने प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। अंडर 14 वर्ष बालक वर्ग में आदित्य सिंह जनता इ कॉलेज प्रथम, रितेश कश्यप ;क्वींस इ कॉलेज द्वितीय, प्रांजल विमला इंटरनेशनल कॉलेज तृतीय स्थान ए ऋषभ विमला इंटरनेशनल कॉलेज ने चतुर्थ स्थान प्राप्त किया। अंडर 14 वर्ष बालिका वर्ग में अर्चना क्वींस इ. कॉलेज प्रथम तहसीम ;क्वींस इ कॉलेज द्वितीय स्थान प्राप्त किया। अंडर 17 वर्ष बालक वर्ग में हरिओम त्रिपाठी डीएवीइ कॉलेज प्रथम, तोयखा,राजकीय इ कॉलेज सिटी स्टेशन ने द्वितीय स्थान, यश कुमार गौतम बाबू त्रिलोकी सिंह इ कॉलेज काकोरीद्व तृतीय स्थानए किसलय मिश्रा जनता इ कॉलेजद्व चतुर्थ स्थान प्रात किया। सभी विजेता खिलाड़ियों को मुख्य अतिथि अमरजीत सिंह ने मेडल पहनाकर सम्मानित किया गया एवं प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त खिलाड़ियों को मंडल स्तरीय प्रतियोगिता के लिए शुभकामनाएं दी।

बहादुरी पर बनाई नयी फिल्म

मेरठ। टाटा कंज्यूमर प्रोडक्ट्स का प्रमुख टी ब्रांड टाटा टी प्रीमियम ने अपनी हाइपरलोकल रणनीति के तहत उत्तर प्रदेश के लिए एक नयी फिल्म लॉन्च की है। देश की चाय, अपने प्रदेश का स्वाद् टाटा टी प्रीमियम की इस ब्रांड प्रस्तुति को उत्तर प्रदेश के लोगों की खास विशेषताए यहां के लोगों की बहादुरी को सम्मानित करने वाली कहानी में बहुत हीदमदार् तरीके से पेश किया गया है। टाटा कंज्यूमर प्रोडक्ट्स के पैकेज्ड बेवरेजेस के प्रेसिडेंट पुनीत दास ने कहा कि टाटा टी प्रीमियम ने आधे दशक पहले अपने हाइपर.लोकल दृष्टिकोण की शुरूआत की। राष्ट्रीय स्तर पर अपना स्थान कायम रखते हुए हमने अपनी क्षेत्रीय निपुणता का लाभ उठाते हुएए हर राज्य की विशेषताए खास पसंद को समझा है। हमारी नयी टीवीसी में हर क्षेत्र की सांस्कृतिक विशेषता और चाय की पसंद को दर्शाते हुए इन दोनों को उस क्षेत्र के लिए हमारी ब्रांड प्रस्तुति में एकसाथ लाया गया है। इसीलिए यह फ़िल्में हमारे ग्राहकों के दिलों में क्षेत्रीय अभिमान जगाती हैं। उत्तर प्रदेश की फिल्म में एक स्थानीय दबंग की हिरोपंती के साथ जुड़े हुए मानवीय स्पर्श की कहानी है।

खुद जवाबदेही से बचने के लिए दूसरों को दोषी नही बना सकतेः पोनप्पा ने पादुकोण की आलोचना पर कहा

नई दिल्ली। पेरिस ओलंपिक के बैडमिंटन कांस्य पदक मुकाबले मे लक्ष्य सेन की चौकाने वाली हार के बाद खिलाड़ियों के प्रयासो की महान खिलाड़ी प्रकाश पादुकोण द्वारा आलोचना ने बैडमिंटन बिरादरी को विभाजित कर दिया है। युगल खिलाड़ी अश्विनी पोनप्पा ने कहा कि उनकी टिप्पणियां खुद की जवाबदेही से बचने के लिए दूसरो पर दोष मढ़ने जैसा है। महिला युगल में अपनी जोड़ीदार तनीषा क्रास्टो के साथ ओलंपिक के ग्रुप चरण से बाहर होने वाली पोनप्पा, पादुकोण की टिप्पणियो से सहमत नही है। उन्होने इंस्टाग्राम स्टोरी मे लिखा, यह देखकर निराशा हुई। अगर कोई खिलाड़ी जीतता है, तो हर कोई श्रेय लेने के लिए तैयार रहता है।

चैंपियन्स ट्रॉफी से पहले जवाब ढूंढने का बड़ा मौकाः सुंदर

कोलंबो। भारतीय ऑलराउंडर वाशिंगटन सुंदर का मानना है कि श्रीलंका के खिलाफ करो या मरो का तीसरा और अंतिम एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैच चुनौतीपूर्ण हालात मे स्पिन के खतरे से निपटने का बड़ा मौका देगा और अगले साल होने वाली चैंपियन्स ट्रॉफी से पहले टीम के लिए महत्वपूर्ण होगा। ल्लेबाजो के लचर प्रदर्शन के कारण दूसरा मैच 32 रन से हारने के बाद भारतीय टीम पर श्रीलंका के खिलाफ 27 साल मे पहली द्विपक्षीय एकदिवसीय श्रृंखला गंवाने का खतरा मंडरा रहा है। भारतीय बल्लेबाजो को श्रीलंका के स्पिनरो ने काफी परेशान किया है।

सीएमवाईके प्रिंटेक के लिए तथा उसी की ओर से मुद्रक एवं प्रकाशक शोबोरी गाँगुली द्वारा टिन टिन प्रिंटेक प्रा.लि. सी-33 अमौसी इंडस्ट्रियल एरिया, नादरगंज लखनऊ से मुद्रित एवं चौथी मंजिल, सहारा शापिंग सेंटर, फैजाबाद रोड, लखनऊ (फोनः 0522-4036600) से प्रकाशित। प्रधान सम्पादकः शोबोरी गाँगुली, स्थानीय सम्पादकः विजय प्रकाश सिंह।
पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार के किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले पूरी तरह उसके बारे में दिए गए दावों, शर्तों और तथ्यों की जांच कर लें। पायनियर ग्रुप के मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक या उसका कोई भी कर्मचारी विज्ञापनदाता द्वारा उनके किसी उत्पाद तथा सेवा हेतु किए गए किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन या उत्तरदायित्व नहीं लेता है। ऐसे विज्ञापनों के बाद किसी आर्थिक क्षति के लिए वे जिम्मेदार नहीं हैं।